बाइबल से नेतृत्व के सबक

मेरे उदाहरण का अनुसरण करो, जैसा कि मैं मसीह के उदाहरण पर चलता हूं।

1 कुरिन्थियों 11:1

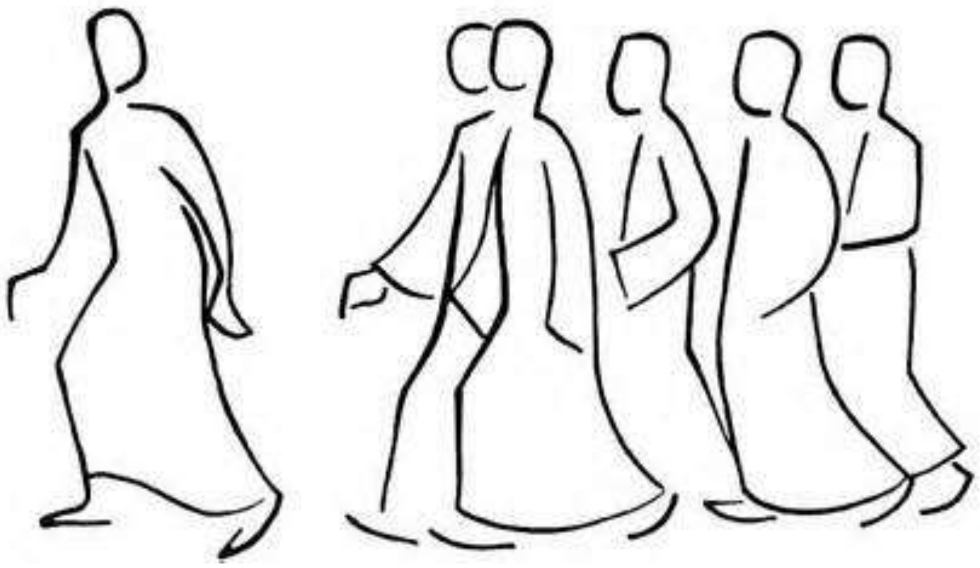

रेव. डॉ. जेरी श्मोयेर

© 2017

लेखक की जीवनी

रेव डॉ. जेरी श्मोयर डलास थियोलॉजिकल सेमिनरी से स्नातक हैं, जहां उन्होंने 1975 में मास्टर डिग्री और 2006 में डॉक्टर्स की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने 1981 से डोयलेस्टाउन, पीए में मेन स्ट्रीट बैपटिस्ट चर्च में पादरी के रूप में काम कीया है। वह 6 बच्चों के पिता और 12 पोते-पोतियों के दादा/नाना है । उनकी शादी नैन्सी से हुई है, जो 34 साल से एक नर्स हैं। एक चर्च की पासबानी करने के अलावा वह विवाह, परिवार और युवा सम्मेलनों का नेतृत्व करता है, परामर्श में बहुत सक्रिय है और युवा पादरियों के लिए परामर्शदाता है। वे 2006 से भारत में पादरियों की सेवकाई में शामिल हैं। उसके साथ jerry@schmoyer.net पर संपर्क कीया जा सकता है।

<u>वचन का प्रचार करें</u>

प्रस्तावना

1. एक अगुवा क्या है

2. यूसुफ से नेतृत्व के सबक

एक ईश्वरीय अगुवा अपनी परिस्थितियों से ऊपर निकलता है

एक ईश्वरीय अगुवे के पास जीवन में एक परमेश्वर-प्रदत्त उद्देश्य होता है

एक ईश्वरीय अगुवा बाधाओं के बावजूद दृढ़ रहता है

एक ईश्वरीय अगुवे का आंतरिक चरित्र होता है

एक ईश्वरीय अगुवा जहाँ कहीं भी कर सके, सेवा करता है

एक ईश्वरीय अगुवे के पास समझ और बुद्धि होती है

एक ईश्वरीय अगुवा दूसरों से प्रेम करता है और क्षमा कर देता है

एक ईश्वरीय अगुवा परमेश्वर द्वारा आशीषित कीया जाता है और उपयोग कीया जाता है

3. मूसा से नेतृत्व के सबक

एक ईश्वरीय अगुवा अपने जीवन और सेवकाई के लिए परमेश्वर की योजना का अनुसरण करता है

एक ईश्वरीय अगुवा विनम्र होता है

एक ईश्वरीय अगुवा दूसरों की सेवा करता है, विशेषकर अपने परिवार की

एक ईश्वरीय अगुवे को आलोचनायों पर नियंत्रण में रखना चाहिए

एक ईश्वरीय अगुवा खराई से काम करता है

एक ईश्वरीय अगुवा परमेश्वर के साथ अकेले समय बिताता है

एक ईश्वरीय अगुवा दृढ़ रहता है

एक ईश्वरीय अगुवे के घनिष्ठ मित्र होते हैं

4. यहोशू से नेतृत्व के सबक

एक ईश्वरीय अगुवा जानता है कि वह कभी अकेला नहीं होता

एक ईश्वरीय अगुवा समझता है कि वह प्रभारी नहीं है

एक ईश्वरीय अगुवा परमेश्वर को याद रखता है और उसका कार्य पवित्र होता है

एक ईश्वरीय अगुवा मन में रखता है कि विजय परमेश्वर की ओर से होती है

5. दाउद से नेतृत्व के सबक

एक ईश्वरीय अगुवे में चुनौतियों का सामना करने का साहस होता है

एक ईश्वरीय अगुवे में धैर्य, दृढ़ता होती है

एक ईश्वरीय अगुवा विनम्र होता है

एक ईश्वरीय अगुवे की ईश्वर में गहरी आस्था होती है

एक ईश्वरीय अगुवा ईश्वर का आज्ञाकारी होता है

एक ईश्वरीय अगुवा पाप करने पर पछताता है

एक ईश्वरीय अगुवा एक बलिदानी पति और पिता होता है

एक ईश्वरीय अगुवे के पास दूसरों को प्रशिक्षित करने की दूरद्रष्टि होती है

6. नहेमायाह से नेतृत्व के सबक

एक ईश्वरीय अगुवा प्रार्थना करता है

एक ईश्वरीय अगुवा धैर्य और योजना वाला व्यक्ति होता है

एक ईश्वरीय अगुवा सतर्क रहता है

एक ईश्वरीय अगुवा जानता है कि कब कार्य करना है

एक ईश्वरीय अगुवा प्रतिनिधितव करता है

एक ईश्वरीय अगुवा को विरोध का सामना करना पड़ेगा

एक ईश्वरीय अगुवा साहसी होता है

एक ईश्वरीय अगुवा में सत्यनिष्ठा और नम्रता होती है

एक ईश्वरीय अगुवा अपने लिए परमेश्वर के उद्देश्य पर अपनी नज़र रखता है

एक ईश्वरीय अगुवा एक टीम खिलाड़ी होता है

एक ईश्वरीय अगुवा उन के साथ जो पाप में है, दृढ़ रहता है

7. यीशु से नेतृत्व के सबक

एक ईश्वरीय अगुवा परमेश्वर की बुलाहट का उत्तर देता है

एक ईश्वरीय अगुवा खुद को सेवा के लिए तैयार करता है

एक ईश्वरीय अगुवा के पास एक मजबूत भक्तिपूर्ण जीवन होना चाहिए

एक ईश्वरीय अगुवा दूसरों को चेला बनने की चुनौती देता है

एक ईश्वरीय अगुवा दूसरों को तालीम देता है

एक ईश्वरीय अगुवा आराम करने के लिए समय लेता है

एक ईश्वरीय अगुवा को एक सेवक होना/बनना अन्वारिया है

8. पतरस से नेतृत्व के सबक

एक ईश्वरीय अगुवा को एक ईश्वरीय पत्नी की आवश्यकता होती है

एक ईश्वरीय अगुवा ईश्वर को अपना विश्वास फ़ैलाने देता है

एक ईश्वरीय अगुवा परमेश्वर को विशेष तरीकों से कार्य करते देखता है

एक ईश्वरीय अगुवा विनम्र होता है

एक ईश्वरीय अगुवा पवित्र आत्मा से भरा होता है

एक ईश्वरीय अगुवा ज़रूरत के मुताबिक सेवा करता है

एक ईश्वरीय अगुवा परमेश्वर के वचन का प्रचार करता है

एक ईश्वरीय अगुवा को अस्वीकृति और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है

एक ईश्वरीय अगुवा अपने पाप से सीखता है

एक ईश्वरीय अगुवा मृत्यु में विश्वासयोग्य होता है

9. पौलूस से नेतृत्व के सबक

एक ईश्वरीय अगुवा पर भरोसा कीया जा सकता है

एक ईश्वरीय अगुवा अगुवाई करने की पहल करता है

एक ईश्वरीय अगुवा कठिन समय में बलवान होता है

एक ईश्वरीय अगुवा दूसरों को प्रोत्साहित करता है

एक ईश्वरीय अगुवा पाप के विरुद्ध खड़ा होता है

एक ईश्वरीय अगुवा एक अच्छा उदाहरण पेश करता है

एक ईश्वरीय अगुवा सेवकाई के लिए हर अवसर का उपयोग करता है

10. महिलाओं से नेतृत्व के सबक

एक ईश्वरीय महिला अगुवा शैतान द्वारा धोखा खा सकती है (हव्वा)

एक ईश्वरीय महिला अगुवा स्वेच्छा से दूसरों को प्रदान करती है (रिबका)

एक ईश्वरीय महिला अगुवा पाखंड का सामना करती है (तामार)

एक ईश्वरीय महिला अगुवा असहायों की रक्षा करती है (मरियम)

एक ईश्वरीय महिला अगुवा अपने अनुयायियों को प्रोत्साहित करती है (दबोरा)

एक ईश्वरीय महिला अगुवा में साहस होता है (एस्तेर)

एक ईश्वरीय महिला अगुवा अपने दोस्तों के प्रति वफादार होती है (रूथ)

एक ईश्वरीय महिला अगुवा कभी इतनी व्यस्त नहीं होती हिया की वह महत्वपूर्ण काम ना करे (मार्था)

एक ईश्वरीय महिला अगुवा प्यार से सुधारती है

11. इस पुस्तक के लेखक से नेतृत्व के सबक

एक ईश्वरीय अगुवा जानता है कि परमेश्वर को उसकी आवश्यकता नहीं है लेकिन उसे परमेश्वर की आवश्यकता है

एक ईश्वरीय अगुवा जानता है कि जितना अधिक वह बढ़ता है उतना ही उसे बढ़ने की आवश्यकता होती है

एक ईश्वरीय अगुवे के पास अपने नंबर 1 लक्ष्य के रूप में परमेश्वर के साथ घनिष्ठता होती है

एक ईश्वरीय अगुवा जानता है कि हम अपने उपहारों के उपयोग से अपने मूल्य का मूल्यांकन नहीं कर सकते

एक ईश्वरीय अगुवे जानता है कि विनम्रता स्वाभाविक रूप से कभी नहीं आती

एक ईश्वरीय अगुवा जानता है कि उसकी पत्नी माणिकों से भी अधिक मूल्यवान है

एक ईश्वरीय अगुवा हमेशा याद रखता है कि उसका परिवार ही उसका पहला सेवकाई स्थान है

एक ईश्वरीय अगुवा जानता है कि बाइबल हर साल बेहतर होती जाती है

एक ईश्वरीय अगुवा जानता है कि शैतान वास्तविक में है लेकिन परमेश्वर महान है

12. 1 तीमुथियुस 3 और तीतुस 1 से नेतृत्व के सबक

एक ईश्वरीय अगुवे को एक ईश्वरीय अगुवा बनना चाहिए

एक ईश्वरीय अगुवा में आंतरिक ईश्वरीय गुण होते हैं

एक ईश्वरीय अगुवा के पास ईश्वरीय पारस्परिक संबंध होते हैं

एक ईश्वरीय अगुवे का ईश्वरीय आध्यात्मिक जीवन होता है

एक ईश्वरीय अगुवे का एक ईश्वरीय पारिवारिक जीवन होता है

एक ईश्वरीय अगुवा में ईश्वरीय व्यक्तिगत आदतें होती हैं

निष्कर्ष

प्रस्तावना

मैंने नेतृत्व के बारे में एक किताब क्यों लिखी है ? क्या कोई किताब पढ़कर एक बेहतर अगुवा बनना सीख सकता है? नेतृत्व के बारे में पहले से लिखी गई अन्य कई पुस्तकों के बारे में क्या कहा जाता है ? मैंने यह पुस्तक इसलिए लिखी है क्योंकि पादरियों और कलीसिया के अगुवों के लिए एक ईश्वरीय अगुवा होना बहुत महत्वपूर्ण है। फिर भी एक बेहतर अगुवा कैसे बनना है, इस बारे में व्यावहारिक, बाइबल संबंधी जानकारी प्राप्त करना अक्सर कठिन होता है।

एक पादरी या कलीसिया के अगुवा को अपने अन्य कौशल का उपयोग करने में सक्षम होने के लिए नेतृत्व आवश्यक है। एक इंजील के प्रचारक को अच्छे नेतृत्व की आवश्यकता होती है ताकि लोग उसे सुन सकें और फिर बाद में उससे संपर्क कर सकें। एक पादरी को नेतृत्व की आवश्यकता होती है ताकि लोग उस पर विश्वास करें और जो वह कहता और करता है उसका पालन करें। हर बार जब दो या दो से अधिक व्यक्ति कुछ करते हैं, तो उनमें से एक को एक अगुवा होने की आवश्यकता होती है, और जितना बेहतर कोई अगुवा होता हैं, उतना ही बेहतर परिणाम किये गए कार्य का होता है।

ईश्वरीय नेतृत्व कौशल व्यक्ति के चरित्र और अखंडता को प्रकट करता है। यह दिखाता है कि वह व्यक्ति कौन है, उसके अंदर का असली व्यक्तिव । इससे अगुवा में विश्वास पैदा होता है। ईश्वरीय नेतृत्व ना केवल जो हम हैं वह है , बल्कि जो हम करते हैं - हमारे बाहरी शब्द और कार्य, भी इसमें शामिल है । हमारे घर, व्यवसाय या कलीसिया में एक प्रभावी अगुवा होने के लिए दोनों की आवश्यकता है।

इस पुस्तक में हम बाइबल के उन लोगों के जीवन को देखते हुए जो अगुवे थे, दोनों पहलुओं को शामिल करेंगे । हम व्यक्ति के चरित्र और व्यक्ति के कार्यों को भी देखेंगे। ये एक साथ मिलकर एक ऐसे प्रकार के गुणवत्तापूर्ण नेतृत्व का निर्माण करते हैं जो परमेश्वर हमसे चाहता है।

तो नेतृत्व पर एक और किताब क्यों? यह पुस्तक विभिन्न बाइबल में से लोगों के जीवन की आसानी से समझ में आने वाली व्याख्या है और उनसे नेतृत्व के सबक निकालती है। यह कोई किये जाने वाले कार्यों की सूची नहीं है, बल्कि व्यावहारिक सिद्धांत हैं जिन्हें हम में से प्रत्येक के द्वारा कई अलग-अलग तरीकों से लागू कीया जा सकता है। मेरी प्रार्थना है कि यह पुस्तक आपको जीवन में किसी भी भूमिका में एक बेहतर अगुवा बनने में मदद करेगी।

जैरी श्मोयर, 2017

1. एक अगुवा क्या होता है

कुछ मायनों में, लगभग हर कोई अगुवा है। नेतृत्व का मतलब किसी विशेष व्यक्तित्व प्रकार या एक निश्चित प्रतिभा वाला व्यक्ति नहीं है। सीधे शब्दों में कहें तो , एक अगुवा वह होता है जो किसी और को प्रभावित करता है। यह कथनी या करनी द्वारा कीया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को उनके कहने या करने से प्रभावित होने की अनुमति देता है, तो वह व्यक्ति एक अगुवा होता है। लगभग हर कोई अगुवा होता है क्योंकि ज्यादातर लोग किसी ना किसी तरह से किसी दुसरे को प्रभावित करते हैं। इसलिए यह मायने नहीं रखता कि आप अगुवा हैं या नहीं, बल्कि यह मायने रखता है कि आप किस प्रकार के अगुवा हैं।

यदि आप पति हैं, तो आप अपने परिवार में एक अगुवा हैं। यदि आप एक पत्नी हैं, तो आप अपने बच्चों की अगुवा हैं और संभवतः अन्य महिलाओं की भी। बड़े बच्चे छोटे बच्चों को प्रभावित करते हैं। छोटे बच्चे अपने दोस्तों को प्रभावित करते हैं। अविवाहित लोग दोस्तों और दूसरों को प्रभावित करते हैं। नेतृत्व एक ऐसी चीज है जो हम सभी करते हैं। यह हमें दिया गया कोई शीर्षक नहीं है, बल्कि एक भूमिका है जो हम आपने जीवन में भरते हैं।

अक्सर हम सोचते हैं कि एक अच्छा अगुवा बनने के लिए हमें एक मिलनसार, आगे चलने वाला व्यक्ति होना चाहिए जो सभी के बीच लोकप्रिय हो। यह सच नहीं है। मैं उस तरह का व्यक्ति नहीं हूं। मैं एक अगुवा से अलग एक शांत, शर्मीला और अधिक स्वाभाविक रूप से अनुयायी हूं। मुझे अपने परिवार और कलीसिया में एक ईश्वरीय अगुवा बनना सीखना था। परमेश्वर वर्षों से मुझमें यह विकसित करता आ रहा है। मैं अभी भी शांत और शर्मीला हूं, लेकिन मैंने यह सीख लिया है कि जिस व्यक्ति के रूप में परमेश्वर ने मुझे बनाया है, वह होते हुए मुझे अभी भी कैसे नेतृत्व करना है। मैंने अध्ययन कीया है कि एक अच्छा अगुवा होने का क्या अर्थ है, बहुत कुछ पढ़ा है और दूसरों को देखा है, कई वर्षों तक नेतृत्व के सिद्धांतों को पढ़ाया है, और लोगों के जीवन से अच्छे नेतृत्व गुणों को सीखने के लिए बाइबल में लोगों का अध्ययन कीया है। बाइबल से बेहतर कोई किताब नहीं है और अतीत में परमेश्वर के लोगों से बेहतर कोई मानक नहीं है जिनमें परमेश्वर कार्य करता रहा है। उनके उदाहरणों का अनुसरण करके, हम उस मार्ग पर चलेंगे जिस पर परमेश्वर चाहता है कि हम चलें।

भारत में हर साल मैं एक अलग बाइबल अगुवा के जीवन नाटकीय अंदाज़ में प्रकट करता हूं,उसकी रूप धारण करता हूँ पहनता है और बाइबल के उस व्यक्ति की कहानी बताता हूँ जैसे कि मैं वही हूँ । मैं उनके जीवन से नेतृत्व का सबक लेता हूं और इसे आज के अगुवाओं पर लागू करता हूं। मैंने भारत में पादरियों को शिक्षा सत्रों की अगुवाई की और उन्हें ईश्वरीय नेतृत्व पर इस पुस्तक में का अनुपालन कराया है। इन बाइबल के लोगों के पास कई प्रकार के व्यक्तित्व, कौशल, क्षमताएं और कमजोरियां हैं। उन्होंने क्या सही कीया और क्या गलत कीया, हम उनसे सीख सकते हैं । हर व्यक्ति अलग होता है और उनके नेतृत्व करने का तरीका भी अलग होता है। सभ के लिए कोई एक तरीका नहीं है। हम सब भी अलग हैं, और इसलिए हमारा नेतृत्व भी अलग होगा।

जब हम बाइबल के लोगों का अध्ययन करते हैं, तो हम सभी को कोई ऐसा व्यक्ति मिलता है जिसे हम दूसरों की तुलना में अधिक पहचान सकते हैं। मूसा मेरे लिए एक विशेष मदद रहा है और मेरे पसंदीदा लोगो में से एक है। मैंने उससे इस बारे में बहुत कुछ सीखा है कि एक अगुवा को क्या करना चाहिए (और क्या नहीं करना चाहिए)। आपको इनमें से कुछ ऐसे लोग भी मिलेंगे, जिनसे आप नजदीकी से आपने आप को पहचान भी सकते हैं। उनका बारीकी से अध्ययन करें और उनके जीवन से सीखें।

जब हम इन लोगों को देखते हैं, तो हम देखेंगे कि तीन तत्व हैं जो इरादतन , ईश्वरीय नेतृत्व की ओर जाते हैं।

सबसे पहले, एक अगुवा को पता होना चाहिए कि वह कहाँ जा रहा है। यदि आप जानते ही नहीं हैं कि आप किस लक्ष्य पर निशाना साध रहे हैं तो आप उसे कैसे मार सकते हैं? यदि मैं अपने जीवन में अपने लिए परमेश्वर के लक्ष्य को नहीं जानता, तो मैं इसे प्राप्त करने के लिए कैसे बढ़ सकता हूँ? यदि मैं नहीं जानता कि मेरी कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजनाएँ क्या हैं, तो मैं लोगों को उस दिशा में कैसे ले जा सकता हूँ? सेवकाई के शुरूआती समय में , मैंने सोचता था कि मुझे अपने चर्च को एक बड़ा चर्च बनाने की जरूरत है, लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। यह वह नहीं था जो परमेश्वर मेरी सेवकाई में होने देना चाहता था। मुझे परमेश्वर की आवाज़ सुनने को सीखना था, उसकी आत्मा के प्रति संवेदनशील होना था जो मुझे दिखा रहा था कि परमेश्वर मेरे जीवन में और मेरी कलीसिया में क्या हासिल करना चाहता है।

दूसरी बात , एक ईश्वरीय अगुवे को पता होना चाहिए कि जहां परमेश्वर चाहता है वहां कैसे पहुंचना है । लक्ष्य को जानना महत्वपूर्ण है, लेकिन फिर यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि वहां कैसे पहुंचा जाए। परमेश्वर चाहता था कि मेरा चर्च पीड़ित मासीहीयों को विकसत होने में मदद करने के लिए एक शिक्षण का अस्पताल बने । इसे पूरा करने के लिए, उसने लोगों को आध्यात्मिक रूप से विकसित करने में मदद करने के लिए मेरे शिक्षण, परामर्श और लोगों के साथ काम करने के उपहारों का उपयोग कीया। प्रत्येक अगुवे को यह जानने की जरूरत है कि परमेश्वर उससे क्या हासिल करना चाहता है और उसे इस काम को कैसे करना है।

तीसरी बात , जब हम जानते हैं कि हम कहाँ जा रहे हैं और वहाँ कैसे पहुँचना है , एक अच्छे अगुवा को यह जानना चाहिए कि दूसरों को अपने साथ कैसे ले जाना है। लोगों के साथ मिलकर काम करने में सक्षम होना बहुत जरूरी है। कुछ अगुवा जानते हैं कि वे कहाँ जा रहे हैं और वे वहाँ कैसे पहुचेंगे, लेकिन वे लोगों को उनका अनुसरण करने में सक्षम नहीं बनाते हैं क्योंकि वे घमंडी होते हैं, नियंत्रित करते हैं, और दूसरों को प्यार और सम्मान दिखाना नहीं जानते हैं। अन्य अगुवा स्वाभाविक रूप से लोगों को उनका अनुसरण करा सकते हैं क्योंकि उनके साथ रहना सुखद होता है और उनके आस-पास के लोगों को अच्छा महसूस होता है। वे मिलनसार होते हैं और चाहते हैं कि लोग उन्हें पसंद करें और लोकप्रियता पाने और अच्छी तरह से पसंद किए जाने के लिए उन्हें जो कुछ भी करना होता है वह करेंगे। लेकिन, वे नहीं जानते कि लोगों को उस स्थान तक कैसे ले जाया जाए जहां परमेश्वर उन्हें चाहता है। उनका व्यक्तित्व तो दूसरों को आकर्षित करता है लेकिन वे उन्हें मसीह में परिपक्वता की ओर नहीं ले जाते हैं।

एक ईश्वरीय अगुवे को अपने शब्दों, अपने उदाहरण और अपने चरित्र से भी दूसरों को प्रभावित करने में सक्षम होना चाहिए। मैं जानता हूं कि परमेश्वर कहाँ चाहता है कि मैं जाऊं और वहां कैसे पहुंचूं, लेकिन मुझे यह सुनिश्चित करना चाहिए कि मैं इसे उस तरह से करूं जैसा कि दूसरे लोग इसका अनुसरण करेंगे। मुझे उनसे संवाद करना चाहिए कि मुझे उनकी परवाह है और प्यार और करुणा से यह दिखाते हुए जो उनके लिए सबसे अच्छा है। लोग मेरा अनुसरण नहीं करते हैं क्योंकि मेरे पास एक प्यार करने वाला व्यक्तित्व है, क्योंकि मेरे पास वो है ही नहीं। लोग मेरा अनुसरण करते हैं क्योंकि वे मेरा सम्मान करते हैं, मुझ पर भरोसा करते हैं और जानते हैं कि मैं अतीत में वफादार और भरोसेमंद रहा हूं। सभी अगुवाओं को इसकी जरूरत है।

परमेश्वर ने आपको वह अगुवा बनने के लिए बनाया है जो वह चाहता है कि आप बनें - किसी अन्य अगुवा की तरह नहीं, बल्कि उन उपहारों और कौशलों का उपयोग करके जो उसने आपको दिए हैं। हम में से प्रत्येक अलग है, जैसा कि इस पुस्तक में प्रत्येक व्यक्ति एक दुसरे से अलग हैं। लेकिन हम

सभी अगुवे हैं जो लोगों को यीशु को जानने और आध्यात्मिक रूप से बढ़ने में मदद करना चाहते हैं। सभी के लिए कोई एक तरीका नहीं है, लेकिन इस पुस्तक में बाइबल अगुवाओं के जीवन के सिद्धांत हम में से प्रत्येक पर लागू किए जा सकते हैं। जैसे आप पढ़ते हैं, सुनें कि परमेश्वर क्या कहता है जो आप पर लागू होता है, इसे अपने जीवन/ व्यवहार में लाएं। इससे आपको एक बेहतरअगुवा बनने में मदद मिलेगी। यह एक आजीवन प्रक्रिया है। इस पुस्तक को लिखने का मेरा उद्देश्य यह है कि जैसे-जैसे आप एक ईश्वरीय अगुवे के रूप में विकसित होते जाएंगे, यह आपकी सहायता करेगी।

2. यूसुफ से नेतृत्व के सबक

पढ़ें उत्पत्ति 37 - 50

अक्सर हम सोचते हैं कि अगुवा वे लोग होते हैं जिनके दूसरों के समान संघर्ष नहीं होते। हमें लगता है कि वे किसी तरह जीवन की परीक्षाओं और चुनौतियों से ऊपर उठ गए हैं। ऐसा लगता है कि वे आध्यात्मिक रूप से आ गए हैं और परिपक्व हो गए हैं ताकि वे अब दूसरों का नेतृत्व कर सकें। परन्तु यह सच नहीं है। जीवन में हर किसी को कठिनाइयों और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें अगुवा भी शामिल होते हैं। वास्तव में, सबसे अच्छे अगुवाओं के जीवन में अक्सर सबसे कठिन समय होता है। दानिय्येल को उसके परिवार से ले लिया गया और बाबुल में बंधुआई में डाल दिया गया था । दाऊद को उसके भाइयों ने ठुकरा दिया और उसके पिता ने उसे भुला दिया जब शमूएल अगले राजा का अभिषेक करने आया था । यूसुफ की भी ज़िंदगी की शुरूआत बहुत कठिन थी। आइए उसके जीवन और ईश्वरीय नेतृत्व में से कुछ सबक देखें जो हम उससे सीख सकते हैं।

1-एक ईश्वरीय अगुवा अपनी परिस्थितियों से ऊपर निकल जाता है

यूसुफ़ के परिवार के इतिहास में कुछ भी ऐसा नहीं था जो इसकी भविष्यवाणी कर सकता कि वह एक अच्छा अगुवा बनेगा। उस के पिता के चार महिलायों से बच्चे थे जिनका आपसी मेलजोल अच्छा नहीं था। उस के 10 बड़े सौतेले भाई थे। क्योंकि उसके पिता उसकी माँ को दूसरों से अधिक प्यार करते थे, वह उसका लाडला पुत्र था और उन अधिकारों और सुविधाओं में लिप्त था जिन में अन्य नहीं थे। इससे उसके भाई उसके प्रति ईर्ष्यालु हो गए और कड़वाहट से भर गए । इस तरह की कठिन परवरिश एक व्यक्ति को जीवन के साथ तालमेल बिठाने में कई समस्याओं का कारण बन सकती है, लेकिन यूसुफ़ ने इससे ऊपर उठने और मजबूत होने का फैसला कीया। चुनौतियों ने उसे परिपक्व बनाया। उसके पास यह चुनने का विकल्प था कि उसने अपने जीवन में परिस्थितियों का कैसे प्रतिउतर दिया और उसने सबसे अच्छा व्यक्ति बनने के लिए उनसे ऊपर उठने का फैसला कीया।

आज हमारे पास भी चुनने के लिए विकल्प होते हैं। हमें यह चुनना होगा कि क्या हम ईश्वर के लिए जीने वाले हैं या स्वयं के लिए, कठिनाइयों के आगे हार मान लें और मैदान छोड़ दें या फिर चाहे कुछ भी हो आगे बढ़ें। बचपन में यूसुफ की तरह हमारा पारिवारिक जीवन कठिन रहा होगा। हम अपने लिए दुःख

महसूस करने के बहाने ढूंढ सकते हैं, यह तय कर सकते हैं कि जीवन उचित नहीं है, और उन लोगों से ईर्ष्या करने लग जाएँ जिनका जीवन हमारे जीवन से अधिक आसान लगता है। या फिर हम बढ़ने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर सकते हैं और वह व्यक्ति बन सकते हैं जो परमेश्वर ने हमें बनने के लिए बनाया है। यूसुफ ने उसी का चुनाव कीया और हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।

एक पादरी या कलीसिया का अगुवा होना एक चुनाव है जिसे हम चुनते हैं। परमेश्वर हमें सेवा करने के लिए मजबूर नहीं करता हैं, वह हमें यह तय करने का विकल्प देता है कि क्या हम जीवन की परेशानियों और परीक्षणों से ऊपर उठना चाहते हैं या उनके नीचे गिरना चाहते हैं ?। वह हमारे अन्दर सेवा करने की इच्छा देता है और अपने पवित्र आत्मा के माध्यम से हमें उपहार देता है, लेकिन यह हम पर निर्भर है कि जब वह बुलता है तो उसका अनुसरण करने का निर्णय लें। एक अगुवा होना आसान नहीं है। यदि हम अभिमान में या दूसरों का ध्यान पाने के लिए सेवा करते हैं, तो हम असफल हो जायेगें । अगर हम शैतान, शरीर और अन्य लोगों के हमलों से आपने सहस को टूटने देते हैं, तो हम आगे नहीं बढ़े पाएंगे । परन्तु, यदि हम परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए जीवन के साथ सर्वश्रेष्ठ करने का चुनाव करते हैं, तो हम, यूसुफ की तरह, ईश्वरीय विकल्प और प्रतिबद्धताएं बना रहे होंगे। यह इस पुस्तक का पहला पाठ है, और हमारे लिए भी पहला पाठ है। यदि हम परमेश्वर की सेवा करने के लिए स्वयं को समर्पित नहीं करते हैं, जिस क्षमता में भी वह चाहता है, तो शेष पुस्तक में नेतृत्व के लिए बाकी सलाह में से कोई भी हमारे लिए कुछ भी मायने नहीं रखेगा।

क्या आप अपने पूरे दिल और जीवन से परमेश्वर का अनुसरण करने और उसकी सेवा करने के लिए तैयार हैं, चाहे आपको अतीत में कितनी भी बाधाएं और कठिनाइयाँ झेलनी पड़ी हों और भविष्य में भी हों? चाहे कुछ भी हो जाए, क्या आप वफादार बने रहना चुनेंगे? क्या आप सिर्फ इसलिए सेवा कर रहे हैं क्योंकि आपको लोगो का आपकी तरफ ध्यान देना पसंद है जो आपको एक पादरी या अगुवा के रूप में मिलता है? एक ईश्वरीय अगुवा बनना आसान नहीं है, और पूर्ण प्रतिबद्धता के बिना कोई भी अंत तक ईमानदारी से सेवा नहीं करेगा।

2- एक ईश्वरीय अगुवे के पास जीवन में एक परमेश्वर-प्रदत्त उद्देश्य होता है

यूसुफ का अपने जीवन में जो कुछ भी गलत था, उससे ऊपर उठने का एक कारण यह था कि परमेश्वर ने उसे एक सपना दिया था जो उसे याद था और उस पर विश्वास करता था (उत्पत्ति 37:5-9)। वह जानता था कि यह परमेश्वर था जो उससे बात कर रहा था और उसे अपने परिवार का नेतृत्व करने के लिए बुला रहा था। उसने उस लक्ष्य पर अपनी निगाहें रखीं, यह जानते हुए कि परमेश्वर की उससे   यही चाहत है। उसने इसे अभिमान में या प्रथम स्थान पर आने के लिए नहीं करना चाहता था , बल्कि इसलिए कीया क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर चाहता है कि वह अपने जीवन के साथ ऐसा करे। जीवन में जितने भी उतार-चढ़ाव आए, उसने हमेशा याद रखा कि एक दिन परमेश्वर उसके परिवार को बचाने के लिए उसका इस्तेमाल करेगा । इसलिए चाहे कुछ भी हो, उसने अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना में आशा बनाए रखी। जब वह एक दास के रूप में बंधुआई में गया और फिर जब उसे जेल में डाल दिया गया, तो वह कभी नहीं भूला कि परमेश्वर के पास उसके जीवन के लिए एक योजना और उद्देश्य था।

परमेश्वर के पास आज भी हम में से प्रत्येक के लिए एक योजना और उद्देश्य है। वह हमारे दिलों में उसके लिए किसी मुकाम को हासिल करने की इच्छा रखता है, और यही हमारे दिल में मार्गदर्शक प्रकाश बन जाता है। यह प्रसिद्धि, लोकप्रियता, या एक बड़ी सेवकाई जैसा आत्म-केंद्रित कुछ भी नहीं है। ये चीजें

हमारे पास आ भी सकती हैं और नहीं भी। जो मायने रखता है वह है उस योजना और उद्देश्य को पूरा करना जो परमेश्वर ने आपके अंदर रखा है। जब मैं छोटा था, उसने मुझे दर्शन दिया कि मैं एक पादरी बनू और लोगों को उसके करीब आने में मदद करू। इसके बाद , उसने मेरे दिल में भारत में पादरियों की मदद करने की इच्छा पैदा की। रास्ते में कई बाधाएँ और समस्याएँ आई हैं, लेकिन मैं जानता हूँ कि परमेश्वर मुझसे यही चाहता है, इसलिए मैं आज्ञा मानने की पूरी कोशिश करता रहता हूँ।

आपके जीवन के लिए परमेश्वर की योजना और उद्देश्य क्या है? उसकी सेवा करने के लिए उसने आपके दिल में क्या इच्छा रखी है? वह आपको कौन सा लक्ष्य पूरा करना की चाहता रखता है? दूसरे शब्दों में, आप किस कारण से जीवित और पृथ्वी पर हैं?

3-एक ईश्वरीय अगुवा बाधाओं के बावजूद दृढ़ रहता है

हमने देखा है कि एक अगुवा को ईश्वरीय चुनाव करना चाहिए और अपने जीवन के लिए ईश्वर की योजना और उद्देश्य का पालन करना चाहिए। लेकिन, एक और समग्री है जिसे हमें इन दोनों में जोड़ना चाहिए, वो है दृढ़ता। परमेश्वर ने यूसुफ को दिखाया कि वह कठिन समय में अपने परिवार का नेतृत्व करने जा रहा है, लेकिन अगले 15 या 20 वर्षों तक ऐसा लगता था कि यह कभी नहीं होगा। उसके भाइयों ने उसे गड़हे में फेंक दिया, और फिर उसे दास के रूप में मिस्रियों के हाथ बेच दिया गया। इन सब के बावजूद वह वफादार रहा, लेकिन उसकी वफादारी के परिणामस्वरूप वह जेल में डाल दिया गया। ऐसा लग रहा था कि उसे पारमेश्वर ने और अन्य लोगों ने भुला दिया है। फिर भी, वह अपने दिल में वफादार रहा। उनके धैर्य बनाये रहा । वह दृढ़ रहा। परमेश्वर ने जो कहा था वह सच हुआ, और बाद में अपने जीवन में उसने अपने धैर्यवान धीरज का फल भोगा।

नेतृत्व धैर्य और दृढ़ता की मांग करता है। पौलुस ने तीमुथियुस को बने रहने और धीरज धरने के लिए कहा (1 तीमुथियुस 4:16; 2 तीमुथियुस 2:3)। यह उन सभी के लिए महत्वपूर्ण सलाह है जो एक ईश्वरीय अगुवा बनना चाहते हैं। परमेश्वर ने मुझे धैर्य और दृढ़ता सिखाने के लिए मेरे जीवन में परीक्षणों और कठिनाइयों का इस्तेमाल कीया। बचपन में मेरी पसंदीदा की कहानियों में से एक कछुए और एक खरगोश की कहानी है जिन्होंने एक दौड़ में भाग लिया था । खरगोश ने सोचा कि वह आसानी से जीत जाएगा क्योंकि वह बहुत तेज था और कछुआ धीरे-धीरे आगे बढ़ा। तो, खरगोश कुछ देर दौड़ा, फिर उसने खाया और आराम करने लगा । वह कुछ और दौड़ा, फिर झपकी ली। कछुआ बिना रुके धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहा, और जब खरगोश सो रहा था कछुआ वास्तव में दौड़ जीत गया । इससे यह सबक मिलता है कि हमें तेजी से आगे बढ़ने की जरूरत नहीं है, लेकिन हमें दृढ़ रहना चाहिए और आगे बढ़ते रहना चाहिए, चाहे कुछ भी हो जाए।

सभी ईश्वरीय अगुवों को दृढ़ रहना सीखना चाहिए जब हालत उनकी चाहत के अनुसार नहीं होते हैं। यह मत सोचो कि एक अगुवा के रूप में तुम्हारे साथ कुछ गलत है, या फिर यह कि परमेश्वर तुम्हारे साथ नहीं है। परमेश्वर इस तरह की चीजों का उपयोग हमें परिपक्व करने, हमारे विश्वास को बढ़ाने और हमें यीशु के समान बनाने के लिए करता है। शैतान यह चाहता है कि हम निराश हो जाएँ और साहस छोड़ दें। वह यूसुफ के साथ तो असफल रहा, लेकिन कई अन्य लोगों के साथ सफल हो हो गया । परमेश्वर इन चुनौतियों की अनुमति देता है क्योंकि वह हमें एक आसान जीवन देने के बजाय हमें यीशु की तरह बनाने के लिए अधिक चिंतित होता है।

क्या आप अब जीवन में किसी ऐसी चीज का सामना कर रहे हैं जो आपकी पसंद के अनुसार नहीं हो रही है? क्या आप धैर्यपूर्वक यीशु पर भरोसा कर रहे हैं और ईमानदारी से सेवा कर रहे हैं चाहे कुछ भी हो जाए? क्या आप आगे बढ़ते रहते हैं, भले ही धीरे-धीरे क्यों ना हो ? या क्या आपके पास परमेश्वर के प्रति महान विश्वास और निकटता का समय है और उसके बाद ऐसे समय आते हैं जब आप भटक जाते हैं और परमेश्वर के करीब नहीं होते हैं?

4-एक ईश्वरीय अगुवे का आंतरिक चरित्र होता है

बाइबल हमें बताती है कि यूसुफ "हष्ट-पुष्ट और सुन्दर" था (उत्पत्ति 39:6)। उसके पास बुद्धि भी थी और जो कुछ उसने पोतीपर के घर में कीया, उसमें परमेश्वर ने उसे सफल बनाया (उत्पत्ति 39:2)। तौ भी उसने इन वस्तुओं का उपयोग अपनी महिमा के लिए नहीं, परन्तु परमेश्वर की सेवा के लिए कीया। जब पोतीपर की पत्नी ने उसको प्रोलोबन दिया, तो यूसुफ बिना किसी के जाने पाप कर सका होता । उसने यह कह दिया होता कि परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया है तो अब वह परमेश्वर के प्रति वफादार क्यों रहे? वह पाप के लिए बहाने ढूंढ सकता था, लेकिन उसने ऐसा नहीं कीया क्योंकि उसके पास आंतरिक चरित्र था (उत्पत्ति 39:9)।

यह हमारे उपहारों और प्रतिभाओं के उपयोग करने पर भी लागू होता है। परमेश्वर हम सभी को सेवकाई के लिए उपयोग करने के लिए आध्यात्मिक उपहार देता है। वे एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होते हैं, लेकिन वे जो कुछ भी हैं, वह हमसे उम्मीद करता है कि हम उनका उपयोग उसकी सेवा करने के लिए करें ना कि अपने गर्व के लिए। कुछ पादरियों के लिए आत्म-केंद्रित होने का और परमेश्वर ने उनके माध्यम से जो कीया है उसका श्रेय लेने का एक वास्तविक प्रलोभन उनके सामने आ सकता है। दूसरे कुछ आलसी हो सकते हैं या पाप में लिप्त हो सकते हैं जब उन्हें लगता हो कि कोई नहीं देख रहा है। एक ईश्वरीय अगुवा वही करता है जो सही है, भले ही कोई भी ना देख रहा हो! यूसुफ ने सीखा कि एक लड़के के रूप में जब वह परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए ईश्वरीय चुनाव कर रहा था, चाहे उसके जीवन में कुछ भी क्यों नहीं रहा था । उसने तब भी यही कीया जब पोतीपर के दास के रूप में वह अपने दम पर था ।

यदि लोग आपको जैसा अकेले में देख सकते हैं, तो क्या वे तब भी देखेंगे कि आप उस व्यक्ति से भिन्न हैं, जब दूसरे लोग आप को देख रहे होते हैं? यदि लोग आपके विचारों को पढ़ सकें, तो क्या वे आपके मन में अधर्मी, पापी व अधर्मी बातें पाएंगे? क्या परमेश्वर कह सकेगा कि आपके पास आंतरिक चरित्र है, या यह कि आप एक पाखंडी हैं? आपके सामने आए किसी भी पाप का अंगीकार करें और परमेश्वर से एक ईश्वरीय जीवन जीने और आंतरिक चरित्र बनाये रखने में आपकी मदद करने के लिए प्रार्थना करें ।

5-एक ईश्वरीय अगुवा जहाँ कहीं भी कर सके, सेवा करता है

यूसुफ का निश्चित रूप से जीवन आसान नहीं था। वह अपने लिए अफ़सोस महसूस कर सकता था और जब उसे गुलाम बनाया गया तो उसने साहस छोड़ दिया होता, लेकिन उसने ऐसा नहीं कीया। वह पोतीपर का वफादार था और उसकी नौकरी अच्छी तरह से करता था। फिर, ईमानदारी से परमेश्वर का अनुसरण करने और पोतीपर की पत्नी के साथ पाप ना करने के बावजूद, उसने आपने आप को जेल में पाया और ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर ने भी उसे छोड़ दिया है। वह परमेश्वर से मुख मोड़ सकता था और

नाराज़ हो सकता था। लेकिन इसके बजाय, उसने जेल में भी, हर तरह से संभव मदद की। परमेश्वर की सेवा करने से पहले वह परमेश्वर द्वारा बाहर निकाले जाने की प्रतीक्षा में इधर-उधर नहीं बैठा; वह जहां भी था दूसरों की सेवा करता था। उन्होंने हर अवसर को अधिकतम बढ़ाया । परमेश्वर ने पोतीपर के घर को समृद्ध कीया था जब यूसुफ वहां था, फिर उस काम को आशीष दी जो उसने जेल में कीया।

जब हम ईमानदारी से उसकी सेवा करेंगे तो परमेश्वर हमारे काम को आशीष और समृद्धि देगा। हो सकता है कि हमें ज्यादा फल ना दिखें, लेकिन हम जो करते हैं परमेश्वर उसका इस्तेमाल करेगा । "यह आवश्यक है कि जिन पर भरोसा कीया गया है, वे विश्वासयोग्य साबित हों" (1 कुरिन्थियों 4:2-3)। हम जहां कहीं भी हैं, ईमानदारी से सेवा करने के लिए परमेश्वर हमें अज़र देता है। वह यह नहीं देखता कि हमारे पास कितने लोग या पैसा है, वह चाहता है कि हम विश्वासपूर्वक और दृढ़ रहें और जो हम कर सकते हैं वही करें जहाँ कहीं भी वह हमें रखता है ।

क्या आप परमेश्वर की सेवा करने में संतुष्ट हैं जहाँ वह आपको रखा है, या फिर क्या आप कुछ अधिक महत्वपूर्ण या आसान के लिए तरसते हैं? क्या आप, युसूफ की तरह, उन लोगों की तलाश करते हैं जिनकी आप मदद कर सकते हैं, भले ही वे कभी आपकी मदद ना कर सकें?

6-एक ईश्वरीय अगुवे के पास समझ और बुद्धि होती है

यूसुफ अपने जीवन की घटनाओं में और उनके पीछे परमेश्वर का हाथ देख सकता था, भले ही यह दूसरों के लिए स्पष्ट ना था । उसने महसूस कीया कि जो कुछ भी हुआ था, परमेश्वर ने उसे उस में से गुजरने की अनुमति दी थी ताकि वह अपने परिवार को अकाल से बचाने की हैसियत में आ सके (उत्पत्ति 45:5-8)। उसने महसूस कीया कि, यद्यपि वे उसे नुकसान पहुँचाने का इरादा रखते थे, परमेश्वर का इरादा यह था कि वह इसका उपयोग उनके लाभ के लिए करे। "तुम्हारा मतलब बुराई के लिए था, लेकिन परमेश्वर ने इसे अच्छे के लिए बनया था" (उत्पत्ति 50:20)। यूसुफ अपने आस-पास की घटनाओं को देखने और इसके पीछे परमेश्वर की योजना को देखने में सक्षम था। उसने अपने लिए परमेश्वर की योजना और उद्देश्य को याद कीया और उस पर विश्वास कीया। उसने हालातों को परमेश्वर के नजरिए से देखने की कोशिश की। इससे उसे बुद्धि मिली। हमें अगुओं के रूप में जीवन में उसके कार्यों में परमेश्वर के हाथ को समझने और उसका पता लगाने में सक्षम होना चाहिए। हमें परमेश्वर की बड़ी योजना को देखने में सक्षम होना चाहिए और उसके आधार पर, उचित चुनाव और निर्णय लेने के लिए बुद्धि और समझ का उपयोग करना चाहिए।

परमेश्वर आपकी और आपकी सेवकाई का उपयोग उसकी सेवा करने के लिए कैसे कर रहा है? क्या आप पीछे मुड़कर देख सकते हैं कि कैसे परमेश्वर ने आपका और आपकी सेवकाई का उपयोग कीया है? क्या आप अपने लिए उसके उद्देश्य को ध्यान में रखते हैं, या आप अपने सामने आने वाली कठिनाइयों और चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं? क्या आपको विश्वास है कि वह भविष्य में भी आपका उपयोग करता रहेगा?

7-एक ईश्वरीय अगुवा दूसरों से प्रेम करता है और क्षमा कर देता है

यूसुफ ने अपने भाइयों को उस सब के लिए जो उन्होंने उसके साथ कीया था, क्षमा कर दिया । इस से पहले कि वे दुबरा मिलते उसने यह कई साल पहले ही कर दिया था । वे क्षमा के हक़दार तो नहीं थे, उन्होंने क्षमा नहीं मांगी थी, और उसने नहीं दी। वास्तव में, जब वे उसके पास भोजन के लिए भीख मांगने आए तो उसने आपने आप को न्याय पाने और बदला लेने के लिए एकदम सही स्थान पर पाया। लेकिन उसे अपने परिवार और उनके भविष्य की परवाह थी। वह कठोर और कड़वा नहीं था, लेकिन संवेदनशील और दयालु था। वह कभी भी वह ईश्वरीय व्यक्ति नहीं होता जो वह था यदि उसने उन सभी वर्षों में अपने हृदय में क्षमाहीणता को रखा होता। वो सब जो उस ने कीया था कड़वाहट ने उसका जहर दे कर खतम कर दिया होता ।

आज अगुओं के रूप में हमारे बारे में भी यही सच है। हमारे पास ऊपर बताए गए नेतृत्व के सभी चिन्ह हो सकते हैं, लेकिन अगर हमारे पास करुणा और क्षमा नहीं है, तो बाकी कोई मायने नहीं रखता। 1 कुरिन्थियों 13 हमें बताता है कि यदि हमारे पास प्रेम नहीं है तो हमारे पास कुछ भी नहीं है, चाहे हम अगुवे के रूप में कुछ भी उत्पन्न करते हों । हमें दूसरों के प्रति दया भाव रखना चाहिए। हमें किसी भी तरह की चोट को माफ कर देना चाहिए जैसे ही वे होते हैं, भले ही वे माफी मांगें या ना मांगे । यीशु ने हमें बहुत पहले ही क्षमा कर दिया, इससे पहले कि हम उसका धन्यवाद कर सकें, या यहाँ तक कि क्षमा किए जाने की आपनी आवश्यकता को भी जान सकें। उसके जैसा बनने के लिए हमें भी क्षमा करने वाले लोग होना चाहिए। परमेश्वर इसकी आज्ञा देता है (इफिसियों 4:31-32; कुलुस्सियों 3:12-13; मत्ती 18:21-35; 6:14-15)।

क्या कोई ऐसा है जिसे आपने क्षमा नहीं कीया है, जिसका नाम क्षमा का विषय आते ही दिमाग में आता है? क्या आप दूसरों को क्षमा करने के लिए उतने ही तेज़ और संपूर्ण हैं जो और जितना कि आप चाहते हैं कि परमेश्वर बने जब परमेश्वर आपको क्षमा करे ? क्या आपमें दूसरों के प्रति प्रेम और करुणा है? यदि नहीं, तो परमेश्वर से अपने हृदय में उनके लिए प्रेम रखने के लिए कहें ताकि आप उन्हें वैसे ही देखें जैसे वह उन्हें देखता है।

8-एक ईश्वरीय अगुवा परमेश्वर द्वारा आशीषित कीया जाता है और उपयोग कीया जाता है

युसूफ सब कुछ में से गुजरने के बावजूद, अपने जीवन में परमेश्वर की आशीष को पहचाना। उसने अपने पहले पुत्र का नाम मनश्शे रखा क्योंकि इसका अर्थ था कि परमेश्वर ने उसे उसकी सारी विपत्तियों को भूल जाने के लिए सक्षम बनाया था (उत्पत्ति 41:51) और उसके दूसरे पुत्र का नाम इफ्रईम रखा क्योंकि परमेश्वर ने उसे फलदायी बनाया था (उत्पत्ति 41:52)। उसने परमेश्वर का अनुसरण करने और उसकी सेवा करने की कोशिश की, बावजूद इसके जब अक्सर ऐसा लगता था कि परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया था। परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने आपनी महिमा के लिए उसका उपयोग कीया। वह हमारा भी इस्तेमाल करेगा। हमें पूर्ण, शिक्षित या लोकप्रिय होने की आवश्यकता नहीं है। हमें वफादार रहना होगा।

उन कुछ तरीकों की सूची बनाएं जिनसे परमेश्वर ने आपका उपयोग कीया है और आपको आशीष दी है। क्या आप दूसरों को वह सब कुछ बताते हैं जो उसने आपके लिए कीया है? इनके लिए और भविष्य में भी वह जो करेगा, उनके लिए उसका धन्यवाद करते हुए समय व्यतीत करें।

हम ने यूसुफ के जीवन से देखा है कि एक ईश्वरीय अगुवा होने के लिए हमें यह अवश्य करना चाहिए:

1. परिस्थितियों से ऊपर उठना

2. जीवन में ईश्वर प्रदत्त उद्देश्य रखना

3. बाधाओं के बावजूद दृढ़ रहना

4. हमाराआंतरिक चरित्र होना

5. जहां भी वह कर सकते हैं वहां सेवा करना

6. समझ और बुद्धि रखना

7. दूसरों से प्यार करना और क्षमा करना

8. परमेश्वर के द्वारा आशीषित होना और उसके उपयोग में आना

क्या आपके पास ये हैं? वर्तमान में आपके जीवन में कौन-कौन से स्पष्ट हैं? आप में किस किस की कमी है? सुधार शुरू करने के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता है? इन बातों के बारे में प्रार्थना करें और परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपके जीवन में इनमें से प्रत्येक को प्राप्त करने में आपकी सहायता करे।

3. मूसा से नेतृत्व के सबक

पढ़िए निर्गमन 1 - 19; गिनती 12 - 14; प्रेरितों के काम 7:20-43; इब्रानियों 11:23-29

मूसा बाइबल और यहूदी इतिहास में अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक है। बाइबल में वह मेरा पसंदीदा

व्यक्ति है। मैं उसके साथ आपनी पहचान उसके संघर्षों और कमजोरियों में करता हूं, और उसका उन पर विजय प्राप्त करने से मैं सीखता है। बाइबल में कई किताबें उसके लंबे और फलदायक जीवन के बारे में बताती हैं। वह 120 वर्ष जीवित रहा । पहले 40 वर्ष तक वह ऐसे रहा जैसे वह कुछ था, फिर अगले 40 वर्ष तक वह ऐसे रहा जैसे वह कुछ भी नहीं था। पिछले 40 वर्षों के दौरान उसने सीखा कि परमेश्वर किसी भी ऐसे व्यक्ति के साथ क्या कुछ कर सकता है जो परमेश्वर को अपनी महिमा के लिए आपना उपयोग करने देता है। मूसा विश्वास, आज्ञाकारिता और भरोसे वाला व्यक्ति था। वह वचन और प्रार्थना का व्यक्ति था । उसके जीवन में बड़ी असफलताएँ आईं, लेकिन वह परमेश्वर की कृपा से आगे बढ़ता रहा । मूसा एक अगुवा नहीं बनना चाहता था, लेकिन जब उसने जाना कि परमेश्वर उससे यही चाहता है तो वह तैयार हो गया। वह निश्चित रूप से समपूर्ण नहीं था, लेकिन उसने वह बनने की कोशिश की जो परमेश्वर ने उसे बनाया था। हम उसके जीवन से कुछ महत्वपूर्ण सबक सीख सकते हैं।

1-एक ईश्वरीय अगुवा अपने जीवन और सेवकाई के लिए परमेश्वर की योजना का अनुसरण करता है

परमेश्वर के पास हमेशा एक योजना होती है। यहूदियों के लिए उसकी योजना थी कि वे मिस्र से निकलकर वादे की भूमि में आ जाएँ (निर्गमन 3:7-8; 23:31)। परमेश्वर के पास मूसा के लिए भी एक योजना थी - कि वह उन्हें मिस्र से वादा किए गए देश में ले जाए (प्रेरितों के काम 7:35-35)। मूसा ने परमेश्वर की योजना को लोगों तक पहुँचाया, जो खुद भी चाहते थे कि ऐसा हो (निर्गमन 6:6-8)। मूसा ने लोगों के लिए अपनी योजना नहीं बनाई, ना ही उसने उन्हें अन्य राष्ट्रों की तरह बनाने की कोशिश की। उसका लक्ष्य उनके लिए परमेश्वर की योजना को पालन करना था।

परमेश्वर के पास हम में से प्रत्येक के लिए भी एक योजना है। यह प्राथमिक महत्वता की बात है कि हम इसे जाने और इसका पालन करें । कुछ अगुवा अपनी स्वयं की योजना के साथ आते हैं और परमेश्वर से इसे आशीश देने और इसे सफल करने के लिए कहते हैं। यह शायद ही कभी सफल होता है । इसके बजाय, हमें उसकी आवाज़ को अपने भीतर बोलते हुए सुनना चाहिए, जो हमारे और हमारे जीवन और सेवकाई के लिए उसकी योजना को प्रकट करती हो । कभी-कभी परमेश्वर हमारे दिलों में एक इच्छा या बोझ डालता है हमें यह दिखाने के तरीके के रूप में कि वह हमसे क्या चाहता है कि हम करें । कभी कभी यह कुछ प्रमुख हो सकता है जिसके लिए हमारे पूरे ध्यान की आवश्यकता होगी, और कभी कभी कुछ इतना छोटा और सरल जिसे पूरा करने में अधिक समय नहीं लगता है। दूसरी बार वह हमें कदम उठाने के लिए खुले दरवाजे जैसे अवसर भेजता है।

अध्याय 1 में हमने एक अगुवा के बारे में बात की थी जो जानता है कि वह कहां जा रहा है, वहां कैसे पहुंचा जाए और दूसरों को अपने साथ कैसे ले जाया जाए। मूसा जानता था कि वह कहाँ जा रहा है - परमेश्वर ने उसे लोगों को वादा किए हुए देश में ले जाने के लिए कहा था । परमेश्वर उन्हें वहां पहुंचने का रास्ता दिखाएगा। मूसा ने अपने जीवन के अंतिम 40 वर्ष लोगों को वहाँ ले जाने की कोशिश में बिताए।

क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर आपके जीवन और सेवकाई में आपको कहाँ ले जा रहा है? उसने आपके व्यक्तिगत विकास और परिपक्वता में आपके लिए क्या लक्ष्य निर्धारित किए हैं? वह आप को आपकी सेवकाई को कहाँ ले जाने के लिए चाहता है ? वह क्या चाहता है कि आप अपने परिवार के माध्यम से पूरा करें? यदि आप नहीं जानते हैं तो प्रार्थना करें, परमेश्वर कीआवाज़ सुनें, उसके वचन पर मनन करें, और जो वह कहता है उसका पालन करें। अपनी खुद की योजना ना बनाएं और फिर परमेश्वर से उसे आशीश देने के लिए कहें, यह पता लगाएं कि आपके लिए परमेश्वर की क्या योजनाएं हैं और उनका पालन करें।

2-एक ईश्वरीय अगुवा विनम्र होता है

कुछ पुरुष इस लिए अगुवा बनना चाहते हैं ताकि लोग उन्हें पसंद करें और उनसे प्रभावित हों। यह अक्सर इसलिए ऐसा होता है क्योंकि वे अस्वीकृति या असफलता से डरते हैं। उन्हें लगता है कि उनके एक अगुवा होने से दूसरों को लगेगा कि वे महत्वपूर्ण हैं। ऐसे पुरुष हैं जो नेतृत्व नहीं करना चाहते क्योंकि वे नेतृत्व के साथ आने वाले संघर्षों और कठिनाइयों से डरते हैं। वे असफलता और अस्वीकृति से भी डरते हैं। इन दोनों ही मामलों में इन भावनाओं के पीछे उनका अभिमान होता है। अभिमान का मतलब यह नहीं है कि हम सोचते हैं कि हम दूसरों से बेहतर हैं, अभिमान यह भी यह सोच सकता है कि

हम दूसरों की तरह अच्छे नहीं हैं। दोनों ही मामलों में व्यक्ति आत्मकेंद्रित होता है, किसी और चीज से पहले अपने बारे में सोचता है। यही इस अभिमान को जन्म देता है।

मैंने असफलता और अस्वीकृति के डर के साथ संघर्ष कीया है, और कभी-कभी इसने मुझे एक अच्छा नेता बनने से रोक दिया क्योंकि मैं जो सही है उसे करने से अधिक इस बारे में अधिक चिंतित होता था कि दूसरे क्या सोचते थे। मूसा का भी यही संघर्ष था। वह अगुवा नहीं बनना चाहता था। उसने परमेश्वर के सामने अगुवा ना बन सकने के लिए पांच बहाने बनाए (निर्गमन 4)। उसे डर था कि वह असफल हो जाएगा, या लोग उसका अनुसरण नहीं करेंगे, या कुछ गलत हो जाएगा। यही अभिमान है क्योंकि यह परमेश्वर के बजाय अपने बारे में सोचना होता है । फिर भी परमेश्वर ने मूसा के साथ धैर्यपूर्वक काम करते हुए दिखाया कि परमेश्वर उसके साथ रहेगा, उसकी मदद करेगा, और यह कि वह एक अच्छा अगुवा हो सकता है यदि वह बुद्धि और शक्ति के लिए परमेश्वर पर निर्भर करता है। मूसा ने नम्र होना सीखा, और बाइबल हमें बताती है कि वह बहुत विनम्र था, किसी और से भी अधिक विनम्र (गिनती 12:3)।

मूसा ने नम्र होना कैसे सीखा? परमेश्वर ने उसके जीवन में दर्दनाक संघर्षों का इस्तेमाल उसे यह सिखाने के लिए कीया ताकि वह खुद पर नहीं बल्कि परमेश्वर पर निर्भर रहे । उसने खुद के बजाय परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करके अपने डर पर विजय प्राप्त करना सीखा। हम एक ही समय में परमेश्वर में विश्वास और दूसरों से भय की भावना नहीं रख सकते हैं; एक तो दूसरे को बाहर धकेल ही देगा। मूसा ने परमेश्वर में अपने विश्वास को बढ़ाना सीखा, इसलिए यह उसके लिए दूसरों से भय के ऊपर उठ गया।

परमेश्वर से पूछें कि क्या आप में कोई आत्म-केंद्रितता है जो आपको उस पर भरोसा करने और उसका अनुसरण करने से रोकती है। क्या आप इस बात से डरते हैं कि असफलता या अस्वीकृति के बारे में दूसरे क्या सोचेंगे या क्या कहेंगे ? क्या यह आपको अगुवा के रूप में अपनी भूमिका का उपयोग करने के लिए दूसरों से मान्यता या पुष्टि प्राप्त करने के लिए एक तरीके के रूप में इसे उपयोग करने को प्रेरित करता है? आप मूसा की तरह और भी नम्र कैसे बन सकते हैं?

3-एक ईश्वरीय अगुवा दूसरों की सेवा करता है, विशेषकर अपने परिवार की

यीशु सेवा करने आया था, सेवा कराने के लिए नहीं (मत्ती 20:28; मरकुस 10:45)। उसने चेलों के पैर धोए (यूहन्ना 13)। एक ईश्वरीय अगुवा दूसरों से सेवा कराने की उम्मीद करने के बजाय दूसरों की सेवा करता है। मूसा ने फिरौन बनने और आपनी सेवा करने के बजाय परमेश्वर और उसके लोगों की सेवा करना चुना (इब्रानियों 11:24-26)। पादरियों के रूप में हम चरवाहे और सेवक हैं (1 पतरस 5:4-5)। चरवाहों को भेड़ों के लिए बलिदान करना पड़ता है जैसे यीशु ने हमारे लिए कीया था (यूहन्ना 10:11)। मूसा ने यह चुनाव तब कीया जब उसने यहूदियों की सेवा करने का वचन दिया।

हालाँकि, जब अपने परिवार की सेवा करने की बात आती है तो उसने हमेशा यह विकल्प नहीं चुना। अगुवों को चाहिए कि वे अपने परिवारों को उनकी सेवकाई के पहले रखें (1 तीमुथियुस 3:5)। दुर्भाग्य से मूसा के पारिवारिक जीवन की कहानी अच्छी नहीं है। शायद वह एक चरवाहे की तरह घर से बहुत दूर चला गया था। पादरीगण उनके परिवारों से दूर जा सकते है क्योंकि वे परमेश्वर के लोगों की चरवाही करते हैं। क्योंकि उसने अपने दूसरे बेटे का खतना नहीं कीया था, जब उसे करना चाहिए था, परमेश्वर ने मूसा की जान लेने की धमकी दी। उसकी पत्नी को उसकी जान बचाने के लिए खतना करने के लिए मजबूर कीया गया था लेकिन फिर उसके बेटों को ले लिया और उसे छोड़ दिया। वे फिर कभी नहीं मिले

(निर्गमन 4:24-26)। अगुओं के रूप में हमें लोगों की सेवा करनी चाहिए, लेकिन इसका मतलब सबसे पहले अपनी पत्नियों और परिवारों की सेवा करना है।

एक ईश्वरीय अगुवा होने का अर्थ उन लोगों की सेवा करना होता है जो हमारे पीछे चलते हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम वह सब कुछ करें हैं जो वे चाहते हैं। हम उनके लिए सर्वश्रेष्ठ काम करके उनकी सेवा करते हैं। एक माता-पिता अपने बच्चों की सेवा वह करके करते है जो उनके लिए सबसे अच्छा होता है, ना कि वह सब कुछ करके जो बच्चा उनसे कराना चाहता है। माता-पिता अपने बच्चों को अपने लिए कुछ करना सिखाते हैं। ऐसा ही एक ईश्वरीय अगुवा भी करता है।

मूसा वह सब कुछ करने की कोशिश में इतना व्यस्त हो गया जिसकी लोगों को जरूरत थी वह वास्तव में महत्वपूर्ण काम करने में सक्षम नहीं था, इसलिए उसे काम में मदद करने के लिए दूसरों को प्रशिक्षित करना सीखना पड़ा (निर्गमन 18:14-17)। परमेश्वर ने मूसा को कोम का नेतृत्व करने में मदद करने के लिए दूसरों को उसे दे दिया (गिनती 11:16-17)। जब वह मर गया तो उसने यहोशू को अपने अधिकार लेने के लिए प्रशिक्षित कीया। यीशु ने अपने शिष्यों को उसी तरह प्रशिक्षित कीया। पौलुस ने तीमुथियुस, तीतुस और सीलास को सेवा करने का प्रशिक्षण देकर उनकी सेवा की। हमें भी वही काम करना है।

आप के बारे लोग क्या कहेंगें कि आप एक ऐसे अगुवा हैं जो लोगों की सेवा करते हैं, या जो दूसरों से आपनी सेवा कराने की उम्मीद करते हैं? क्या आपका परिवार आपको किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में देखता है जो उन्हें परिवार से बाहर के लोगों की जरूरतों से पहले रखता है? क्या आप अपनी सेवकाई में लोगों के लिए सबसे अच्छा काम करके उनकी सेवा करते हैं, या क्या आप वही करते हैं जो उन्हें खुश रखने के लिए करना होता है? क्या आप अपनी सेवकाई को जारी रखने के लिए

4-एक ईश्वरीय अगुवे को आलोचनायों पर नियंत्रण में रखना चाहिए

मूसा एक अच्छा, विश्वासयोग्य अगुवा था जिसका उपयोग परमेश्वर के द्वारा कीया गया था, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि नेतृत्व आसान या सहज था। यहूदियों का नेतृत्व करना उतार-चढ़ाव से भरा हुआ था। कभी-कभी लोग उससे प्रेम करते थे और उसके पीछे हो लेते थे, कभी-कभी वे अपनी सारी समस्याओं के लिए उस पर दोष देते थे और उसे मार डालना चाहते और मिस्र वापस जाना चाहते थे (निर्गमन 14:11-12; 32:1; 7:9; गिनती 12:1,8; 16:1,3)। यीशु के बारे में भी यही सच था। वह भी हर कोई पसंद नहीं करता था , और उसने यह कहा कि हमारे साथ भी ऐसा ही होगा (लूका 6:26)।

बाइबल कहती है कि जब हमारी आलोचना की जाती है, और हमारी आलोचना होती है, तो हमें चुप रहना चाहिए और सुनना चाहिए (यूहन्ना 19:9; नीतिवचन 17:27-28)। आत्मरक्षा में प्रतिक्रिया करने से पहले सोचें कि क्या कहा गया है (नीतिवचन 15:28; याकूब 1:19-20)। बोले गए शब्दों से जानें कि आप कितना अच्छा कर सकते हैं और जवाब देने से पहले ध्यान से सोचें (नीतिवचन 15:1; 16:21; 25:15)। जब आप जवाब दें, तो प्यार और नम्रता से जबाब दें । यदि अन्य लोग आपकी बात को स्वीकार नहीं करते हैं, तो बहस ना करें। परमेश्वर को अपने समय में उनके हृदयों को बदलने दें। अपने आप को नम्र करें और यदि आवश्यक हो तो क्षमा माँगने के लिए तत्पर रहें (1 शमूएल 15:24, 30; 25:28)। केवल शान्ति बनाए रखने के लिए हार मत मानो, परन्तु लड़ाई में भी मत पड़ो (इफिसियों 4:31; नीतिवचन 17:14)। अपना बचाव ना करें। बस सुनें, विचार करें कि क्या मददगार है, जो आप बेहतर कर सकते थे, उसके लिए माफी मांगें, अपनी भावनाओं के खिलाफ हुई चोट के लिए उन्हें माफ कर दें और शांति से चले जाएं। उन कौशलों को सीखने और अभ्यास करने के लिए सबसे अच्छी जगह अपने साथी और परिवार के साथ घर पर है।

जब आपकी आलोचना की जाती है तो आप कैसे प्रतिक्रिया देते हैं? क्या आपका साथी बेझिझक आपको सुझाव दे सकता है? आलोचना से बेहतर सीखने के लिए आप क्या कर सकते हैं? क्या आप हालातों में अपनी हिस्सेदरी के लिए माफी मांगते हैं या दूसरे व्यक्ति को दोष देने के कारण ढूंढते हैं? क्या आप उन लोगों को क्षमा करने के लिए तत्पर हैं जिन्होंने आपनी बातों से आपको ठेस पहुँचाई है?

5-एक ईश्वरीय अगुवा खराई से काम करता है

एक धर्मी अगुवे के लिए यह महत्वपूर्ण है कि उसकी प्रतिष्ठा अच्छी हो और वह दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करता है, इस पर उसकी निन्दा ना हो (1 तीमुथियुस 3:1-7)। वह शुद्धता , ईमानदारी और निष्पक्षता का व्यक्ति होना चाहिए। अच्छा चरित्र प्रशिक्षण या कौशल से अधिक महत्वपूर्ण है। मूसा भक्ति और खराई का आदमी था, लेकिन वह सिद्ध नहीं था। उसके क्रोध की समस्या ने उसे वादे के देश में प्रवेश करने से रोक दिया (गिनती 20:12)। पहले उसने क्रोध में एक मिस्री को मार डाला था, यहूदियों को पाप करते हुए देखकर दस आज्ञाओं वाली पत्थर की पटियाओं को तोड़ दिया था, और लोगों से क्रोधित होने पर उससे बात करने के बजाय दो बार चट्टान पर प्रहार कीया था।

आत्म-संयम की कमी सभी मसीहीयों के लिए एक बड़ी समस्या हो सकती है, लेकिन नेतृत्व की स्थिति में रहने वालों के लिए यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। हमें हमेशा सम्मान और शुद्धता से कार्य करना चाहिए। क्रोधी व्यक्ति का कोई सम्मान नहीं करता। वे डर के मारे सहयोग कर सकते हैं, लेकिन सम्मान नहीं करते है। मैंने बहुत से पादरियों और अन्य अगुवों के बारे में सुना है जो क्रोध का उपयोग दूसरों से वह कराने के लिए करते हैं जो वे चाहते हैं। यह वह नहीं है जो यीशु करता , और वह वही है जिसके जैसा हमें बनना है।

आपको जानने वालों में आपकी किस तरह की प्रतिष्ठा है? लोग क्या कहते हैं जब वे आपके बारे में बात करते हैं? क्या लोग जानते हैं कि आप जो कहते हैं उसे करने के लिए वे आप पर भरोसा कर सकते हैं? क्या वे आप पर भरोसा करते हैं? तुम्हें अधर्म का क्रोध प्रकट करते हुए किसने देखा है? आपके पास अपने क्रोध को नियंत्रित करने का सबसे कठिन समय कब होता है? आत्म-नियंत्रण रखने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

6-एक ईश्वरीय अगुवा परमेश्वर के साथ अकेले समय बिताता है

मूसा में एक विशेषता जिसकी मैं सबसे अधिक प्रशंसा करता हूँ, वो है परमेश्वर के साथ अकेले समय बिताने की उसकी प्रतिबद्धता। वह परमेश्वर के साथ आमने सामने बात करता था (निर्गमन 33:7-11; 34:29-35; गिनती 12:5-8; 3:12-17)। उसने परमेश्वर को यह बताने में समय नहीं बिताया कि उसे क्या करने के लिए परमेश्वर की आवश्यकता है, ना ही उसने परमेश्वर को यह बताया कि वह क्या करना चाहता है और वह करने में परमेश्वर को मदद करने के लिए कहता है। परमेश्वर पहले से ही वह सब कुछ जानता था जो मूसा उससे कह सकता था। इसके बजाय, उसने वह सुना जो परमेश्वर उससे कहना चाहता था। परमेश्वर को हमसे जो कहना है वह उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है जो हमने परमेश्वर से कहना होता है, इसलिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि हम बात करने की तुलना परमेश्वर को सुनने में अधिक समय व्यतीत करते हैं। यह हर व्यक्तिगत रिश्ते की सचाई है।

इसमें समय लगता है कि हम परमेश्वर के साथ अकेले रह कर उसकी आत्मा को सुनना सीखे और जाने कि वह हमारे मन में विचार या हमारे दिलों में बोझ डालता है । सुनिश्चित करें कि आप प्रत्येक दिन परमेश्वर को सुनने में समय व्यतीत करते है । कुछ ने पाया है कि यह एक विशेष समय और स्थान नियुक्त करना में मददगर होता है जहां और जब वे एकांत में परमेश्वर से मिलते हैं। अपना सेल फ़ोन बंद करें और लोगों को बताएं कि वो आपको अवाजार ना करें । फिर परमेमशवर को सुनने और बात करने में समय बिताएं। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा भी हमसे बात करता है। धीरे-धीरे बाइबल पढ़ने और जो कुछ आप पढ़ते हैं उस पर मनन करने में समय बिताएँ। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा आप से बात करेगा। परमेश्वर को सुनना सभी मसीहीयों के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता है, चाहे उनके दिन कितने भी व्यस्त क्यों ना हों। यीशु जल्दी उठ जाता था और परमेश्वर के साथ अकेले समय बिताने के लिए एकांत में चला जाता था । कभी-कभी तो वह पूरी रात जाग कर भी प्रार्थना करता था। यदि यीशु को ऐसा करने की आवश्यकता होती थी , तो हमें ऐसा करने की कितनी आवश्यकता है?

जब आप ऐसा करते हैं तो ना केवल आपके पास प्रत्येक दिन कुछ समय होना चाहिए, बल्कि पूरे वर्ष में विशेष दिनों की छुट्टी लें ताकि आप अकेले हों और वचन पड़ते समय प्रार्थना और मनन करें । मैं बुधवार की सुबह अकेले अपने चर्च में प्रार्थना और आराधना में व्यतीत करता हूँ । यह सुनिश्चित करना अक्सर कठिन था कि मैंने ऐसा कीया है, लेकिन जब मैंने कीया तो यह मेरे सप्ताह का सबसे अच्छा समय होता था। जब मैं अकेले लंबी सैर पर जाता हूं तो मुझे प्रार्थना करना अच्छा लगता है। परमेश्वर की पर्कृति में होने से मुझे उसके साथ बेहतर ढंग से जुड़ने में मदद मिलती है। आपको पता होना चाहिए कि आपके लिए क्या बेहतर तरीके से उपयोगी है और इसलिए इसे करें।

आराम करने और परिवार और प्रियजनों के साथ समय बिताने के लिए अपने सामान्य कार्य कर्तव्यों से सप्ताह में एक दिन छुट्टी लेना भी महत्वपूर्ण है। उनको भी हमारे साथ अबाधित समय चाहिए होता है । परमेश्वर हमें आज्ञा देता है कि हम सात में से एक दिन छुट्टी लें। दुर्भाग्य से, यह एक आदेश है जिसे अधिकांश कलीसिया के अगुवा तोड़ते हैं। लेकिन परमेश्वर इसे एक अच्छे कारण के लिए आज्ञा देता हैं और हमें उसका पालन करना चाहिए। मेरे लिए, काम से हट कर इस समय के दौरान, जब मैं अधिक आराम और शांत होता हूं, तो परमेश्वर मुझे आराम, प्रोत्साहन या ज्ञान की बात करता हैं। इसके अलावा, इसके दौरान मुझे अपने परिवार के साथ अधिक समय मिलता है जो बहुत ही महत्वपूर्ण है।

आप प्रतिदिन कितना समय अकेले परमेश्वर के साथ बिताते हैं? क्या आप अपना अधिकांश समय परमेश्वर से बात करने में व्यतीत करते हैं या परमेश्वर को सुनने में व्यतीत करते हैं? क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर को कैसे सुनना है? क्या आप उसे सुन पाते हैं जब वह आपके मन में विचार या आपके हृदय में बोझ डालता है? जब आप बाइबल का अध्ययन और मनन करते हैं तो क्या आप उसे अपने साथ बोलते हुए सुनते हैं? क्या आप अपनी सेवकाई और अन्य कामों से आराम करने और परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताने के लिए समय निकालते हैं?

7-एक ईश्वरीय अगुवा दृढ़ रहता है

एक समय ऐसा आएगा जब हर अगुवा पद छोड़ना चाहेगा। मूसा ने कई बार छोड़ना चाहा था (गिनती 11:14-15)। सेवकाई का बोझ भारी हो जाता है, विपक्ष हमारी प्रगति को कठिन बना देता है और हमारी ऊर्जा कम होने लगती है। मेरा एक समय था जब मैं छोड़ना चाहता था और चाहता था कि परमेश्वर मुझे छोड़ देने की इजाजत दे , लेकिन मैं अंदरूनी तौर से हमेशा जानता था कि वह ऐसा नहीं चाहता था,

और मैं उसकी अवज्ञा नहीं करना चाहता था, इसलिए मैंने काम करना जारी रखा । प्रत्येक अगुवा को यह अपने लिए सीखने की जरूरत है। निराशा शैतान का एक मजबूत हथियार है और हमें इसे पहचानने की जरूरत है और इसके आगे झुकना नहीं चाहिए।

मूसा ने अपने परिवार को खो दिया जब उसकी पत्नी और बच्चे उसे छोड़कर घर वापस चले गए (निर्गमन 4:24-26)। यहूदी लगातार शिकायत कर रहे थे और उसकी आलोचना कर रहे थे उसके लिए जो वह क्या कर रहा था , भले ही वह परमेश्वर के निर्देशों का पालन कर रहा था। जैसा कि हम सब करते हैं मूसा ने पाप के साथ संघर्ष कीया, और अक्सर अपने क्रोध पर नियंत्रण की कमी के कारण पराजित हुआ। उसने कभी वह पूरा नहीं कीया जो परमेश्वर चाहता था - यहूदियों को वादे के देश में ले जाने का काम । वे सिर्फ 40 साल तक बिना बढ़े या परिपक्व हुए भटकते रहे। कलीसिया के अगुवों के रूप में आज भी हम इसी प्रकार की कठिनाइयों का सामना करते हैं।

एक सबक जो मैंने मूसा से सीखा, वह था यीशु पर अपनी नज़र रखने का महत्व, ना कि आपने आस-पास की परिस्थितियों पर या जो मैं पूरा करने की कोशिश कर रहा था उसके परिणामों पर। परमेश्वर हमसे उम्मीद करता है कि हम उसके प्रति विश्वासयोग्य रहें (1 कुरिन्थियों 4:2)। वह हमसे बड़े बड़े परिणामों की उम्मीद नहीं करता है, जो वह हमें सौंपता है, उसके प्रति केवल विश्वासयोग्यता की उम्मीद करता है । यिर्मयाह ने बिना किसी को परिवर्तन करने के 50 वर्ष तक सेवकाई की। यशायाह की सेवकाई लगभग एक जैसी थी। इसलिए ईमानदारी से दृढ़ रहो।

जब परमेश्वर आपकी ओर देखता है, तो क्या वह आप में किसी ऐसे व्यक्ति को देखता है जो विश्वासपूर्वक दृढ़ रहता है चाहे कुछ भी हो रहा हो? क्या आप जल्दी छोड़ देने वाले व्यक्ति हैं ? हो सकता है कि आप पूरी तरह से नहीं छोड़ते हैं, लेकिन क्या आप धीमे हो जाते हैं और उतनी ईमानदारी से सेवा नहीं करते जितना आपको करना चाहिए? कौन सी चीजें आपके लिए दृढ़ रहना कठिन बनाती हैं? इन सब बातों के बावजूद वफ़ादारी से सेवा करते रहने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

8-एक ईश्वरीय अगुवे के घनिष्ठ मित्र होते हैं

एक और चीज जो हमें दृढ़ रहने में मदद कर सकती है, वह है ऐसे मित्र जो हमें समर्थन देते है और हमें प्रोत्साहित करते हैं। यह नेतृत्व के हर क्षेत्र में मदद कर सकता है। आपका साथी वह होना चाहिए जिसके साथ आप अधिक से साधिक आपने दुःख-सुख साझा करते हैं। अन्य मित्र भी महत्वपूर्ण हैं, विशेषकर वे जो अगुवा भी हैं। मूसा के पास उसका ससुर जेथ्रो जो एक वृद्ध व्यक्ति था और जरूरत पड़ने पर सलाह देता था । उसका अपना भाई हारून जो उसकी अपनी उम्र का था एक ऐसे एक दोस्त सा था जिसके साथ वह आपना भार साझा करने के लिए उससे बात कर सकता था। उसके पास एक जवान पुरूष था, जो उसकी सहायता करे, और उस से सीखे, वह था यहोशू। आपको भी, किसी ऐसे वृद्ध की ज़रूरत है जो प्रोत्साहन और सलाह दे और आपकी विश्वासयोग्यता के लिए आपको जवाबदेह ठहराए। आपको एक हम-उमर की जरूरत है जो जीवन में समान चीजों का सामना कर रहा हो ताकि आप उनका एक साथ सामना कर सकें और एक दूसरे की मदद कर सकें। और आपको अपनी सहायता के लिए और आपसे सीखने के लिए अपने से कम उम्र के किसी व्यक्ति की आवश्यकता है ताकि वे अंततः अपने दम पर सेवा कर सकें। पौलूस के पास एक बूढ़ा संरक्षक (लूका), एक हम-उम्र दोस्त जो उसी के समान हालातों में से गुजर रहा था (बरनबास)और एक जवान आदमी था (तीमुथियुस) जिसको प्रशिक्षित कीया जाना था। इन तीनों भूमिकाओं में भी प्रत्येक अगुवा को किसी न किसी की आवश्यकता होती है।

आपके सबसे करीबी दोस्त कौन हैं? क्या आप उनके साथ साझा करते हैं कि आप अपनी सेवकाई के बारे में कैसा महसूस कर रहे हैं? क्या आपका साथी कोई है जिससे आप ऐसी बातों के बारे में बात करते हैं जो आपको हतोत्साहित करती हैं? आपके पास कौन है जो आप से अधिक उम्र का और अधिक अनुभवी है जिस के साथ आप नियमित रूप से अपने जीवन और कार्य के बारे में बात करते हैं? क्या कोई अन्य पादरी या सेवक मित्र है जो जानता है कि आप किस दौर से गुजर रहे हैं? आप सेवकाई के लिए किसे प्रशिक्षण दे रहे हैं जैसे वे आपकी सेवकाई में मदद करते हैं?

ईश्वरीय नेतृत्व के बारे में हम मूसा से ये कुछ सबक सीख सकते हैं। जैसा कि हम मूसा के जीवन से देखते हैं, एक विश्वासयोग्य अगुवा होना आसान नहीं है, जिसे परमेश्वर द्वारा उपयोग कीया जाता है। मूसा के पास सफलता के कुछ महान समय थे, लेकिन कुछ बड़ी असफलताएँ भी थीं। फिर भी, परमेश्वर ने ईमानदारी से उसके साथ काम कीया, उसे परमेश्वर का वह आदमी बनने में मदद की जिसे परमेश्वर ने उसे बनने के लिए बनाया था। वह हम में से प्रत्येक के साथ ऐसा ही करेगा यदि हम उसकी सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं चाहे कुछ भी हो, और हम स्वयं को विनम्र करने और उसकी आत्मा द्वारा परिवर्तित होने के इच्छुक हैं।

हमने मूसा के जीवन से देखा है कि एक ईश्वरीय अगुवा बनने के लिए हमें यह अवश्य करना चाहिए:

1. आपने जीवन और सेवकाई के लिए परमेश्वर की योजना का पालन करना

2. विनम्र बनना

3. दूसरों की सेवा करना , खासकर आपने परिवार की

4. आलोचना में संतुलन बनाए रखना

5. सचाई से कार्य करना

6. परमेश्वर के साथ अकेले समय बताना

7. दृढ़ रहना

8. करीबी दोस्त रखना

क्या आपके पास ये हैं? अब आपके जीवन में कौन-कौन से स्पष्ट हैं? आप में किन किन की कमी है? सुधार शुरू करने के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता है? इन चीजों के लिए प्रार्थना करें और परमेश्वर से मदद मांगें ताकि आप इनमें से प्रत्येक को अपने जीवन में शामिल कर सकें।

4. यहोशू से नेतृत्व के सबक

पढ़ें यहोशू 5:13 - 6:2

यहोशू के पूरे जीवन से ईश्वरीय नेतृत्व के कई सबक हैं, लेकिन हम उस समय पर ध्यान देंगे जब उसने पहली बार मूसा से नेतृत्व का कार्यभार संभाला था। मूसा बहुत प्रतिभाशाली, अच्छी तरह से प्रशिक्षित और बहुत अनुभवि व्यक्ति था । जब वह मरा तो जो उसके लिए कठिन था अब यहोशू के हाथ में था । वह एक सामान्य, औसत व्यक्ति था: मूसा जैसा विशिष्ट व्यक्ति नहीं था । उसे कुछ ऐसा करने के लिए

बुलाया गया था जो वह नहीं कर सकता था - और वह इसे जानता था। फिर भी, यहूदियों को वादा किए गए देश में ले जाने के लिए वह परमेश्वर की पसंद था। अक्सर परमेश्वर उन्हें चुनता है जो यह महसूस करते हैं कि वे परमेश्वर की माँग को पूरा करने में असमर्थ हैं ताकि वे उस पर भरोसा करें और उसे पूरा करने के लिए उस पर निर्भर रहें। इसलिए परमेश्वर ने यहोशू को चुना। यदि एक अगुवा होने के नाते आप कार्य करने में सक्षम महसूस करते हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि परमेश्वर आपको उस स्थिति में चाहता है , तो आपको इन पाठों से लाभ होगा जो हम यहोशू से सीख सकते हैं।

1-एक ईश्वरीय अगुवा जानता है कि वह कभी अकेला नहीं होता

यहोशू 5:13 जब यहोशू यरीहो के निकट था, तब उस ने आंख उठाकर देखा, कि एक पुरूष हाथ में नंगी तलवार लिए हुए उसके साम्हने खड़ा है। तब यहोशू उसके पास गया और पूछा, क्या तू हमारी ओर है या हमारे शत्रुओं का?

परमेश्वर ने यहोशू को यह आश्वासन देने के लिए स्वयं को प्रकट कीया कि वह यहूदियों का नेतृत्व करने वाला अकेला नहीं था। एक अगुवा होने के नाते एक बहुत ही अकेलेपन की स्थिति हो सकती है। अगुवे के पास महत्वपूर्ण निर्णयों और जीवन बदलने वाली घटनाओं की जिम्मेदारी होती है। वह क्या महसूस करता है, दूसरा कोई इसे महसूस नहीं कर सकता । उसके आस-पास अन्य लोगों का भी दबाव होता है जो उसके नेतृत्व करने के तरीके का विरोध करने या प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। एक अगुवा किसी और से ऐसा करने की उम्मीद नहीं कर सकता जो उसकी अकेले की जिम्मेदारी बनती है। हां, एक अगुवा होना बहुत अकेलेपन का काम हो सकता है।

इसलिए यह जानना इतना महत्वपूर्ण है कि हम कभी भी अकेले नहीं होते। हम यहोशू की तरह अकेला महसूस कर सकते हैं, लेकिन परमेश्वर की उपस्थिति हमेशा हमारे साथ है जैसे वह यहोशू के साथ था। हो सकता है कि हम उसे देखने में सक्षम नहीं हो सकते हैं, लेकिन हम जानते हैं कि वह हमारे साथ है (व्यवस्थाविवरण 31:6; इब्रानियों 13:5) और हमारे भीतर वास करता है (1 कुरिन्थियों 3:16)। जब यहोशू ने पहली बार मूसा से पदभार संभाला, तो परमेश्वर ने उसके साथ रहने का वादा कीया था: "कोई भी व्यक्ति आपके जीवन के सभी दिनों में आपके सामने खड़ा नहीं हो सकेगा। जैसे मैं मूसा के साथ था, वैसे ही मैं तुम्हारे साथ रहूंगा। मैं तुझे न छोडूंगा और न त्यागूंगा" (यहोशू 1:5)। परमेश्वर इसे फिर से दोहरा रहा है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि यहोशू इसे याद रखे।

हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि परमेश्वर हमारे साथ है, भले ही एक समय ऐसा ना लगे। वह वादा करता है कि उसकी उपस्थिति हमेशा हमारे साथ है और वह हमारे भीतर रहता है। हम कभी भी अकेले नहीं होते। शैतान हमें यह विश्वास दिलाने की कोशिश करता है कि परमेश्वर ने हमें छोड़ दिया है, किसी को परवाह नहीं है, और हम बिलकुल अकेले हैं। वे झूठ हैं, क्योंकि परमेश्वर आपने वचन में जो कहता है वह उसका खंडन करते हैं (फिलिप्पियों 1:6)।

आप नेतृत्व में सबसे अधिक हतोत्साहित कब होते हैं? आप सबसे ज्यादा अकेला कब महसूस करते हैं? उस समय के बारे में सोचें जब परमेश्वर ने आपके लिए प्रदान कीया है। क्या कभी ऐसा हुआ है कि उसने आपको विफल कीया हो? ऐसी घटनाएं हो सकती हैं जिन्हें आप नहीं समझते हैं, लेकिन किसी भी तरह से परमेश्वर उनके बाद भी आपके साथ हैं। आपको हतोत्साहित करने के लिए शैतान आपके दिल में कौन से झूठ डालता है? जब आप शैतान के झूठ को सुनना शुरू करते हैं कि आप अकेले हैं और परमेश्वर को आप की परवाह नहीं है, तो आपको क्या करना चाहिए?

2-एक ईश्वरीय अगुवा समझता है कि वह प्रभारी नहीं है

यहोशू 5:14 उस ने उत्तर दिया, "नहीं," परन्तु अब मैं यहोवह की सेना के सेनापति के रूप में आया हूं।" तब यहोशू श्रद्धा से भूमि पर गिर पड़ा, और उस से पूछा, मेरे प्रभु अपने दास के लिये क्या सन्देश देता है?

यीशु यहोशू को याद दिला रहा था कि वह यहोशू की सेना का नहीं, बल्कि "यहोवह की सेना का सेनापति" था। यहोशू इस व्यक्ति, स्वयं यीशु द्वारा पछाड़ दिया गया है। सर्वोच्च पद का अधिकारी हमेशा प्रभारी होता है, और यीशु यहोशू से बढ़ चढ़ के है। यीशु ने आपको और मुझे भी पछाड़ दिया है! हम भी प्रभारी नहीं हैं!

पादरी चरवाहे हैं - यही 'पादरी' शब्द का अर्थ है। तौभी हम प्रधान चरवाहे के अधीन चरवाहे हैं, क्योंकि जिन लोगों की हम अगुवाई करते हैं वे उसकी भेड़ें हैं, हमारी नहीं (1 पतरस 5:4)। वे उसके हैं और वह हम पर एक कर्ज से है। यह हमारे बच्चों के साथ-साथ उन लोगों पर भी लागू होता है जिनकी हम सेवकाई करते हैं। चूँकि वे उसकी भेड़ें हैं, तो वह प्रभारी है। हमें उसकी योजनाओं और आदेशों को पूरा करना चाहिए, लेकिन वे उसकी योजनाएँ और आदेश हैं, हमारे नहीं! परमेश्वर के पास हम में से प्रत्येक के लिए एक योजना है, और यह हमारे आसपास के अन्य लोगों के लिए उसकी योजना से भिन्न है। हम साहस और आत्मविश्वास के साथ नेतृत्व कर सकते हैं, लेकिन हमारा विश्वास परमेश्वर में होना चाहिए नाकि आपने आप पर।

क्या आप कभी-कभी सोचते हैं कि आपके परिवार, कलीसिया या सेवकाई के लोग आपके हैं? क्या आप कभी भूलते हैं कि वे वास्तव में परमेश्वर के हैं, आपके नहीं? क्या आपको कभी ऐसा लगता है कि आपकी लड़ाई लड़ने के लिए केवल आपकी अकेलों की है? यह हमेशा याद रखना इतना महत्वपूर्ण क्यों है कि नियंत्रण यीशु का है हमारा नहीं? क्या आप हमेशा उसकी भेड़ों का नेतृत्व उसी तरह करने का प्रयास करते हैं जिस तरह से वे चाहता हैं नाकि आपकी अपनी योजनाओं और विचारों के अनुसार चलें?

3-एक ईश्वरीय अगुवा परमेश्वर को याद रखता है और उसका कार्य पवित्र होता है

यहोशू 5:15 यहोवह की सेना के सेनापति ने उत्तर दिया, अपनी जूते उतारो, क्योंकि जिस स्थान पर तुम खड़े हो वह पवित्र है। और यहोशू ने वैसा ही कीया।

यह अजीब लग सकता है कि यीशु द्वारा यहोशू को अपनी सैंडल उतारने का आदेश देने से बातचीत बाधित हो गई क्योंकि वह पवित्र भूमि पर था। किसने इसे पवित्र बना दिया? कुछ मिनट पहले तो यह पवित्र नहीं थी, अब ऐसा क्यों हो गया है? वह पवित्र है, क्योंकि परमेश्वर पवित्र है, और परमेश्वर यहोशू के साथ वहां उपस्थित था। परमेश्वर पवित्र है; हमें इसे हमेशा याद रखना चाहिए और उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जिसके वह योग्य है। जब हम उसके सामने पवित्र जीवन जीते हैं तो हम उसे सम्मान और इज्जत दिखाते हैं।

हमें यह याद रखना चाहिए कि जहाँ कहीं भी परमेश्वर हमें ले जाता है या वह हमें से जो कुछ भी कराता है, चाहे वह हमें कितना भी महत्वहीन क्यों न लगे, वह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि परमेश्वर ने उसमें अपनी उपस्थिति से उसे पवित्र बनाया होता है। परमेश्वर की दृष्टि में कोई छोटी सेवकाई नहीं है: अपने बच्चों के

साथ एक माँ, अपने परिवार के साथ एक पिता, एक संडे स्कूल या बाइबल की कक्षा, एक चर्च जिसमें कुछ ही लोग हैं - परमेश्वर की दृष्टि में कुछ भी छोटा और महत्वहीन नहीं है।

मैंने 35 वर्षों तक एक छोटे से शहर में एक छोटी सी कलीसिया की पासबानी की। लोग आए और गए, और हमने कई लोगों की सेवा की जो हमारी कलीसिया का हिस्सा नहीं थे, लेकिन यह आकार में कभी नहीं बढ़ा। रविवार की सुबह उपस्थिति हमेशा 30 से 35 लोग की संख्या होती थी, हालाँकि कई अन्य लोग हमारे पास प्रशिक्षण और मार्गदर्शन के लिए आते थे। परमेश्वर ने मुझे सिखाया कि उसकी दृष्टि में सफलता उसके प्रति विश्वासयोग्य होने में है है, चाहे सेवकाई का आकार कुछ भी हो। हर सेवकाई पवित्र है और उसके लिए अभिषिक्त है। जहाँ कहीं वह तुम्हें रखता है वह उसकी सेवकाई है और वह उसमें उपस्थित है, वही इसे पवित्र भूमि बनाता है। प्रत्येक कार्य एक पवित्र कार्य है। एक माँ एक प्रचारक के समान ही विशेष होती है। एक छोटी कलीसिया का एक पादरी परमेश्वर के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि एक बड़ी कलीसिया का एक पादरी । एक पादरी की पत्नी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है जितना कि एक पादरी । परमेश्वर हमारी विश्वासयोग्यता को देखता है, हमारी सेवकाई के आकार को नहीं, क्योंकि प्रत्येक स्थान जिसकी हम सेवा करते हैं, उसके लिए पवित्र है।

क्या आप अपने बारे में बड़ा सोचते हैं क्योंकि आपके पास दूसरों की तुलना में बड़ी सेवकाई हो सकती है, या अपने बारे में छोटा सोचते है क्योंकि आपके पास एक छोटी सेवकाई है? क्या आप बड़ी सेवकाई वाले लोगों को अधिक महत्वपूर्ण और छोटे पदों वाले लोगों को कम महत्वपूर्ण मानते हैं? क्या आप पहचानते हैं कि आपकी सेवा का स्थान पवित्र है क्योंकि परमेश्वर उसके साथ हैं, और आपको इसे परमेश्वर के सामने पवित्र भूमि के रूप में मानना चाहिए? क्या आप अपने सभी विचारों और कार्यों में पवित्र होने का प्रयास करते हैं?

4-एक ईश्वरीय अगुवा मन में रखता है कि विजय परमेश्वर की ओर से होती है

यहोशू 6:1-2 इस्राएलियों के कारण यरीहो को कसकर बन्द कर दिया गया। न कोई बाहर गया, और न कोई भीतर आया। तब यहोवह ने यहोशू से कहा, सुन, मैं ने यरीहो को उसके राजा और उसके योद्धा समेत तेरे वश में कर दिया है।

जब यहोशू यहोवह से मिला, तो उसने पाया कि लड़ाई उसकी नहीं, बल्कि यहोवह की है। परमेश्वर तो पहले से ही शत्रु पर विजय हो चूका था । यहोशू को केवल परमेश्वर के वचन को सुनना और उसके आदेशों का पालन करना था। बाकी सब परमेश्वर ने करना था । यहूदियों के यरीहो पर हमला करने से पहले ही शहर उनका हो चूका था। उन्हें विश्वास से बाहर निकलने और हमला करने और लड़ने में परमेश्वर की आज्ञा मानने की आवश्यकता थी। परमेश्वर के नियंत्रण में सब कुछ था और वही उन्हें विजय प्रदान कर रहा था।

हमारी लड़ाईयां भी परमेश्वर के हाथ में होती है। हमें लड़ने और उसकी मदद की आशा करने की ज़रूरत नहीं है, हम उसके वचन में उसके निर्देशों का पालन करते हैं और जो वह कहता है उसका पालन करते हैं। हम विश्वास में कदम रखते हैं और उसे लड़ाई करने और लड़ाई जीतने देते हैं। हमारी सारी लड़ाईयां इसी तरह जीती जाएगी। कुछ को तब तक नहीं जीता जा सकता जब तक हम मर नहीं जाते, अन्य इस जीवनकाल में जीत ली जाती हैं। लेकिन हमें यह महसूस करना चाहिए कि जीत उसी से मिलती है, नाकि हमारी योजनाओं या ताकत से।

कभी-कभी उसके आदेश समझ में नहीं आते या करने के लिए सबसे अच्छी बात नहीं होते है। यहोशू से कहा गया था कि लोग छह दिनों तक शहर के चारों ओर एक बार घूमें, फिर सातवें दिन सात बार घूमें, बहुत शोर करें, और शहरपनाह को गिरते हुए देखें! यह उन्हें समझ में नहीं आया, लेकिन उन्होंने इसकी पलना की और जीत प्राप्त की । परमेश्वर ने उन्हें फिर कभी ऐसा करने के लिए नहीं कहा। प्रत्येक युद्ध के लिए आदेश अलग-अलग थे। एक बार परमेश्वर ने ओले भेजे, दूसरी बार सूरज खड़ा रखा ताकि दुश्मन रात में छिप ना सके। लड़ाई लड़ने का कोई एक तरीका नहीं है, परमेश्वर अलग-अलग समय पर अलग-अलग तरीके से नेतृत्व करता है। लेकिन हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि जीत उसी से मिलती है।

यह यहोशू के जीवन का सिर्फ एक छोटा सा हिस्सा है, लेकिन यह महत्वपूर्ण है क्योंकि परमेश्वर उसे शुरू में ही बुनियादी नेतृत्व का पाठ पढ़ा रहा हैं। ये हम सभी के लिए भी सीखने के लिए महत्वपूर्ण सबक हैं।

क्या आप जानते हैं कि आपकी लड़ाई परमेश्वर की लड़ाई है? क्या आप उसके वचन का पालन करते हैं और उस पर भरोसा करते हैं? या क्या आप घबराते हैं और अपनी ताकत से लड़ाई जीतने के लिए लड़ते हैं? यदि आप उस पर भरोसा करते हैं, तो जिस तरह से उसका वचन आपको लड़ने के लिए कहता है, उस तरह से लड़ते हुए आपको शांति मिलेगी।

यहोशू के जीवन की इस घटना से हमने देखा है कि एक ईश्वरीय अगुवा बनने के लिए हमें:

1. इस बात जाने कि हम कभी भी अकेले नहीं होते

2. इस बात को समझें कि हम प्रभारी नहीं हैं

3. याद रखें कि परमेश्वर और उसका कार्य पवित्र है

4. ध्यान रखें की जीत परमेश्वर की ओर से आती है

क्या आपके पास ये हैं? अब आपके जीवन में कौन-कौन सी बातें स्पष्ट हैं? आप में किस किस बात की कमी है? सुधार शुरू करने के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता है? इन बातों के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपके जीवन में इनमें से प्रत्येक को प्राप्त करने में आपकी सहायता करे।

5. दाउद से नेतृत्व के सबक

पढ़ें 1 शमूएल 4-21; 2 शमूएल (पूरा अधाय), 1 राजा 1-2

दाऊद की कहानी वास्तव में उसकी पढ़दादी रूथ से शुरू होती है। उसने बोअज़ नाम के एक आदमी से शादी की और वे परिवार के गृह-नगर

बेथलहम में रहते थे। इसलिए मरियम और यूसुफ, जो रूथ और बोअज़ के वंशज थे, उनको को भी जनगणना के लिए पंजीकरण कराने के लिए वहाँ जाना पड़ा (लूका 2:1-7)। बेथलहम येरुसलेम से 5 मील दूर किसानों और चरवाहों का एक छोटा सा गाँव था। रूथ के ओबेद नाम का एक पुत्र था, और उसका एक पुत्र हुआ जिसका नाम जैशे था, जो दाऊद का पिता था। दाऊद उसके 8 बेटों में सबसे छोटा था।

यहोशू की मृत्यु के बाद गिदोन और दबोरा जैसे न्यायियों ने देश पर शासन कीया। हालाँकि, लोग अन्य राष्ट्रों की तरह बनना चाहते थे; वे चाहते थे कि एक आदमी राजा बने। यह माँग कर वे परमेश्वर को अपना राजा मानने से इन्कार कर रहे थे। दाऊद के जन्म से लगभग 8 वर्ष पहले, परमेश्वर ने शाऊल के लोगों की पसंद के रूप में उनका राजा होने की अनुमति दी , जिसे लोग पसंद करते थे क्योंकि वह महान और शक्तिशाली था। लेकिन, उसने परमेश्वर का अनुसरण नहीं कीया, और उसने राष्ट्र को रह से भटका दिया।

दाऊद का जन्म लगभग 1035 ईसा पूर्व हुआ था। चूंकि वह सबसे छोटा बेटा था, इसलिए उसे   खेत में सबसे निचला काम भेड़ों की देख-रेख करना मिला। परन्तु, परमेश्वर ने उन वर्षों का उपयोग दाऊद को एक ऐसा व्यक्ति बनने के लिए प्रशिक्षित होने के लिए कीया जो परमेश्वर पर भरोसा रखेगा , प्रेम करेगा और उसकी सेवा करेगा। ईश्वरीय नेतृत्व के बारे में हम दाऊद से कई सबक सीख सकते हैं।

1-एक ईश्वरीय अगुवे में चुनौतियों का सामना करने का साहस होता है

जब वह 10 साल का था, तब तक दाऊद अपनी भेड़ों की रक्षा के लिए एक भालू और एक शेर से लड़ चुका था। एक युवा लड़के को ऐसा करने के लिए बहुत हिम्मत चाहिए थी। एक ईश्वरीय अगुवे का पहला सबक यह है कि उसे ईमानदारी से परमेश्वर की सेवा करने और दूसरों की अगुवाई करने के लिए साहस की आवश्यकता होती है। परमेश्वर हमें लगातार ऐसे पदों पर रखेगा जहाँ हमें सुरक्षा और छुटकारे के लिए केवल उस पर और केवल उसी पर भरोसा करना चाहिए। दाऊद ने सीखा कि वह हमेशा परमेश्वर पर भरोसा कर सकता है। यही साहस है - यह विश्वास करना कि चाहे कुछ भी हो जाए, परमेश्वर का नियंत्रण सब हालातों पर होता है। अगर हम परमेश्वर का अनुसरण करते हैं, तो डरने की कोई बात नहीं है। इसका मतलब यह नहीं है कि सब कुछ आसान या परिपूर्ण होगा, लेकिन इसका मतलब है कि परमेश्वर हमेशा हमारे साथ है और जो कुछ भी होता है, वह उसकी इच्छा से और उसकी महिमा के लिए होता है।

दाऊद ने भजन संहिता 27:1 में लिखा, "यहोवह मेरा प्रकाश और मेरा उद्धार है, मैं किसका भय मानूं? यहोवाह मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ है, मैं किस से डरूं?" परमेश्वर हमें छोटे-छोटे तरीकों से साहस करना सिखाता है, फिर जैसे-जैसे चुनौतियाँ बढ़ती हैं वैसे-वैसे उस पर हमारा विश्वास भी बढ़ता है। इससे पहले कि दाऊद गोलियत का सामना कर पाता, उसे भालू और सिंह का सामना करते हुए विजयी होना था।

आज भी नेताओं को ठठो, आलोचना और उत्पीड़न के खिलाफ खड़े होने के लिए साहस की जरूरत है। कभी-कभी हमारे सामने सबसे खतरनाक विरोधता दूसरे विश्वासियों की तरफ से आती है। यीशु के लिए खड़े होने और दूसरों को उसके पीछे चलने में उनका नेतृत्व करने के लिए साहस की आवश्यकता होती है। यह हमारे परिवारों में और हमारे दोस्तों के साथ शुरू होता है।

क्या आप वही करते हैं जो परमेश्वर अपने वचन में और अपनी आत्मा की अगुवाई के द्वारा आज्ञा देता है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दूसरे क्या सोचते हैं? क्या आप अक्सर दूसरों की राय से प्रभावित होते हैं? क्या आपका विश्वास केवल परमेश्वर पर आधारित है नाकि आपकी अपनी क्षमता पर?

2-एक ईश्वरीय अगुवे में धैर्य, दृढ़ता होती है

जब वह बारह वर्ष का था, तब शमूएल बेतलेहेम में यिशै के पास अगले राजा का अभिषेक करने के लिए आया, जो शाऊल का स्थान लेने वाला था। दाऊद के पिता ने दाऊद पर कभी धयान भी नहीं कीया, क्योंकि वह बहुत छोटा था। परन्तु परमेश्वर ने उन्हें दिखाया कि वह अगला राजा होगा (1 शमूएल 16:3)। दाऊद को 12 वर्ष में चुना गया और उसका अभिषेक कीया गया, लेकिन वह 42 वर्ष की आयु से पहले वह राजा नहीं बना, और फिर भी वह 12 गोत्रों में से केवल 2 का ही रजा बना था। आख़िरकार, जब वह 49 वर्ष का हुआ, तो वह पूरे देश का राजा बना। दाऊद को राजा बनने के लिए 37 वर्ष प्रतीक्षा करनी पड़ी! परमेश्वर उसे धैर्य और विश्वास सिखा रहा था । दाऊद ने भजन सहिता 27:14 में "प्रभु की बाट जोह" लिखा, और यह सभी अगुवों के लिए एक महत्वपूर्ण शिक्षा है। ईश्वरीय अगुवा बनने में, धैर्यपूर्वक विश्वास करना और हर हालत में परमेश्वर का अनुसरण करना सीखना, दृढ़ रहना सीखने में समय लगता है। धैर्य आत्मा का एक फल है (गलातियों 5:22-23) और हमारे पास यह केवल तभी है जब हम सभी बातों में उसकी उपस्थिति पर भरोसा करते हैं।

क्या तुम अब उन छोटी-छोटी बातों में विश्वासयोग्य हो जो परमेश्वर ने तुम्हें सौंपी हैं? क्या आप परमेश्वर के कार्य करने की प्रतीक्षा करने से संतुष्ट हैं, या आप हमेशा कोशिश करते और चाहते हैं कि हर कार्य और बात फटाफट होती जाए ? क्या आप खुद योजनाएँ बनाते हैं और फिर परमेश्वर से कहते है कि ऐसा काम होने दीजिये , या आप पहले उसके नेतृत्व और निर्देशन की प्रतीक्षा करते हैं? क्या जो लोग आपको भली-भांति जानते हैं वे कहेंगे कि आप एक धैर्यवान व्यक्ति हैं? क्या परमेश्वर कहेगा कि आप दृढ़ हैं और ईमानदारी से सेवा करते रहें, चाहे कुछ भी हो जाए?

3-एक ईश्वरीय अगुवा विनम्र होता है

अगले वर्ष, जब दाऊद 13 वर्ष का था, उसे राजा शाऊल के लिए संगीत बजाने के लिए चुना गया (1 शमूएल 16:21-22)। यह एक चरवाहे लड़के के लिए काफी सौभाग्य की बात थी जिसके पिता भी उसके बारे में भूल गए थे! वह   इस बात पर बहुत गर्व कर सकता था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वह हमेशा इस

बात पर चकित रहता था कि परमेश्वर उसे चुनेगा और उपयोग करेगा। "मैं कौन हूं और मेरा परिवार कौन है, कि तुम मुझे यहां तक लाए हो?" (2 शमूएल 7:18) । दाऊद को हमेशा याद रहता था कि उसके पास जो कुछ था और जो कुछ वह था वह सब परमेश्वर की ओर से आया था। उसने इसके बारे में अक्सर अपने भजनों में लिखता था।

एक अगुवा को आज भी आश्वस्त होना चाहिए, लेकिन इस के साथ साथ विनम्र भी होना चाहिए। उसका विश्वास परमेश्वर में होना चाहिए, ना कि उसकी अपनी क्षमता पर। एक अगुवा की स्थिति में होना एक बहुत बड़ा विशेषाधिकार है, लेकिन ऐसा कभी न सोचें क्योंकि आप इसके लायक हैं। हम में से कोई भी भगवान से कुछ भी पाने के लायक नहीं है! यदि वह हमें अगुवा नहीं बनाता , और हमारी जिमेदारियों को पूरा करने में हमारी सहायता नहीं करता , तो हम असफल ही होते। गर्व वह पाप है जिसने लूसिफर को परमेश्वर से दूर कर दिया, और यह कुछ ऐसा है जिसे वह उन सभी में स्थापित करने का प्रयास करता है जो परमेश्वर की सेवा करेंगे। वह बहुत चातुर है। वह हमारे अपने महत्व के विचार हमारे दिमाग में डालता है, और जब तक हम सतर्क नहीं होंगे हम उन्हें सुनना और उनका विश्वास करना शुरू कर देंगे। जैसा कि नीतिवचन कहता है, घमंड हमेशा पतन की ओर ले जाता है (नीतिवचन 16:18-28)।

आपके आस-पास के लोग क्या कहेंगे कि क्या आप विनम्र हैं या घमंडी हैं? घमंड के साथ आपका सबसे बड़ा संघर्ष कब होता है? उस पर विजय पाने के लिए आप क्या कर सकते हैं? यदि परमेश्वर ने अपनी उपस्थिति और आशीष आपसे अभी हटा ले, तो आप एक अगुवा के रूप में कैसे करेंगे?

4-एक ईश्वरीय अगुवे की ईश्वर में गहरी आस्था होती है

जब पलिश्तियों के साथ युद्ध शुरू हुआ तब दाऊद दो वर्ष से शाऊल के लिए संगीतकार था । उन्होंने परमेश्वर और यहूदियों का ठठा उड़ने के लिए अपने योधा गोलियत को भेजा। उसके आकार और प्रतिष्ठा के कारण हर कोई उससे डरता था। शाऊल, राजा और पुरुषों में सबसे बड़े, को उससे लड़ना चाहिए था, लेकिन वह भी डरता था। दाऊद उस शर्म से परेशान था जो गोलियत परमेश्वर और उसके लोगों के लिए उत्पन कर रहा था, इसलिए उसने स्वेच्छा से गोलियत से लड़ने के लिए अंदरूनी संघर्ष कीया। उसके जीतने का कोई रास्ता नहीं था, क्योंकि वह एक सैनिक भी नहीं था और युद्ध के हथियारों का उपयोग भी नहीं कर सकता था, लेकिन परमेश्वर में उसके विश्वास ने उसे लड़ने का साहस दिया। परमेश्वर की सहायता से उसने जीत हासिल की, और इस्राएल की सेनाओं को एक बड़ी विजय प्राप्त हुई (1 शमूएल 17:40-54)। दाऊद का परमेश्वर में विश्वास ने , जो वर्षों से बढ़ता जा रहा था, उसे असंभव परिस्थितियों में भी परमेश्वर पर भरोसा करने में सक्षम बनाया।

हम सभी जीवन में 'दिग्गजों' का सामना करते हैं। हम असंभव परिस्थितियों और परिस्थितियों का सामना करते हैं जिन्हें हम नियंत्रित नहीं कर सकते। यह स्वास्थ्य समस्या या आर्थिक परेशानी हो सकती है। यह अन्य लोगों के साथ या हमारी सेवकाई में की समस्याएँ हो सकती हैं, जिन प्रलोभनों से हम संघर्ष करते हैं वह या हमारे परिवारों में की समस्याएँ हो सकती हैं। ये हमारे संभालने की समर्थ से बहुत बड़ी हैं, इसलिए हमें परमेश्वर पर भरोसा करने की आवश्यकता है। परमेश्वर इन हालातों को हमें सिखाने की अनुमति देता है कि हमें उस पर भरोसा करना और उसके प्रावधान और छुटकारे को देखना सीखे ।

अभी आप अपने जीवन में किन दिग्गजों का सामना कर रहे हैं? क्या आप परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, चाहे कुछ भी हो ? इस सब के दौरान उस पर अपनी नज़र रखना मुश्किल हो सकता है, लेकिन क्या आप उस पर अपना विश्वास बनाए रखने की पूरी कोशिश करते हैं और यह नहीं देखते कि आपके आस-पास

क्या हो रहा है? ऐसा क्या है जो आमतौर पर आपको डराता है? उस समय परमेश्वर पर भरोसा करने के लिए आप क्या याद कर सकते हैं?

5-एक ईश्वरीय अगुवा ईश्वर का आज्ञाकारी होता है

गोलियत के विरुद्ध दाऊद की सफलता के कारण, उसे सेना में एक अधिकारी बनाया गया था। उसने शाऊल की बेटी को विवाह में प्राप्त कीया (2 शमूएल 18:21) और वह शाऊल के परिवार का हिस्सा बन गया। वह सभी के बीच बेहद लोकप्रिय था, लेकिन इससे शाऊल को बहुत जलन हुई। जितना अधिक परमेश्वर ने दाऊद को आशीर्वाद दिया, उतना ही शाऊल उस पर क्रोधित हो गया। उसने दाऊद को मारने की भी कोशिश की, इसलिए दाऊद भाग गया और छिप गया। लगभग 20 वर्षों तक, जब तक वह लगभग 35 वर्ष का था, दाऊद शाऊल से छिपा रहा, जो उसे पकड़ने और मारने की कोशिश करता रहा था । कई अन्य जो शाऊल के शत्रु थे, दाऊद के साथ छिप गए, और वह सैकड़ों लोगों की सुरक्षा और प्रावधान के लिए जिम्मेदार बन गया। दाऊद की अपनी 6 पत्नियाँ थीं और साथ ही देखभाल के लिए कई बच्चे भी थे।

कभी-कभी उसने परमेश्वर पर भरोसा नहीं कीया और उसकी आज्ञा का पालन नहीं कीया, लेकिन मामलों को अपने हाथों में ले लिया। वह झूठ बोलता या दूसरों को धोखा देता (1 शमूएल 27:10-12)। एक बार उसकी इस हरकत शाऊल द्वारा उन निर्दोष याजकों की हत्या का करण बन गयी, जिन्होंने उस की सहायता की थी (1 शमूएल 22:17-21)। दूसरी बार दाऊद और उसके लोगों ने निर्दोष अमालेकियों से उनका भोजन लेने के लिए मार डाला (1 शमूएल 27:8-9)। जब उसने पलिश्तियों के साथ गिरफ्तारी से बचने के लिए पागल होने का नाटक कीया। वह परमेश्वर की आज्ञाकारिता में बिल्कुल भी सिद्ध नहीं था (1 शमूएल 21:13)।

हालाँकि, अधिकांश समय वह सुरक्षा और निर्देशन के लिए परमेश्वर पर निर्भर रहा। वह दो बार शाऊल को मार सकता था, लेकिन ऐसा नहीं कीया क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर शाऊल की उसके आपने तरीके और समय में निपटेगा (1 शमूएल 24; 26)। वह अक्सर प्रार्थना और स्तुति में अपना हृदय परमेश्वर के सामने उण्डेल देता था (भजन संहिता 142)। इनमें से कई हमारी बाइबल में भजन संहिता के रूप में दर्ज हैं, क्योंकि कई भजन तब लिखे गए थे जब दाऊद शाऊल से छिपा हुआ था। कई बार उसने परमेश्वर से निर्देश और मार्गदर्शन मांगा, और फिर परमेश्वर ने जो कहा उसने उसका पालन कीया (1 शमूएल 23:1-4)।

अगुवों को आज जो कुछ भी वह करते हैं उसमें परमेश्वर के वचन और निर्देशों का पालन करना चाहिए। कभी-कभी हम बाइबल सिद्धांत को तोड़ देते हैं यदि हमें लगता है कि यह एक अच्छे कारण के लिए है, लेकिन अवज्ञा करने का कभी भी कोई कारण नहीं होता है। दूसरी बार हम अपने दम पर कार्य करते हैं और ऐसी बातें करते या कहते हैं जिनके बारे में हमने कभी प्रार्थना नहीं की और परमेश्वर के सामने नहीं लाए। हम वही करते है और वही करते है जो गैर-मसीही लोग करते है जो आपने उद्देश्य को आगे बढ़ाने या आपनी समस्याओं को हल करने के लिए करते हैं। हम इस बात से अधिक चिंतित होते हैं कि दूसरे क्या सोचेंगे बजाय इसके परमेश्वर क्या सोचता है। दाऊद की तरह, हम अपनी रक्षा करने या अपनी इच्छाओं को आगे बढ़ाने के लिए गलत काम करते हैं।

क्या आप उस समय के बारे में सोच सकते हैं जब आपने पहले परमेश्वर के पास जाए बिना कार्य कीया हो या कुछ बोल दिया हो और फिर आपको इसका पछतावा हुआ हो ? उस समय के बारे में सोचें जब

आपने उसकी और उसके वचन की अवज्ञा की - वह क्या साबित हुआ ? परमेश्वर के तरीके से काम करने के बजाय आप अपने आप पर कार्य करने के लिए सबसे अधिक परीक्षा में कब आते हैं? ऐसे समय को रोकने के लिए।

6-एक ईश्वरीय अगुवा पाप करने पर पछताता है

जबकि दाऊद परमेश्वर की आज्ञा मानता था , शाऊल नहीं मानता था । अन्त शाऊल युद्ध में मारा गया और दाऊद राजा बन गया । वह 49 वर्ष का था जब उसे सभी 12 गोत्रों का राजा बनाया गया। उसने जो कुछ भी कीया परमेश्वर ने उसे आशीशत कीया और समृद्ध कीया। राष्ट्र पहले से कहीं अधिक धनी और बड़ा हो गया, या फिर कहो कि जितना बड़ा कभी कभी होगा भी नहीं । पलिश्ती, मोआबी और अरामी हार गए । इस्राएल की सेनाएँ अपने सभी युद्धों में विजयी हुईं।

जब सब कुछ ठीक चल रहा था, 53 साल की उम्र में दाऊद ने युद्ध में नहीं जाने का फैसला कीया, लेकिन घर पर रहने का फैसला कीया, जो उसे नहीं करना चाहिए था। जब एक अगुवा अपनी परमेश्वर-प्रदत्त जिम्मेदारी की लापरवाही करता है तो संकट आता है, और दाऊद के साथ ऐसा ही हुआ। दाऊद ने बैथशेबा के साथ पाप कीया और अपने पाप को छिपाने की कोशिश में फिर से पाप कीया। इसमें एक अगुवा के तौर पर हमारे लिए भी सबक हैं।

एक बात के लिए, अगुवों को कभी भी अपनी जिम्मेदारी की लापरवाही नहीं करनी चाहिए, भले ही सब कुछ बहुत अच्छी तरह से चल रहा हों। एक और सबक यह है कि नेता प्रलोभन से मुक्त नहीं होते हैं, वास्तव में जितना अधिक हम यीशु का अनुसरण करने की कोशिश करते हैं, उतना ही अधिक हमारे पापी स्वभाव और शैतान और उसके राक्षस हमारा विरोध करते हैं। इसलिए, प्रलोभन से मुक्त होने के बजाय, हम और अधिक प्रभावित(चोटिल) होते हैं।

बैथशेबा के साथ पाप एक जाल था जिसे शैतान वर्षों से दाऊद के जीवन में स्थापित कर रहा है। उसकी कई पत्नियां थीं। जब वह एक औरत को देखता और जिसे वह चाहता, वह उससे शादी करता और उसे दूसरी पत्नी के रूप में ले जाता । क्योंकि वह राजा था, उसके लिए यह करना बहुत आसान था। परन्तु समस्या यह थी कि बैथशेबा पहले से ही शादीशुदा थी, लेकिन दाऊद फिर भी उसे भी अपने लिए ले गया। शैतान हम सभी के लिए जाल बिछाता है। यह एक छोटे से पाप के रूप में शुरू हो सकता है लेकिन धीरे-धीरे यह बढ़ता है। यह वासना, या लालच, या अभिमान हो सकता है। यह ईर्ष्या, धोखा, क्रोध या भय हो सकता है। चाहे कुछ भी हो, अगर हम इसे जीत नहीं लेते है जब यह छोटा ही है, तो पाप तब तक बढ़ता रहेगा जब तक वह हमें नष्ट नहीं कर देता!

कलीसिया के अगुवा इनमें से कुछ पापों के लिए विशेष रूप से सहज शिकार हो सकते हैं। दूसरे लोग हमारी प्रशंसा करते हैं और हमारा सम्मान करते हैं। महिलाएं पादरियों के साथ अपनी पत्नियों की तुलना में अधिक सम्मान के साथ व्यवहार कर सकती हैं। हम ऐसा आकर्षण पसंद कर सकते हैं और इसकी और अधिक चाहत रख सकते हैं। जल्द ही हम घर और सेवकाई में अपने कर्तव्यों की लापरवाही करना शुरू कर सकते हैं, और प्रलोभन में पड़ सकते हैं, जैसे दाऊद ने कीया था। यदि हम कभी भी प्रलोभन के सामने नहीं झुक्तें हैं, यदि हम अपने दिलों में घमंड को अनुमति देते हैं, तो हम पाप से भरे हुए हैं।

ऐसा कभी ना सोचें क्योंकि परमेश्वर आपको एक अगुवा के रूप में उपयोग कर रहा है और आपकी सेवकाई को आशीष दे रहा है तो कि आप पाप नहीं कर सकते या नहीं करेंगे। हम इंसान हैं और पाप

करेंगे। यह पाप की अनुमति देने का बहाना नहीं है। बल्कि यह हमें चेतावनी देने और हमें सतर्क रखने के लिए है। जब हम पाप करते हैं तो हमें इसे स्वीकार करना चाहिए और इसका अंगीकार करना चाहिए (1 यूहन्ना 1:9)। दाऊद ने ऐसा नहीं कीया। जैसा कि हमने पहले देखा, उसके पास अतीत में पापों को छिपाने और लुकाने का एक नमूना था। इसने उसे बैथशेबा के साथ अपने पाप को छिपाने की कोशिश करने के लिए उसे उत्साहित कर दिया। जो कुछ भी उसने कीया उसमे हत्या सहित और अधिक पाप जुड़ गया था। वह परमेश्वर से दूर था। पूरे देश के साथ-साथ उनके परिवार को भी नुकसान उठाना पड़ा। अंत में उसने पश्चाताप कीया और उसे क्षमा कर दिया गया, लेकिन राष्ट्र ने कभी भी उस ऊंचाई को प्राप्त नहीं कीया जो उसके पाप करने से पहले थी।

ऐसे कौन से पाप हैं जिन पर आप अभी अपने जीवन में विजय प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं? क्या आप उन्हें जड़ पकड़ते और मजबूत होते हुए देख सकते हैं? वे क्या हैं? यदि आप नहीं जानते कि आप कहां कमजोर हैं, तो आप इन चीजों से पराजित होने के लिए और भी अधिक सहज शिकार हैं। उन पर विजय पाने के लिए आपको क्या करना चाहिए? आप प्रार्थना, सलाह, जवाबदेही और विजय पाने में मदद के लिए किसके पास जा सकते हैं? दाऊद के पाप से आप क्या सीख सकते हैं?

7-एक ईश्वरीय अगुवा एक बलिदानी पति और पिता होता है

दाऊद ना केवल वासना के प्रलोभन में असफल हुआ, बल्कि उसके पास एक और क्षेत्र भी था जहाँ वह असफल रहा। वह क्षेत्र एक पति और पिता के रूप में था। वह एक अच्छा पति तो हो ही नहीं सकता था क्योंकि उसकी एक से अधिक पत्नियाँ थीं, और वह राजा के रूप में इतना व्यस्त था कि उसने अपने बच्चों की लापरवाही की। जब वह 57 वर्ष का था तब उसके पुत्र अम्नोन ने अपनी सौतेली बहन तामार के साथ दुर्व्यवहार कीया (2 शमूएल 13:1-20)। दाऊद क्रोधित था, परन्तु उसने ना तो तामार को शांति कीया या अम्नोन को सुधाराने की पेशकश नहीं की (2 शमूएल 13:21)। अंत में, तामार के भाई, अबशालोम ने मामलों को अपने हाथों में ले लिया और अम्नोन को मार डाला (12 शमूएल 13:23-35)। दाऊद ने फिर कुछ नहीं कीया (2 शमूएल 13:36-39)। बाद में अबशालोम ने अपने पिता के साथ मेल-मिलाप करने का प्रयास कीया, परन्तु दाऊद कभी भी अपने पुत्र के पास नहीं पहुँचा (2 शमूएल 14:25-33)। फिर उसने दाऊद के विरुद्ध विद्रोह कीया और देश का   गृहयुद्ध में नेतृत्व कीया। वह कई अन्य लोगों के साथ मारा गया (2 शमूएल 15-18)। दाऊद के परिवार और राष्ट्र के लिए वह बहुत ही दुखद समय था।

अगुओं के लिए किसी दूसरी जगह पर परमेश्वर का कार्य करने में इतना व्यस्त होना आसान है कि वे भूल जाते हैं कि उनकी पहली जिम्मेदारी उनके परिवारों के प्रति बनती है। बाइबल कहती है कि यदि कोई पुरुष एक अच्छा पति और पिता नहीं हो सकता है तो उसे पादरी नहीं होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:4-5, 12)। उसे अपनी कलीसिया के सामने अपने परिवार की सेवा करनी चाहिए और घर पर प्रार्थना और बाइबल की शिक्षा देकर उनमें से प्रत्येक को आध्यात्मिक रूप से विकसित होने में मदद करनी चाहिए। उसे अपनी पत्नी और बच्चों को बिना शर्त प्यार दिखाने की जरूरत है। उसे अपने बच्चों को प्यार और निरंतरता से अनुशासित करना चाहिए। उसे अपनी बेटियों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा वह अपने बेटों के साथ करता है। पुरुषों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके बच्चे अपनी मां का सम्मान करते हैं । परमेश्वर एक अच्छे पिता या माता होने को एक महान सेवकाई से अधिक महत्वपूर्ण मानता है! (इसके बारे में अधिक जानकारी के लिए जेरी श्मॉयर द्वारा "विवाह और सेवकाई " देखें)

क्या आपका साथी कहेगा कि आपने उन्हें अपनी सेवकाई से पहले रखा है? क्या आप दूसरों की तुलना में अपने परिवार को बढ़ने में मदद करने के लिए और अधिक कार्य कर रहे हैं, या आपका अधिकांश समय घर से दूर व्यतीत होता है? क्या आपके बच्चे जानते हैं कि वे आपके लिए कलीसिया के लोगों से ज्यादा महत्वपूर्ण हैं? अगर आपके बच्चे बड़े होकर आपकी तरह बनते हैं, तो क्या आपको उन पर गर्व होगा? आप एक बेहतर पति या पत्नी, माता या पिता बनने के लिए क्या कर सकते हैं?

8-एक ईश्वरीय अगुवे के पास दूसरों को प्रशिक्षित करने की दूरद्रष्टि होती है

दाऊद ने एक आदमी और एक अगुवा के रूप में सीखना और बढ़ना जारी रखा। वह अपनी सेना का नेतृत्व करता रहा। जब वह 63 वर्ष का था, तो वह लगभग एक और पलिश्ती दैत्य द्वारा मार डाला गया था, परन्तु परमेश्वर ने उसे छुड़ाया (2 शमूएल 21:15-17)। परमेश्वर ने दाऊद और बैथशेबा को एक पुत्र सुलैमान के साथ आशीशत कीया , जो अगला राजा होगा। दाऊद एक बेहतर पिता बन गया, जिसने सुलैमान को एक ईश्वरीय व्यक्ति और अगुवा बनने के लिए प्रशिक्षण देने में समय बिताया (1 राजा 1; 1 इतिहास 22)। जब वह 72 वर्ष का था, तब दाऊद ने सुलैमान को मंदिर के पुनर्निर्माण की जिम्मेदारी दी थी (1 इतिहास 28:1-21)। दो साल बाद वह मर गया, और सुलैमान ने राज्य पर अधिकार कर लिया (1 राजा 2:10-12)।

अगुवों को सदैव दूसरों को सेवकाई का कार्य करने के लिए प्रशिक्षण देते रहना चाहिए। दूसरों को सेवकाई के लिए प्रशिक्षित करना परमेश्वर की ओर से एक प्रमुख, परमेश्वर द्वारा प्रदत्त जिम्मेदारी है (इफिसियों 4:12)। एक अच्छा अगुवा हमेशा दूसरों को उनके आत्मिक वरदानों को सेवा में उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित करने में सक्रिय रहता है (2 तीमुथियुस 2:2)। इसमें हमारे अपने बच्चों को प्रशिक्षण देना भी शामिल है, जैसा कि दाऊद ने कीया था।

आप जो काम कर रहे हैं उसे करने के लिए आप किसे प्रशिक्षण दे रहे हैं? अपने जीवन के अंत तक प्रतीक्षा ना करें, यीशु के उदाहरण का अनुसरण करें और प्रत्येक को प्रशिक्षित करें जो सीखने और सेवा करने के इच्छुक हैं।

दाऊद बाइबल में सबसे ज्यादा प्यार करने वाले पुरुषों में से एक है। उसके बारे में पढ़ें और आप जीवन और नेतृत्व के लिए और भी बहुत कुछ सीखेंगे।

हमने दाऊद के जीवन से देखा है कि एक ईश्वरीय अगुवा होने के लिए हमें यह करना चाहिए:

1. चुनौतियों का सामना करने का साहस रखना

2. धैर्य और द्दढ़ता रखना

3. विनम्र रहना

4. परमेश्वर में गहरी आस्था रखना

5. परमेश्वर के आज्ञाकारी बनना

6. पाप का तुरंत पश्चाताप करना

7. बलिदानी पति और पिता बनना

8. दूसरों को प्रशिक्षित करना

क्या आपके पास ये हैं? इस समय आपके जीवन में क्या -क्या से स्पष्ट हैं? आप में किस - किस की कमी है? सुधार शुरू करने के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता है? इन चीजों के लिए प्रार्थना करें और परमेश्वर से मदद मांगें कि आप इनमें से प्रत्येक को अपने जीवन में पा लें ।

<u>6. नहेमायाह से नेतृत्व के सबक</u>

नहेमायाह की किताब पढ़ें

उनकी निरंतर अवज्ञा के कारण, यहूदियों को बाबुल द्वारा बंदी बना लिया गया। अपने वादे के अनुसार, परमेश्वर ने कुछ यहूदियों को लगभग 50 साल बाद जरुब्बाबेल के अधीन लौटने की अनुमति दी। उन्होंने नष्ट किए गए मंदिर का पुनर्निर्माण कीया, हालांकि यह मूल मंदिर की तुलना में बहुत कम भव्य था। हाग्गै और जकर्याह ने उन लोगों को प्रचार कीया। एस्तेर इस समय के दौरान जीवत थी और यहूदियों को बचाती थी। अधिकांश यहूदियों ने बाबुल में रहना पसंद कीया जहां जीवन आसान था, बजाये इसके जैसा क्यह नष्ट हो चुके शहर को वापस जाकर उसक पुनर्निर्माण करने में होता।

उसके लगभग पैंसठ साल बाद, एज्रा ने पारस से यरूशलेम तक एक छोटे समूह का नेतृत्व कीया। फिर, पन्द्रह वर्ष बाद, परमेश्वर ने नहेमायाह को तीसरे और अंतिम समूह को वापस लौटने के लिए नेतृत्व करने के लिए चुना। यरूशलेम के गिराए जाने के समय उसके दादा-दादी को बंदी बना लिया गया था। ऐसा लगता है कि उन्होंने परमेश्वर में अपना विश्वास रखना जारी रखा, हालांकि, उन्होंने नहेमायाह को जो नाम दिया उसका अर्थ है "प्रभु शान्ति देता है।"

राजा अर्तक्षत्र की सरकार में नहेमायाह का बहुत महत्वपूर्ण स्थान था। उसे राजा का "पीलाने वाला"(साक्की)कहा जाता है (नहेमायाह 1:11)। पहले के समय में पिलाने वाला वह होता था जो राजा को दी जाने वाली हर चीज में से सबसे पहले पीता था ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कोई राजा को जहर देने की कोशिश नहीं कर रहा है। नहेमायाह के समय तक यह एक ऐसे व्यक्ति का पद बन गया थी जो राजा का एक शीर्ष सहायक और सलाहकार होता था।

1-एक ईश्वरीय अगुवा प्रार्थना करता है

446 ईसा पूर्व के अंत में, राजधानी शहर सुसा में, नहेमायाह को यरूशलेम और वहां रहने वाले यहूदियों की भयानक स्थिति के बारे में खबर आई। शहर की शहरपनाह फिर कभी नहीं बनाई गई, और इससे लोगों और उनके परमेश्वर की बड़ी बदनामी हुई क्योंकि उनके आस-पास के सभी राष्ट्र इसे इस बात के

प्रमाण के रूप में देखते थे कि इस्राएल का परमेश्वर अपने लोगों की देखभाल नहीं कर सकता था। लोग 150 साल से वापस आ गए थे, लेकिन शहर को बहाल करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया था। इसने वास्तव में नहेमायाह को परेशान कीया, और जब उसने समाचार सुना तो उसने प्रार्थना की और कई दिनों तक उपवास कीया (नहेमायाह 1:1-5)।

हालाँकि वह सैकड़ों मील दूर रहता था, नहेमायाह व्यक्तिगत रूप से उन ज़रूरतों से चिंतित था जिनके बारे में उसने सुना था। ना तो वह और ना ही उसके माता-पिता कभी यरूशलेम वापस आए थे, इसलिए उन्होंने तो कोई समस्या उत्पन्न नहीं की थी; उस देश के लोगों ने शहरपनाह और नगर को फिर ना बना कर उन से ऐसा करवा दिया। फिर भी वह उनकी विफलता पर रोता था । भले ही वे अपने पाप के परिणाम भुगत रहे थे, फिर भी उन्हें उन पर दया आती थी। उसने उनकी जरूरतों के साथ उनकी पहचान की और उनकी आलोचना नहीं की या उनको दोष नहीं दिया। साथ ही, वह दुखी हुआ क्योंकि परमेश्वर की प्रतिष्ठा को ठेस पहुंची थी।

नहेमायाह प्रार्थना करने वाला व्यक्ति था (1:4; 2:4, 9; 5:19; 6:9, 14; 13:14, 22, 29, 31)। वह अक्सर प्रार्थना करते हुए देखा जाता हैं, और यह पुस्तक का मुख्य विषय है। वह दानिय्येल की तरह जीवन में जो कुछ भी होता है, उसके साथ सबसे पहले परमेश्वर के पास जाता है। इस पहली प्रार्थना में, जब वह यरूशलेम के बारे में सुनता है, तो नहेमायाह अपने लोगों पर परमेश्वर से प्रेम और दया की याचना करता है। वह लोगों के पापों को स्वीकार करता है (जैसा कि दानिय्येल ने कीया था) और स्वीकार करता है कि परमेश्वर धर्मी है। फिर वह स्थिति को ठीक करने के लिए परमेश्वर से मदद मांगता है। वह लैव्यव्यवस्था 26 और व्यवस्थाविवरण 30 में परमेश्वर के वादों को याद करता है कि एक दिन लोगों को वापस देश में ले आएगा ।

प्रार्थना आज भी अगुओं के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण विशेषता है। हम दूसरों का नेतृत्व तब तक नहीं कर सकते जब तक कि हम सभी अगुओं के अगुवा - स्वयं परमेश्वर का अनुसरण नहीं कर रहे हैं। हमें प्रार्थना में बात करने और परमेश्वर को सुनने में समय व्यतीत करना चाहिए ताकि हम जान सकें कि वह हमें किस दिशा में ले जाना चाहता है, साथ ही साथ वह हमें कैसे नेतृत्व करने की चाहत रखता है। यदि नहीं, तो हम बस अपने रास्ते चले जाते हैं, और यह आपदा की ओर ले जाता है। प्रार्थना के बिना वास्तविक स्थायी मूल्य का कुछ भी नहीं कीया जा सकता है। प्रार्थना करने से हम अपनी दिशा में जल्दबाजी करने के बजाय परमेश्वर की प्रतीक्षा करते हैं, हमें परमेश्वर की योजना के लिए खोलता हैं, और हमारे विश्वास को सक्रिय करते हैं इसलिए हम जो कुछ भी करते हैं उसमें हम उस पर भरोसा करते हैं।

जब आप किसी मसीही जन या कलीसिया के बारे में सुनते हैं जो संघर्ष कर रहा होता है, या परमेश्वर के प्रति वफादार रहने में असफल हो रहा है, तो क्या आप आलोचना करते हैं और न्याय करते हैं, या आपका दिल उनके लिए टूट जाता है क्योंकि परमेश्वर का दिल भी उनके लिए टूट जाता है? क्या आपको परमेश्वर के लोगों के लिए दया और चिंता है जो परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते हैं? क्या आप परमेश्वर से उन पर दया करने की प्रार्थना करते हैं? क्या आप इस बात से चिंतित हैं कि वे परमेश्वर की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचा रहे हैं? क्या आपके लोगों की ज़रूरतें आपको ईमानदारी से उपवास करने और उनके लिए प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करती हैं? क्या आप एक ऐसे अगुवा हैं जो प्रार्थना करने वाला पुरुष या प्रार्थना करने वाली महिला है?

2-एक ईश्वरीय अगुवा धैर्य और योजना वाला व्यक्ति होता है

नहेमायाह ने चार महीने तक यरूशलेम की स्थिति के लिए प्रार्थना की और उपवास कीया। उस दौरान परमेश्वर ने उसके मन में एक विचार डाला। वह प्रार्थना कर रहा था कि कोई यरुशलम जाए और वहां की स्थिति को ठीक करे - शायद वह वही व्यक्ति हो! फिर एक दिन राजा ने पूछा कि उसे क्या परेशान कर रहा है। राजा के सामने कुछ भी होना परन्तु ना खुश रहना मना था, लेकिन नहेमायाह ईमानदार था और उसने राजा से कहा कि वह अपने घर, यरूशलेम की स्थिति से दुखी है। नहेमायाह की राजा के साथ बहुत अच्छी प्रतिष्ठा थी, क्योंकि राजा ने नहेमायाह से पूछा कि वह इसके बारे में क्या करना चाहता है। नहेमायाह ने उसे वह योजना बताने का साहस कीया था जो परमेश्वर ने उसे दी थी, कि यरूशलेम को वापस लौट जाए और उसका पुनर्निर्माण करे (नहेमायाह 2:1-5)।

चार महीने तक नहेमायाह ने धैर्यपूर्वक प्रार्थना की थी और इसमें परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा की थी। उसने यह जानते हुए प्रार्थना की थी कि यह सब परमेश्वर पर निर्भर करता है, परन्तु उसने भी अपने हिस्से का काम कीया था और योजना बनाई थी कि यरूशलेम में इस काम को करने के लिए क्या आवश्यक होगा। जब राजा ने इस बारे में विवरण मांगा कि उसने यरूशलेम की कैसे सहायता करने का प्रस्ताव दिया, तो नहेमायाह के पास सभी उत्तर थे (नहेमायाह 2:6-8)। वह प्रार्थना में सब्र रखता था, लेकिन उसने योजनाएँ बनाईं ताकि समय आने पर वह आगे बढ़ सके। हमें धैर्यपूर्वक परमेश्वर द्वारा हमारे लिए द्वार खोलने की प्रतीक्षा करनी चाहिए, लेकिन जब वे खुलते हैं तो हमें उनके माध्यम से आगे बढ़ने के लिए तैयार रहना चाहिए। काम करने के लिए हमें आगे की योजना बनानी चाहिए।

एक ईश्वरीय अगुवा वह व्यक्ति होता है जो योजना बनाता है। नहेमायाह राजा के सवालों का जवाब जानता था कि वह कहाँ तक चला जाएगा, उसे किन सामग्रियों और सहायकों की आवश्यकता होगी, यात्रा और काम करने की अनुमति के पत्र आदि। उसने जरूरतों का अनुमान लगाया था और उनकी देखभाल करने की योजना बनाई थी। एक ईश्वरीय अगुवा सिर्फ प्रार्थना नहीं करता, वह योजना भी बनाता है। वह दोनों एक साथ करता है। वह परमेश्वर के समय के लिए धैर्यवान होता है, लेकिन जब समय सही होता है, तो वह आगे बढ़ने के लिए तैयार होता है क्योंकि वह तैयारी के लिए समय का उपयोग कर रहा होता है। उसने कठिनाइयों का अनुमान लगाया और उनके घटित होने से पहले उन्हें दूर करने की योजना बनाई। उदाहरण के लिए, यरूशलेम का पुनर्निर्माण नहीं होने का एक कारण यह था कि पड़ोसी राष्ट्र इसे कमजोर रखना चाहते थे। उन्होंने राजा से कहा था कि यहूदी विद्रोह करने की योजना बना रहे हैं, इसलिए उसने आज्ञा दी कि वे शहर या शहरपनाह का पुनर्निर्माण या सुधार ना करें। नहेमायाह जानता था कि केवल अर्तक्षत्र रजा ही उसके आदेश को बदल सकता है और नहेमायाह को इस बात के प्रमाण की आवश्यकता होगी कि इसे बदल दिया गया है। इसलिए उसने पत्र मांगा। एक ईश्वरीय अगुवा धैर्यपूर्वक भविष्य की योजना बनाता है।

कुछ अगुवा आज कुछ शुरू करने के लिए इतने उत्सुक हैं, वे मुश्किल से इसके बारे में प्रार्थना करते हैं, लेकिन बस इसमें कूद पड़ते हैं और फिर इसे सक्रय करने के लिए संघर्ष करते हैं। अन्य लोग धैर्यपूर्वक प्रार्थना करते हैं और प्रतीक्षा करते हैं , लेकिन जब वे शुरू कर सकते हैं, तो वे ऐसा करने में असमर्थ होते हैं क्योंकि वे आगे बढ़ने के लिए तैयार नहीं होते हैं। उन्होंने पर्याप्त धन की बचत नहीं की है या सही लोगों को प्रशिक्षित नहीं कीया है या नहीं योजना बनाई होती है कि इसे कैसे पूरा कीया जाए। एक ईश्वरीय अगुवे को धैर्यवान होना चाहिए, लेकिन अच्छी योजनाएँ भी बनानी चाहिए।

क्या आप पर्याप्त प्रार्थना और योजना के बिना जल्दी से कुछ नया शुरू करने के दोषी हैं? या अवसर मिलने पर आप हिचकिचाते हैं क्योंकि आप मौका लेने और कुछ नया करने से डरते हैं? क्या आप प्रार्थना

करते हैं और प्रतीक्षा करते हैं, लेकिन योजना बनाने में विफल रहते हैं ताकि जब आप शुरू कर सकें तो आपके पास इसे पूरा करने के लिए आवश्यक संसाधन नहीं होंगे ?

3-एक ईश्वरीय अगुवा सतर्क रहता है

नहेमायाह को यात्रा के लिए तैयार होने में कई महीने लगे और यरूशलेम की यात्रा करने में और महीने लग गए। समस्या के बारे में सुनने के बाद लगभग पूरा एक साल हो गया था कि आखिरकार वह उस जगह पर पहुंच गया जहां वह इसके बारे में कुछ कर सकता था। कुछ लोग शायद अधिक उत्सक थे और तुरंत काम पर जाना चाहते होंगे , लेकिन नहेमायाह ऐसा नहीं था। उसने आराम से यरूशलेम के अगुवों को जानने में समय बिताया (नहेमायाह 2:11-12)।

उसने रात को अकेले बाहर जाकर शहर और शहरपनाह को देखकर वहाँ की स्थिति के बारे में जानकारी इकट्ठी की (नहेमायाह 2:13-16)। उसने इसे रात में कीया ताकि दूसरों को आश्चर्य ना हो कि वह ऐसा क्यों कर रहा था या कि वह जहाँ गया था या जो उसने देखा था उसे प्रभावित करने का प्रयास कीया था। वह कोई भी निर्णय लेने से पहले सारी जानकारी इकट्ठा करना चाहता था जितनी वह कर सकता था। एक निर्णय केवल उतना ही अच्छा होगा जितनी अधिक जानकारी पर आधारित वह लिया गया हो । बहुत बार अगुवा बिना सब तथ्यों के त्वरित निर्णय लेते हैं, जो बाद में केवल यह साबित होता है कि उन्होंने जो निर्णय लिया वह सबसे अच्छा निर्णय नहीं था जो वे ले सकते थे। कभी-कभी हम एक व्यक्ति की बात बाद में लेते हैं ताकि पता चल सके कि इसमें और भी बहुत कुछ शामिल था जिसके बारे में हमें जानकारी नहीं थी। यदि हम किसी व्यक्ति को सभी तथ्यों का जाने बिना हमें प्रभावित करने देते हैं, तो हम बुद्धिमानी के निर्णय नहीं ले सकेंगे । हमें धैर्य रखना चाहिए और पहले सारी जानकारी जुटानी चाहिए। यह उस समय के दौरान होता है जब हम जानकारी इकट्ठा करते हैं कि पवित्र आत्मा चुपचाप हमसे बात करता है और हमें आवश्यक दिशा देता है। हमें उसकी बातों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए, ना कि जल्दी से किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए। एक ईश्वरीय अगुवा सावधान रहता है। वह छलांग लगाने से पहले देखता है।

उस समय के बारे में सोचें जब कभी आपने सभी विवरण नहीं जानते हुए बहुत जल्दी प्रतिक्रिया की हो । आपका रिजल्ट क्या था? क्या आप अक्सर ऐसा करते हैं? क्या आपके पास निर्णय या निर्णयों को रोकने के लिए आवश्यक धैर्य है जब तक कि आपके पास सभी तथ्य नहीं आ जाते हैं ? अपने निर्णयों में अधिक सावधान रहने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

4-एक ईश्वरीय अगुवा जानता है कि कब कार्य करना है

सावधान रहना सही भी और महत्वपूर्ण भी है, लेकिन एक समय ऐसा आता है जब एक अगुवा को कार्य करना चाहिए। जब उसने सारी जानकारी इकट्ठा कर ली, प्रार्थना की, सोचा और योजना बनाई, तब नहेमायाह ने कार्रवाई की। उसने अगुवों और लोगों को आगे बढ़ने और शहर और उसकी शहरपनाह का पुनर्निर्माण करने की चुनौती दी (नहेमायाह 2:17-18)।

यह जानना महत्वपूर्ण है कि कब सावधान रहना है, लेकिन यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि कब कार्रवाई करनी है। कभी-कभी एक अगुवा सब विवरणों को इकट्ठा करने के लिए समय निकाले बिना जल्दी से

आगे बढ़ सकता है। अन्य लोग बहुत देर तक हिचकिचाते रह सकते हैं और कार्य करने का समय आने पर कार्य नहीं करते । दोनों चरम सीमाओं से बचना चाहिए। हम सभी किसी ना किसी चरम पर जाते हैं। मैं और मेरी पत्नी इसके साथ एक दूसरे को संतुलित करते हैं। शायद परमेश्वर ने आपको कोई ऐसा साथी या दोस्त दिया हो जो आपकी भी मदद कर सकता हो ।

इस पर भी ध्यान दीजिए कि कैसे नहेमायाह ने उन्हें कार्य करने के लिए प्रेरित कीया। उसने ना दोष दिया और ना आलोचना की। यह सिर्फ लोगों को हतोत्साहित करता है। उसने उनकी इसके साथ अपनी पहचान बनाई । उसने कहा, "आप देख रहे हैं कि हम किस संकट में हैं... आओ हम इसको फिर से बनाएं ताकि हम फिर से शर्मिंदा ना हों" (नहेमायाह 2:17-18)। एक ईश्वरीय अगुवा लोगों को कार्य करने के लिए प्रेरित करने के लिए उनके साथ आपनी पहचान बनता है, इसलिए कि वे उसका अनुसरण करने की चाहत करें । हमने देखा कि एक अच्छा अगुवा जानता है कि वह कहाँ जा रहा है, जानता है कि वहाँ कैसे पहुँचना है और दूसरों को वहाँ अपने साथ कैसे ले जाना है। नहेमायाह दूसरों को अपने साथ ले जा सकता था क्योंकि वह उनके साथ एक था। वह उनके ऊपर अधिकारी नहीं था जो उन्हें बता रहा था कि क्या करना है। नहेमायाह ने अपने ईश्वर-प्रदत्त दर्शन और शहर के पुनर्निर्माण की योजना को साझा कीया और उन्हें आशा दी कि यह कीया जा सकता है, इसलिए वे उसके पीछे चलने के लिए तैयार थे।

क्या आपके पास सावधानी और कार्रवाई के बीच संतुलन है? उस संतुलन को खोजने में आपकी सहायता करने के लिए परमेश्वर ने आपके जीवन में किसे रखा है? क्या आप उन लोगों के साथ पहचान बना सकते हैं जिन्हें आप सलाह देते हैं, सिखाते हैं या जिनका नेतृत्व करते हैं ताकि वे आप पर भरोसा करें और स्वेच्छा से अनुसरण करें क्योंकि आप उन्हें भविष्य के लिए आशा देते हैं? या आप उन्हें डांटते हैं और आलोचना करते हैं कि जहा वे असफल होते हैं? परमेश्वर आपको कैसे प्रेरित करता है , आशा और प्रोत्साहन के साथ या आलोचना और निंदा के साथ ?

5-एक ईश्वरीय अगुवा प्रतिनिधितव करता है

जब कार्य करने का समय सही हो, तो एक ईश्वरीय अगुवे के पास आगे बढ़ने के लिए योजनाएँ तैयार होनी चाहिए। इन योजनाओं में दूसरों को कार्य में लेना शामिल होना चाहिए। उसे दिशा देनी चाहिए, लेकिन इसे पूरा करने के लिए उसे दूसरों के सहयोग और मदद की जरूरत होती है। उसे समझदारी से काम सौंपना चाहिए, चाहे परियोजना का आकार कुछ भी हो। नहेमायाह ने यही कीया। पूरी शहरपनाह के पुनर्निर्माण के लिए उसने लोगों के विभिन्न समूहों को शहरपनाह के अलग-अलग हिस्सों में नियुक्त कीया और उन्हें इसके पुनर्निर्माण का जिमेदार बनाया (नहेमायाह 3:1-32)। वह यह सब करने में बुद्धिमान था । उसने लोगों को उनके अपने घरों के पास दीवार के हिस्से सौंपे। इस तरह उन्हें काम पर जाने के लिए दूर की यात्रा नहीं करनी पड़ेगी, वे अपना सर्वश्रेष्ठ काम करेंगे क्योंकि वे अपने घरों की रक्षा कर रहे थे, और अगर निर्माण के दौरान कोई हमला होता है तो वे अपने घरों की रक्षा के लिए खड़े होंगे । उन्हें एक अच्छा काम करने के लिए प्रेरित कीया गया था, उन्हें कुछ ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं कीया गया था जिसके बारे में उन्हें कुछ पता नहीं था।

साथ ही, नहेमायाह ने सभी से काम करने की उम्मीद की। जो अगुवा थे या जो अमीर थे, वे आदी थे कि दूसरे उनके लिए काम करें । नहेमायाह ने कहा कि कोई भी काम करने के लिए बहुत अच्छा नहीं था, और सभी के साथ एक जैसा व्यवहार कीया जाता था। कोई भी काम किसी के लिए बहुत छोटा नहीं

होता। उसने खुद काम में मदद करके इसकी एक मिसाल कायम की। उसने लोगों के साथ मिलकर काम कीया।

नहेमायाह ने प्रार्थना करता था और उसे परमेश्वर में बहुत विश्वास था, लेकिन वह यहीं नहीं रुका। उसने आगे की योजना बनाई और उसने काम को व्यवस्थित कीया। उन्होंने दूसरों को काम सौंप दिया। आस्था किसी संगठन और प्रतिनिधिमंडल का विकल्प नहीं है। परमेश्वर एक संगठित परमेश्वर है - अपने आस-पास की दुनिया को देखें और देखें कि सब कुछ एक साथ कितनी अच्छी तरह काम करता है। परमेश्वर जो कुछ भी करता है वह सुनियोजित और सुव्यवस्थित होता है। हमारा काम भी ऐसा ही होना चाहिए।

क्या आप अपनी सेवकाई में काम सौंपने में सक्षम हैं, या क्या आपको लगता है कि आपको सब कुछ खुद ही करने की ज़रूरत है ताकि यह ठीक से हो जाए? क्या आप अपने काम को साझा करने के लिए दूसरों पर भरोसा कर सकते हैं, भले ही वे आपसे अलग तरीके से काम करें? क्या दूसरे कहेंगे कि आप संगठित हैं? क्या आपका समय व्यवस्थित है ताकि आप सभी महत्वपूर्ण काम पहले कर सकें? यदि आप चीजों को व्यवस्थित करने में अच्छे नहीं हैं, तो आप किससे मदद ले सकते हैं जो इसमें मुकमल है?

6-एक ईश्वरीय अगुवा को विरोध का सामना करना पड़ेगा

जब मैं छोटा था, मैं सोचता था कि अगर मैं वह कर रहा था जो परमेश्वर चाहता था और इसे परमेश्वर के तरीके से कर रहा था तो परमेश्वर काम को आशीश देगा , और यह बड़ी सफलता के साथ आगे बढ़ेगा। मैंने जल्द ही पाया कि यह सच नहीं है। मुझे यकीन है कि आपको भी वही चीज़ मिली होगी। वास्तव में, जब हम परमेश्वर की इच्छा परमेश्वर के तरीके से कर रहे होते हैं, तो अक्सर हमारा अधिक विरोध होता है। संसार, शरीर, और शैतान और उसकी सेनाएँ उसका विरोध करते हैं जो कुछ हम भी कर सकते हैं ।

नहेमायाह ने भी इसका अनुभव कीया। सन्बल्लत के नेतृत्व में आस-पास रहने वाले अरबों ने यरूशलेम के पुनर्निर्माण का कड़ा विरोध कीया। वे यहूदियों पर हावी हो गए थे और उनकी टूटी दीवारों का फायदा उठाया करते थे । वे यहूदियों को गरीब करते हुए अमीर बनते गए । जब शहरपनाह पर काम शुरू हुआ, तो उन्होंने निर्माण कर्ताओं का मज़ाक उड़ाया और उन्हें मार डालने और उनके काम को नष्ट करने की धमकी दी (नहेमायाह 4:1-14)। एक ईश्वरीय अगुवा को विरोध और आलोचना को संभालने में सक्षम होना चाहिए। ठठा भी होगा और धमकियां भी मिलेंगी।

नहेमायाह की प्रतिक्रिया क्या थी? उसने भय को हावी नहीं होने दिया, इसके बजाय उसने शांति, सुरक्षा और ज्ञान के लिए दो बार प्रार्थना करता था (नहेमायाह 4:4-5, 9)। जब हम ऐसी बातों का सामना करते हैं तो हमें यह सब प्रार्थना में परमेश्वर के पास ले जाना चाहिए और आगे क्या करना है इसके बारे में उसके प्रोत्साहन और मार्गदर्शन को सुनना चाहिए (याकूब 1:5)। यह उम्मीद ना करें कि परमेश्वर हमेशा उन्हें हटा देगा; इसलिए इसे अपनी एकमात्र प्रार्थना ना बनाएं। नहेमायाह के लिए, परमेश्वर ने विरोध को ना तो रोका और ना हटाया। उसने इसे जारी रहने दिया ताकि लोग उस पर अधिक भरोसा करें और उसकी सुरक्षा और प्रावधान को देखें। वह आज भी हमारे साथ ऐसा ही करता है।

नहेमायाह ने प्रार्थना तो की, परन्तु उसने स्वयं को बचाने के लिए अपने कार्यकर्ताओं को भी हथियारबंद कर दिया (नहेमायाह 4:9)। उसने उन्हें काम करते रहने के लिए कहा, लेकिन उनके साथ हथियार भी ले जाने के लिए कहा (नहेमायाह 4:15-23)। हमें प्रार्थना करनी चाहिए जैसे कि सब कुछ परमेश्वर पर

निर्भर करता है, लेकिन साथ ही काम भी करें जैसे कि सब कुछ हम पर निर्भर करता है। सामान्य ज्ञान का प्रयोग करें और आवश्यकता पड़ने पर अपना बचाव करें, लेकिन वही करते रहें जो परमेश्वर चाहता है कि आप करें। डर या निराशा के आगे ना झुकें। विरोधता आएगी । एक ईश्वरीय अगुवा इसके लिए तैयार रहता है और आगे बढ़ता रहता है।

आप अपनी सेवकाई के विरोध को कैसे संभालते हैं? क्या आप उम्मीद करते हैं कि परमेश्वर हमेशा ऐसा होने से रोकें? क्या आप अपनी सेवकाई और जीवन के हर पहलू के बारे में प्रार्थना करने में विश्वासयोग्य हैं? क्या आप उत्पन्न होने वाली प्रत्येक स्थिति को संभालने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते हैं?

7-एक ईश्वरीय अगुवा साहसी होता है

जब लोग दीवारों के पुनर्निर्माण और संभावित हमले से अपना बचाव करने में व्यस्त थे, फसलों की लापरवाही की गई थी, इसलिए फसल आने पर पर्याप्त भोजन नहीं था। लोग भूखे मर रहे थे और उन्हें खाना नहीं मिल पा रहा था। जिनके पास पैसे थे उन्होंने इसे गरीबों को उधार दिया, लेकिन बहुत अधिक दरों पर, उनका और उनकी भूख का फायदा उठाते हुए। बहुतों को अपने कुछ बच्चों को गुलामी में बेचना पड़ा ताकि पूरा परिवार भूख से ना मरे। इसने नहेमायाह को बहुत परेशान कीया। उसने इस प्रथा को रोकने की प्रतिज्ञा की (नहेमायाह 5:10-13) और उसने इसे कीया।

हम ऐसे समय का सामना करेंगे जब अमीर और शक्तिशाली लोग कमजोर और गरीब का फायदा उठाएंगे। एक धर्मी नेता को उनके लिए खड़ा होना चाहिए जो अपने लिए खड़े नहीं हो सकते। यीशु ने यही कीया, और हमें उसके उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए। स्थिति को संभालने के तरीके में ज्ञान के लिए प्रार्थना करें। सलाह मांगे। इसके बारे में सोचने के लिए समय निकालें। फिर, परमेश्वर की सहायता से, वह करें जो हालातों को ठीक करने के लिए कीया जाना चाहिए।

नहेमायाह ने धनी और शक्तिशाली यहूदियों का सामना कीया और उन्हें वह लौटा देने के मजबूर कीया जो उन्होंने गलत तरीके से ले लिया था। ऐसा करने के लिए साहस की आवश्यकता थी, क्योंकि ये वे लोग थे जिन्होंने शहर को आपने नियंत्रित में कीया हुआ था। नहेमायाह को यरूशलेम में सुधार जारी रखने के लिए उनके समर्थन की आवश्यकता थी। एक ईश्वरीय अगुवा बनने के लिए साहस चाहिए। सही काम करना अक्सर कठिन काम होता है। अमीरों और ताकतवरों में लालच और जुल्म का विरोध करना जरूरी है, लेकिन आसान नहीं। कई अगुवा शांति बनाए रखने के लिए हार मान लेते हैं, लेकिन यह पाप के साथ समझौता है, और परमेश्वर इससे कभी प्रसन्न नहीं होता हैं। हमेशा वही करें जो सही हो, चाहे उसके लिए कोई भी कीमत क्यों ना चुकानी पड़े । यीशु इसकी आज्ञा देता है (मत्ती 25:34-46; याकूब 1:27)।

क्या आपमें असहायों की रक्षा करने और उन पर अत्याचार करने वालों के खिलाफ खड़े होने का साहस है? जब आप वह करते हैं जो यीशु करता था तो आप शत्रु बनाने से आने वाले भय से कैसे निपटेंगे? उस समय के बारे में सोचें जब आपने सथिर होने के बजाय समझौता कीया हो। क्या यह समझौता करने लायक था, सही क्या है? अगली बार आपको क्या करना चाहिए? आप किसको जानते हैं जिसकी आप मदद करना शुरू कर सकते हैं?

8-एक ईश्वरीय अगुवा में सत्यनिष्ठा और नम्रता होती है

नहेमायाह ने ना केवल अमीरों को बताया कि उन्हें क्या करना है, बल्कि उसने उनके अनुसरण के लिए एक मिसाल भी बना। जो वह उनसे मांगता था, वह उससे और भी अधिक करने को तैयार होता था। क्योंकि वह राजा द्वारा इस्राएल का राज्यपाल नियुक्त कीया गया था, उसे अपनी सेवाओं के लिए वेतन प्राप्त करने का अधिकार था। हालांकि, उसने अपने काम के लिए कभी कोई वेतन नहीं लिया। उसने कभी भी अपने पद का इस्तेमाल किसी भी तरह की आर्थिक मदद के लिए नहीं कीया। वास्तवता यह है कि , उसने अपनी मेज पर एक दिन में 200 लोगों को खाना खिलाया और इसके लिए अपने निजी धन से भुगतान कीया (नहेमायाह 5:14-19)।

एक ईश्वरीय अगुवा अपने पद और विशेषाधिकार का लाभ नहीं उठाता। वह इसका इस्तेमाल निजी फायदे के लिए नहीं करता है। वह सच्चा और ईमानदार व्यक्ति होता हैं। उसकी बदनामी से बढकर उसकी प्रतिष्ठा होती है (1 तीमुथियुस 3:2)। नहेमायाह स्वयं को लोगों के सेवक के रूप में देखता था । वह परमेश्वर के राज्य का निर्माण कर रहा था, अपना नहीं।

नहेमायाह अपने पद के महत्व और यरूशलेम और उसकी शहरपनाह के पुनर्निर्माण में जो कुछ भी करने में सक्षम था, उसके महत्व के कारण घमण्ड के आगे झुक सकता था। सब उसका सम्मान करते थे। उसके लिए यह विश्वास करना आसान होता कि वह कोई खास जन है। आज के अगुवओ का भी यही हाल है। परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए ख़सूसी विशेषाधिकारों और आशीषों के कारण, हम यह सोचना शुरू कर सकते हैं कि हमारे बारे में कुछ खास है। अभिमान पादरियों के विरुद्ध शैतान के सबसे प्रभावशाली हथियारों में से एक है (नीतिवचन 16:18)। यह युवा या नए अगुवों के लिए विशेष रूप से खतरनाक है (1 तीमुथियुस 3:6)। अपने लिए सावधान रहें, क्योंकि हममें से कोई भी प्रतिरक्षित(खतरा सम्भालने के लिए अधिक शक्तिशाली) नहीं है। जब हम सोचते हैं कि हम अभिमान द्वारा प्रलोबन दिए जाने से परे हैं, तो हमें इस बात से जागरूक होना चाहिए, क्योंकि ऐसा महसूस करना कर्म में गर्व है!

नहेमायाह नम्र रहा। वह ईमानदार और सहज था: एक ईमानदार व्यक्ति जिसने लोगों की सेवा की और अपने काम के लिए वेतन ना लेकर दूसरों के लिए एक उदाहरण स्थापित कीया। हालांकि, इसका मतलब यह नहीं है कि आज पादरियों को वेतन नहीं लेना चाहिए। नहेमायाह बहुत अमीर था और बिना वेतन लिए अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकता था। हममें से ज्यादातर लोग ऐसा नहीं कर सकते। और भी कई तरीके हैं जिनसे हम प्रभु के लिए बलिदान कर सकते हैं। हमारे लिए नहेमायाह का उदाहरण नम्रता, खराई और सेवा है। लोगों के लिए यह अच्छा है कि वे उन लोगों के साथ साझा करें जिन्होंने उन्हें सिखाया है (गलातियों 6:6)। बाइबल कहती है कि पासबान अपनी मजदूरी का हकदार है (1 तीमुथियुस 5:17-18)। यही एकमात्र तरीका है जिससे हमारे पास सेवक बनने का समय हो सकता है।

अगर परमेश्वर आपको रेटिंग देता होता , तो वह आपकी ईमानदारी और खराई पर आपको क्या अंक देता ? आपकी विनम्रता के बारे में क्या? आपकी सेवा के बारे में क्या? क्या कोई ऐसी जगह है जहां आप सुधार करना शुरू कर सकते हैं

9-एक ईश्वरीय अगुवा अपने लिए परमेश्वर के उद्देश्य पर अपनी नज़र रखता है

नहेमायाह को ना केवल यरूशलेम के भीतर धनी यहूदियों के विरोध का सामना करना पड़ा, बल्कि उन लोगों ने भी जो येरुशलेम के बाहर से उसका विरोध करते थे । जब दीवारों पर हमला करने की उनकी

धमकियां पुनर्निर्माण को नहीं रोका सकी , तो पड़ोसी अन्यजातियों ने नहेमायाह को जन से मारने की कोशिश की। उन्होंने उसे शहरपनाह के बाहर एक जाल में फंसाने का प्रयास कीया जहां वे उसे मार सकते थे (नहेमायाह 6:1-4)। नहेमायाह इस जाल में ना फंसने के लिए अधिक बुद्धिमान था, लेकिन उसे अभी भी अपने जीवन के लिए डरना पड़ा। डर एक ऐसी चीज है जिस से सभी अगुओं को निपटना चाहिए। तीमुथियुस डर गया था और इफिसुस को छोड़ना चाहता था, लेकिन पौलूस ने तीमुथियुस को आपने पहले पत्र में उसे ठहरने के लिए कहा था।

जब उसकी हत्या करने का जाल काम नहीं आया, तो दुश्मनों ने उसके अधिकार को कमजोर करने के लिए बदनामी और झूठे आरोपों का इस्तेमाल करने की कोशिश की। उन्होंने उस पर स्वार्थी उद्देश्यों और झूठी योजनाओं का आरोप लगाया (नहेमायाह 6:5-9)। नहेमायाह इसे प्रार्थना में परमेश्वर के पास ले गया। अफवाहें बहुत खतरनाक और हानिकारक हो सकती हैं। स्रोत छिपा हुआ होता है, इसलिए झूठ को चुनौती नहीं दी जा सकती और सुधारा भी नहीं जा सकता। छोटी-छोटी बातें बड़ी बन जाती हैं। जो कहा गया है वह बड़ा चड़ा कर कहा जाता है , गलत होता है और व्यक्ति को चोट पहुंचाने के लिए बनाया गया होता है। इसे ठीक करना लगभग असंभव होता है। वास्तव में, जितना अधिक हम चुगली को बदलने की कोशिश करते हैं, यह उतनी ही बुरी होती जाती है। हम बस इतना कर सकते हैं कि प्रार्थना करें और इसे परमेश्वर पर छोड़ दें। एक ईश्वरीय जीवन जीए ताकि जो लोग आपके बारे में सच्चाई को देखने के लिए खुले हैं वे इसे देख सकें। चुगली एक ऐसी चीज थी जिसके साथ नहेमायाह को रहना था। यहूदी जो अन्यजातियों से विवाह के संबंध में थे, उसकी शिकायत और आलोचना करते रहे क्योंकि गरीबों और कमजोरों के लिए खड़े होने के कारण उनका उनसे पैसा कमाना बंद हो गया था।

नहेमायाह को हटाने की तीसरी योजना एक पुजारी को रिश्वत देकर नहेम्याह को मंदिर के उस हिस्से में ले जाने की थी जहां केवल याजकों को जाने की अनुमति थी। उसने नहेमायाह को आने के लिए कहा ताकि वह सुरक्षित रहे (नहेमायाह 6:10-15), लेकिन अगर नहेमायाह ने ऐसा कीया होता, तो परमेश्वर ने उसे इतनी घोर अवज्ञा के लिए मार डाला होता (2 शमूएल 6:7)। वे तो यही चाहते थे।

हालाँकि, नहेमायाह ने वहाँ रहने के अपने उद्देश्य पर अपनी नज़र रखी। उसने जीवन के लिए खतरे के डर से आपने आप को निराश नहीं होने दिया या अपना विश्वास ख़त्म नहीं होने दिया। उसने इस बात पर ध्यान केंद्रित कीया कि परमेश्वर उस से क्या चाहता है और वह किसी और चीज को इसमें हस्तक्षेप नहीं करने दिया ।

क्या आप उन जालों से अवगत हैं जो शैतान और दूसरे आपको फँसाने के लिए तैयार करतें हैं? उन पर विजय पाने के लिए जोआवश्यक है क्या आप उसे जानते हैं और करते हैं ? आलोचना और चुगली से आपको सबसे ज्यादा चोट कब लगती है? ऐसे समय से निकलने के लिए आप क्या कर सकते हैं ?

10-एक ईश्वरीय अगुवा एक टीम खिलाडी होता है

जब नहेमायाह पहली बार यरूशलेम पहुंचा, तो उसका ध्यान शहर की शहरपनाह के पुनर्निर्माण पर था। जब वह पूरा हो गया, तो आध्यात्मिक पुनर्निर्माण शुरू होने का समय आ गया था। एज्रा और अन्य लोगों ने नहेमायाह के साथ मिलकर काम कीया था। उसने अकेले सब कुछ करने की कोशिश नहीं की। नहेमायाह राजनीतिक अगुवा था जबकि एज्रा आध्यात्मिक अगुवा था। एज्रा ने लोगों को सिखाया, और एक महान पुनरुत्थान हुआ, जो यहूदियों के बीच पहली बार दर्ज कीया गया था (नहेमायाह 8:4 - 10:39)।

आज भी किसी भी सेवकाई में कार्य मंडली सहिभाग्यता जरूरी है। कोई अकेला आदमी इसे नहीं कर सकता है । हमें दूसरों से मदद की ज़रूरत होती है, और दूसरे ऐसे काम करने में सक्षम होते हैं जिन्हें करने के लिए हमें उपहार में नहीं दिया गया होता है। मूसा को सहायकों की आवश्यकता थी, वैसे ही पौलुस को भी। नए नियम की कलीसियाओं में प्राचीनों की एक मंडली होती थी जो भार को साझा करते थे क्योंकि प्रत्येक वही कीया करता था जो उसे उपहार में दिया गया होता था और करने के लिए प्रशिक्षित कीया गया होता था। हमें भी, दूसरों के साथ कार्यभार साझा करने की आवश्यकता है। पुरुषों में अपनी पत्नी को भी उस समूह में शामिल करें। वह परमेश्वर द्वारा उपहार में दी गई है कि वह उन तरीकों से सेवा करें जिन में आप नहीं कर सकते हैं। वह ज्ञान और अंतर्दृष्टि जोड़ सकती है जो बहुत मददगार हो सकती है।

एज्रा ने परमेश्वर के वचन को सिखाया (नहेमायाह 8:5-6) और परमेश्वर ने इसका उपयोग पुनरुत्थान लाने के लिए कीया। जब तक एज्रा उपदेश देता रहता , तब तक लोग दिन भर खड़े रहते । जब वह इसे पूरा कर लेता , तो वे घर नहीं जाना चाहते थे, लेकिन अगले दिन वही काम करने के लिए रुके रहते थे। परमेश्वर ने उनमें अपने वचन के लिए भूख पैदा की थी। आप जो कुछ भी परमेश्वर के वचन पर करते हैं हमेशा उस पर केंद्रित करें । परमेश्वर के वचन को सिखाना प्रत्येक अगुवे की जिमेदारी है (1 तीमुथियुस 3:2; 2 तीमुथियुस 2:24)।

आप अपनी सेवकाई का भार किसके साथ बाँटते हैं? आप जो काम करते हैं उसमें आपकी मदद करने के लिए आप किसके उपहारों का उपयोग करते हैं? आपकी पत्नी के पास कौन से उपहार हैं जो आपकी मदद करते हैं? क्या आप उसे उनका इस्तेमाल करने देते हैं? क्या आपको अपने विकास के लिए परमेश्वर के वचन को सीखने की भूख है और आप इसे दूसरों के साथ साझा कर सकते हैं? परमेश्वर से मांगे कि वह आपको बाइबल जानने की और इच्छा दे।

11-एक ईश्वरीय अगुवा उन के साथ जो पाप में है, दृढ़ रहता है

दुर्भाग्य से, पुराने नियम में यहूदियों की कहानी इस पुनरुत्थान के साथ समाप्त नहीं होती है। 400 साल की चुप्पी से पहले की आखिरी रिकॉर्ड की गई घटना अच्छी नहीं है। नहेमायाह का बाबुल में राजा से दूर रहने का समय ख़त्म हो गया, और वह बाबुल में अपनी जिम्मेदारियों पर लौट आया । उसका भाई उसके जगह यरूशलेम में राज्यपाल के बन गया । कुछ समय के लिए पुनरुत्थान के बाद चीजें ठीक हो गईं, लेकिन धीरे-धीरे लोग फिर से परमेश्वर से दूर और पाप में चले गए। जब नहेमायाह 11 साल दूर रहने के बाद लौटा, तो उसने पाया कि चीजें बहुत खराब स्थिति में हैं। अन्यजातियों को मंदिर के भंडार कक्षों में सामान बेचने की अनुमति दी गई थीऔर लोगों ने दशमांश देना बंद कर दिया था। वे सब्त नहीं मना रहे थे ताकि वे अधिक काम कर सकें और अधिक पैसा कमा सकें। वे अविश्वासियों के साथ अंतरजाति विवाह कर रहे थे और उनकी आराधना में पापी प्रथाएं शामिल हो रही थी (नहेमायाह 13:4-10)। परमेश्वर ने लोगों को प्रचार करने के लिए मलाकी को भेजा था, और उसने इन पापों को संबोधित कीया लेकिन उन्होंने पश्चाताप नहीं कीया (मलाकी की पुस्तक)।

जब नहेमायाह ने देखा कि हालत कैसे हैं, तो उसने प्रार्थना की, जैसा कि वह हमेशा सबसे पहले कीया करता था। फिर उसने हालातों को ठीक करने और पापी प्रथाओं को ठीक करने के लिए आवश्यक कार्रवाई की (नहेमायाह 13:11-31)। यह देखना उसके लिए हतोत्साहित करने वाला रहा होगा कि

उसकी सारी मेहनत टिकी नहीं रही थी और उसे फिर से करने की जरूरत थी। मुझे मानता हूँ कि परमेश्वर अक्सर हमारे बारे में ऐसा ही महसूस करता हैं!

एक धर्मी नेता को दृढ़ रहना चाहिए, चाहे उसे एक ही काम कितनी बार भी करना पड़े या बदलाव आने में कितना समय लगे। फिर, जब लोग पाप की ओर वापस जाते हैं, तो हमें उन्हें अपने तरीके बदलने और फिर से परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए और भी अधिक समय तक दृढ़ रहना चाहिए। कभी-कभी ऐसा करने के लिए बहुत प्यार और बहुत धैर्य की आवश्यकता होती है, लेकिन यह एक ईश्वरीय अगुवा के लिए एक महत्वपूर्ण गुण है।

जब कोई व्यक्ति जिसे आप ने लंबे समय से सिखाया और प्रशिक्षित कीया है, वह प्रभु से दूर हो जाता है, तो आप कैसे प्रतिक्रिया देते हैं? जब आपका काम कई वर्षों तक बहुत कम या कोई प्रगति नहीं दिखाता है तो आप क्या करते हैं? क्या आप वफादारी से लगे रह सकते हैं और कोई नतीजा ना होने पर भी सेवा करना जारी रख सकते हैं? इस बारे में सोचें कि यीशु आपके साथ कैसे बना रहता है, और उस उदाहरण का अनुसरण करें कि आप दूसरों के साथ कैसे हैं।

हमने नहेमायाह के जीवन से देखा है कि एक ईश्वरीय अगुवा बनने के लिए हमें यह अवश्य करना चाहिए:

1. प्रार्थना

2. धैर्य और योजना बनाना

3. सावधान रहना

4. जानें कि कब कार्य करना है

5. प्रतिनिधि बनाने में सक्षम होना

6. विरोध का सामना करना

7. हिम्मत रखना

8. खराई और नम्रता रखना

9. हमारे लिए जो परमेश्वर के उद्देश्य हैं उन पर नज़र रखना

10. टीम के खिलाड़ी बनना

11. पाप करने वालों के साथ बने रहना

क्या आपके पास ये हैं? अब आपके जीवन में क्या -क्या स्पष्ट हैं? आप में किस किस की कमी है? सुधार शुरू करने के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता है? इन चीजों के बारे में प्रार्थना करें और परमेश्वर से मदद मांगें कि आप इनमें से प्रत्येक को अपने जीवन में पा सकें।

<u>7. यीशु से नेतृत्व के सबक</u>

मरकुस का सुसमाचार पढ़ें

यदि यीशु आपके चर्च में पासबानी कर रहा होता थे, तो वह आपके लोगों की सेवा करने के लिए क्या

करता ? वह क्या करता जो आप पहले से करते होते? वह क्या नहीं करेगा जो आप करते हैं? वह क्या करेगा जो आप नहीं कर रहे हैं? सोचने के लिए ये सभी अच्छे प्रश्न हैं। यीशु सभी बातों में हमारा उदाहरण है, जिसके जैसा हम बनना चाहते हैं। इसमें नेतृत्व शामिल है। यीशु के आलावा कोई बेहतर उदाहरण नहीं है। जैसे-जैसे हम अपने जीवन में मनुष्य रुपी यीशु के समान बनते जाते हैं, वैसे-वैसे हम अगुवा रुपी यीशु के समान होते जाते हैं। कई नेतृत्व सबक हैं जो हम यीशु से सीख सकते हैं। हम मरकुस के सुसमाचार से कुछ को देखेंगे।

1-एक ईश्वरीय अगुवा परमेश्वर की बुलाहट का उत्तर देता है

यीशु वहाँ गया जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला प्रचार कर रहा था और उसके द्वारा बपतिस्मा लिया। परमेश्वर ने यीशु को अपनी सेवकाई शुरू करने के लिए बुलाया, और यीशु ने आज्ञा का पालन कीया। इस इच्छुक प्रतिक्रिया ने परमेश्वर को बहुत प्रसन्न कीया (मरकुस 1:11)। परमेश्वर के लिए हमारी सेवा भी उसकी बुलाहट का जवाब देने से शुरू होती है। वह हमारे दिल में उसकी सेवा करने की इच्छा डालता है और दूसरों को भी ऐसा करने में मदद करने की इच्छा डालता है। एक पास्टर या अगुवा होना कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे हम करने निर्णय लेते हैं या चुनाव करतें है , बल्कि कुछ ऐसा है जिसे परमेश्वर हमारे हृदय में डालता है। जब चीजें कठिन हो जाती हैं, तब भी उसका अनुसरण करना और विश्वासयोग्य बने रहना हमारा इरादा होता है। हम सेवा करते हैं क्योंकि उसने हमें सेवा करने के लिए बुलाया है। यह हम उसके लिए करते हैं, अपने लिए नहीं।

क्या आपको याद है जब परमेश्वर ने पहली बार आपके हृदय में सेवकाई में उसकी सेवा करने की इच्छा डाली थी? यह कैसा था? आपने इसे कैसी प्रतिक्रिया दी? उसका धन्यवाद करें कि उस ने आप को बुलाया है । क्या आप उसकी बुलाहट के प्रति और उसको अनुसरण करने की अपनी प्रतिबद्धता के प्रति वफादार रहे हैं? उस बुलाहट को पूरा करने में आपकी मदद करने के लिए उससे प्रार्थना करें । आप जो कुछ भी करते हैं उसमें विश्वासपूर्वक उसकी सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध रहें। उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जिन्हें आप जानते हैं कि उनको बुलाया गया है लेकिन वे उस की सेवा नहीं कर रहे हैं।

2-एक ईश्वरीय अगुवा खुद को सेवा के लिए तैयार करता है

यीशु तुरंत 40 दिन उपवास करने और परमेश्वर की सेवा करने के लिए स्वयं को तैयार करने के लिए प्रार्थना करने के लिए जंगल में चला गया (मरकुस 1:12-13)। उसे परमेश्वर को सुनने की आवश्यकता

थी ताकि वह वही करे जो परमेश्वर चाहता था, और वो करने के लिए उसको परमेश्वर की शक्ति और सुरक्षा की आवश्यकता थी। याद रखें, यीशु ने अपने ईश्वरत्व के उपयोग को अलग रखा ताकि वह एक मनुष्य के रूप में जीवित रहे और कार्य करे (फिलिप्पियों 2:5-7)। वह अभी भी परमेश्वर था, लेकिन उसने एक मनुष्य के रूप में हर चीज का सामना कीया, जैसा हम करते । इस तरह उसने दिखाया कि एक सिद्ध जीवन जीया जा सकता है (1 पतरस 2:22; 1 यूहन्ना 3:5)। वह यह भी जानता है कि हम किन परिस्थितियों से गुज़रते हैं, क्योंकि वह आप भी इन में से होकर गुज़रा है (इब्रानियों 2:18; 9:35; 1 पतरस 4:1-10)।

इसका अर्थ यह भी था कि उसने जो कुछ भी कीया उसमें उसे परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता थी। इसलिए वह पूरी रात जाग कर प्रार्थना करता रहा (लूका 6:12)। उसे स्वयं को सेवा के लिए तैयार करने की आवश्यकता थी, ठीक वैसे ही जैसे हमें करना चाहिए। उसने अपनी सेवकाई की शुरुआत में और कई बार ऐसा कीया, खासकर जब कुछ नया या कठिन सामना करना पड़ रहा होता था । उन बारह को चुनने से पहले, वह पूरी रात प्रार्थना करता रहा (लूका 6:12-13), और गिरफ्तार होने और क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले वह प्रार्थना करने के लिए गतसमनी गया (मत्ती 26:36-56)। जब उसने यूहन्ना की मृत्यु के बारे में सुना, तो वह यह सोचने के लिए एकांत स्थान पर गया कि उसके लिए इसका क्या अर्थ है (मत्ती 14:13)।

जब हम अपनी सेवकाई शुरू करते हैं, तो हमें खुद को आध्यात्मिक और मानसिक रूप से तैयार करना महत्वपूर्ण है, और इसे पूरे समय करते रहना चाहिए । कुछ अगुवा बिना सीखे और प्रार्थना किये बस दौड़ पड़ते हैं और काम करना शुरू कर देते हैं। मेरे द्वारा लिखी गई इस तरह की किताबें और अन्य किताबें पढ़ना शुरुआत में खुद को तैयार करने और उस तैयारी को जारी रखने का एक अच्छा तरीका है। आपकी उम्र कोई भी हो, आपको खुद को तैयार करते रहने की जरूरत है। जब मैं लगभग 60 वर्ष का था, तो मैं और अधिक सीखने के लिए और अपने शेष वर्षों के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में आपने आप को सक्षम रखने के लिए बाइबल कॉलेज वापस गया। यह अच्छी तरह से बिताया गया समय था। हो सकता है कि आप बाइबल कॉलेज या सेमिनरी में नहीं जा सकते हैं, लेकिन आप अपने दिल को प्रार्थना के माध्यम से और अपने दिमाग को बाइबल पढ़ने के माध्यम से तैयार कर सकते हैं। आप दूसरों से, किताबों से या ऑनलाइन सीख सकते हैं। हमारे पास पादरियों और चर्च के अगुओं के लिए एक उत्कृष्ट वेब साइट है (http://india.christiantrainingonline.org/)।

जब परमेश्वर ने पहली बार आपको सेवकाई के लिए बुलाया तो आप ने स्वयं को सेवा के लिए तैयार करने के लिए क्या कीया? तब से आप तैयार रहने और सीखने और बढ़ने के लिए क्या कर रहे हैं? जब आप कोई नया या कठिन काम शुरू करते हैं, तो क्या आप प्रार्थना के द्वारा खुद को तैयार करने के लिए समय निकालते हैं और यह सीखते हुए कि आप इसमें क्या मदद कर सकते हैं? यदि यीशु ने 40 दिनों का समय लिया जब उसके पास केवल 3 वर्ष की सेवा करने के लिए था, तो यह निश्चित रूप से हमारे लिए भी महत्वपूर्ण है!

3-एक ईश्वरीय अगुवा के पास एक मजबूत भक्तिपूर्ण जीवन होना चाहिए

जबकि हमें अपनी सेवकाई के दौरान विशेष चुनौतियों के लिए तैयारी के समय की आवश्यकता होती है, हमारे पास प्रार्थना और बाइबल अध्ययन का एक मजबूत दैनिक भक्तिपूर्ण जीवन भी होना चाहिए। यीशु सुबह जल्दी उठकर अकेले प्रार्थना करने के लिए समय निकालता था (मरकुस 1:35)। वह कितना भी

व्यस्त होता , और कितना भी काम उसे करना होता और कितने भी लोगों को उसकी आवश्यकता होती यीशु ने फिर भी किसी और काम /बात से पहले अपने स्वर्गीय पिता के साथ समय बिताया करता था । वह इसे नियमित रूप से करता, नाकि कभी-कभार (मत्ती 13:1; 4:13, 42; 15:29; मरकुस 1:35; 6:46; 9:2; लूका 6:12; 9:10, 28) ; लूका 4:42; आदि)। यदि यीशु को परमेश्वर के साथ अकेले समय बिताने की आवश्यकता थी, तो निश्चित रूप से हमें भी है।

बखत सिंह के जीवन से मैंने जो सबक सीखा, उनमें से एक था प्रार्थना का महत्व। वह लंबे समय तक प्रार्थना करता रहता , कभी-कभी पूरी रात। उसे निश्चित रूप से यह जानना आवश्यक होता था कि परमेश्वर उससे क्या कराना चाहता है या क्या प्रचार कराना चाहता था । यह लोगों के बीच एक सामान्य विशेषता प्रतीत होती है जिनका उपयोग परमेश्वर ने बहुत अच्छे तरीके से कीया है।

परमेश्वर के साथ बिताया गया यह समय परमेश्वर को यह बताने में व्यतीत करनानहीं होता है कि हमें उससे क्या कराने की आवश्यकता है, बल्कि यह सुनने में व्यतीत करने में कि वह हमसे क्या कहता है। आखिरकार, उसने जो हमसे जो कहना होता है, वह उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण होता है जो हम उसको बता सकते हैं! वह पहले से ही जानता है कि हम क्या कहेंगे। हम उसे सुन सकते हैं जब हम शांत होते हैं और उसकी पवित्र आत्मा के प्रति संवेदनशील होते हैं जो हमसे बात कर रहा होता है; जब हम उसके वचन को पढ़ते हैं और उस पर मनन करते हैं जो वह कहता है। यह किसी भी समय या किसी भी स्थान पर हो सकता है, लेकिन हम तभी सुनते हैं जब हम चुप होते हैं और सुन रहे होते हैं। कृपया सुनिश्चित करें कि आप ने अपना सेल फ़ोन बंद कर दिया है या आपके पास नहीं है। परमेश्वर जो कहना चाहता है उसे सुनना किसी भी फोन कॉल से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है!

आप परमेश्वर को सुनने में कितना समय लगाते हैं? जब आप प्रार्थना करते हैं, तो क्या आप सुनने से ज्यादा बोलते हैं? क्या ऐसा हो सकता है कि ऐसा लगता है कि परमेश्वर आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं दे रहा है क्योंकि आप अपना प्रार्थना समय उसे यह बताने में व्यतीत करते हैं कि उसे क्या करना है, यह जानने के बजाय कि वह आप से क्या कराना चाहता है? क्या आपने सीखा है कि जब आप प्रार्थना करते हैं तो उसकी आवाज कैसे सुनते हैं और जब आप उसके वचन पर ध्यान करते हैं तो उसकी आत्मा को सुनते हैं? आपके लिए परमेश्वर के साथ निर्बाध समय बिताने का सबसे अच्छा समय कब और स्थान कहाँ होता है?

4-एक ईश्वरीय अगुवा दूसरों को चेला बनने की चुनौती देता है

यीशु ने लोगों को अपने पापों से पश्चाताप करने, और उसके मुफ्त उपहार को स्वीकार करने के लिए और उद्धार के लिए बुलाया। जिन्होंने उत्तर दिया और उसका अनुसरण कीया, उसने फिर उनको शिष्यत्व की चुनौती दी (मरकुस 1:17; 2:14)। उसने उनके खुद से पहले उसे रखने को , उसके लिए जीने को , उसकी सेवा करने को और उनकी सभी योजनाओं को अपने लिए त्यागने को कहा। कुछ ने अभी भी अपने जीविका /धंधा खेत्र में काम कीया है, दूसरों ने सेवा के लिए अधिक समय देने के लिए छोड़ दिया है। उन लोगों के इस समूह में से जो अधिक सीखना और आध्यात्मिक रूप से विकसित होना चाहते थे, उन्होंने बाद में कुछ को अपने बारह के आंतरिक समूह का हिस्सा बनने के लिए चुना। परन्तु पहले उसने उन्हें चुनौती दी कि वे उद्धार पर ना रुकें, परन्तु अपने विश्वास में बढ़ें और यीशु के लिए जीवित रहें (2 पतरस 3:18)।

आप किसे शिष्य बनने के लिए बुला रहे हैं जो यीशु का अनुसरण करते हैं और उसके लिए जीते हैं? जब कोई यीशु के पास उद्धार के लिए आता है, तो क्या आप यीशु और मसीही जीवन के बारे में अधिक सीखने में उनकी मदद करने के लिए उनके साथ काम करते हैं? क्या आप उनका अनुसरण करते हैं, उन्हें प्रोत्साहित करते हैं, उनके साथ और उनके लिए प्रार्थना करते हैं, और उन्हें प्रार्थना और बाइबल अध्ययन की बुनियादी बातों में प्रशिक्षित करते हैं?

5-एक ईश्वरीय अगुवा दूसरों को तालीम देता है

अपनी सेवकाई के पहले डेढ़ साल तक, यीशु ने लोगों को बताया कि वह कौन था और उन्हें राज्य की पेशकश की। उसने यह साबित करने के लिए कि वह परमेश्वर की ओर से है चमत्कार किए। बात फैल गई, और जल्द ही सभी ने उसके दावों के बारे में सुना । कुछ ने विश्वास कीया और पालन कीया। लेकिन धार्मिक नेताओं सहित, अधिकांश ने उसे अस्वीकार कर दिया। इसलिए अपनी सेवकाई के अंतिम डेढ़ वर्ष के लिए, उसने अपने अनुयायियों के साथ अधिक समय बिताया और भीड़ के साथ कम समय बिताया, उन लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए दृष्टान्तों और शिक्षा के समय का उपयोग कीया जिन्होंने उसके शिष्य बनने और उसका अनुसरण करने के निमंत्रण का प्रतिउतर दिया था (मरकुस 3: 14-15)। उसने उन्हें प्रशिक्षित कीया ताकि वे इसके बदले में दूसरों को प्रशिक्षित कर सकें (2 तीमुथियुस 2:2)। फिर यीशु के पुनरुत्थान के बाद, वे उस कार्य को करने के लिए तैयार थे जिसे उसने शुरू कीया था।

यीशु ने उन्हें परमेश्वर का वचन सिखाया और कि यह कैसे उनके जीवन पर लागू होता है। उसने उन्हें अपनी इच्छा के बजाय परमेश्वर की इच्छा को जानने और करने का महत्व दिखाया। उसने उन्हें वचन और उदाहरण के द्वारा सिखाया, और फिर उन्हें अभ्यास करने और अनुभव से सीखने के लिए बाहर भेजा (मरकुस 6:7)। सुसमाचार का प्रचार कीया जाना महत्वपूर्ण है, लेकिन उतना ही महत्वपूर्ण है उन्हें प्रशिक्षित करना जो विश्वास करते हैं ताकि वे आध्यात्मिक रूप से विकसित हों और यीशु के लिए जी सकें। इस तरह वे और भी अधिक लोगों को प्रचार करने के लिए उन तक पहुँच सकते हैं।

यीशु हर किसी शिष्य को सिखाता जो उसकी निकटता में बढ़ना चाहता था: पुरुष, महिलाएं, जवांन और बच्चे। उसका दिल उन लोगों पर चला जाता जिन्हें वह प्यार करता था, और वह धैर्यपूर्वक अपना जीवन उनमें उंडेल देता। उसने उन्हें सिखाया कि कैसे प्रार्थना करें, कैसे प्रलोभन का विरोध करें, कैसे एक दूसरे के साथ व्यवहार करें, और कैसे उस पर भरोसा करें। वह उपवास, उत्पीड़न, मूल्यों और भौतिक संपत्ति के बारे में चिंता ना करने के बारे में बात करता था । उसने उन्हें दिखाया कि कैसे अपने संदेश को फैलाना है, और फिर उन्हें स्वयं इसे करने के लिए बाहर भेज दिया। उसका सारा जीवन अनुयायियों जीतने के बाद उनको प्रशिक्षित करने के लिए था।

आप जो काम कर रहे हैं उसे आगे बढ़ाने के लिए आप किसे प्रशिक्षण दे रहे हैं? आप किसकी तैयारी कर रहे हैं ताकि वह खुद ही सेवकाई में जा सके? जिनकी आप सेवकाई करते हैं उनके विश्वास में बढ़ने के लिए आप उन लोगों की मदद करने के लिए क्या कर रहे हैं? क्या आपमें अपने लोगों के लिए धैर्य और प्रेम है? जैसे आप उनके साथ कैसा व्यवहार करते हैं क्या यह दिखाई देता है? यदि आप यीशु की तरह एक अगुवा बनते हैं तो यह महत्वपूर्ण है।

6-एक ईश्वरीय अगुवा आराम करने के लिए समय लेता है

यीशु से ज्यादा व्यस्त कोई नहीं था। उसके पास अपना संदेश फैलाने और दूसरों को ऐसा करने के लिए प्रशिक्षित करने के लिए 3 साल का समय था। कोई अन्य योजना नहीं थी। फिर भी वह अक्सर आराम करने और अपने सबसे करीबी लोगों के साथ दूर जाने के लिए समय निकालता था (मरकुस 6:31)। जब उसने काम कीया, तो यीशु ने कड़ी मेहनत की। लेकिन वह हमेशा काम नहीं कर रहा होता था। वह जानता था कि सभी को आराम करने के लिए समय चाहिए। यही कारण है कि परमेश्वर ने हम सभी को बनाया और आज्ञा दी है कि प्रत्येक सात दिनों में सबाथ दिन का एक विश्राम दिन हो (निर्गमन 20:8-11)। 5,000 आदमियों को भोजन कराने के बाद, यीशु इस सब के तनाव से दूर होने के लिए अकेले चले गए (मत्ती 14:23)।

यह एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है जिसे यीशु ने अपने अनुयायियों को सिखाया था। यीशु के स्वर्ग में लौटने के बाद, यहुना शिष्य इफिसुस में रहता था, और यहाँ से उसने कई चर्चों को पढ़ाता था और उनका नेतृत्व कीया करता था , लेकिन उसने कबूतरों को भी एक शौक के रूप में पाला। एक दिन किसी ने सवाल कीया कि जब करने के लिए इतना काम है तो अपनी खुशी के लिए इतना समय क्यों बिताएं। यहुना ने वह धनुष लिया जिसे वह आदमी ले जा रहा था और पूछा कि इसकी तार ढीली क्यों थी और कस्सी हुई क्यों नहीं थी। उस आदमी ने कहा कि जब वह इसका इस्तेमाल नहीं कर रहा होता है , तो उस समय अगर वह इसे ढीला नहीं करेगा, तो जरूरत पड़ने पर धनुष अपनी शक्ति खो चूका होगा । यहुना ने कहा कि इसलिए उसने भी आराम करने के लिए समय निकाला,है ताकि समय आने पर वह बेहतर तरीके से काम कर सके । परमेश्वर हमसे हर समय काम पर रहने की उम्मीद नहीं करता है, वह हमसे आराम करने और जीवन का आनंद लेने की उम्मीद करता है (सभोपदेशक 3:1-8)। हमें अपने शरीर और स्वास्थ्य के अच्छे भण्डारी होना चाहिए, और इसका अर्थ है आराम करने और जीवन का आनंद लेने के लिए दूर जाना। यह भी महत्वपूर्ण है कि हम इन समयों का उपयोग अपने परिवार के साथ उन चीजों को करने में करें जो उन्हें पसंद हैं और उनके साथ में मौज व आनंद करें ।

कई बार यदि हम आराम करते हैं और अपने या अपने परिवार के लिए समय निकालते हैं हम मसीही होने के नाते आपने आप को दोषी महसूस करते हैं , फिर भी यह हमारे भविष्य की भलाई के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है। मुझे दौड़ना हमेशा से पसंद रहा है और मैं छोटी दौड़ों के साथ-साथ कई मील की दौड़ में भी दौड़ा हूं। छोटी दौड़ में मैं जितनी तेजी से जा सकता हूं, दौड़ता हूं, लेकिन अगर मैं लंबी दौड़ में उस तरह से शुरू करता हूँ तो मैं कभी दौड़ पूरी नहीं कर सकता। मुझे अपने आप को गति देनी चाहिए ताकि मेरे पास अंत में ऊर्जा बची रहे। मुझे धीमी गति से जाना चाहिए ताकि मैं जीवन भर लगातार बना रह सकूं। सेवकाई में भी ऐसा ही है। सप्ताह के हर दिन कड़ी मेहनत करने का मतलब यह हो सकता है कि हम कुछ समय के लिए बहुत कुछ हासिल कर लें, लेकिन हम इसे बरकरार नहीं रख पाएंगे। हमारे स्वास्थ्य और हमारे रिश्तों को नुकसान होगा। हम चलते रहने के लिए ऊर्जा खो देंगे। एक अच्छा धावक जानता है कि अंत होने से पहले रुके बिना कम से कम समय में दूरी तय करने के लिए कितनी तेजी से दौड़ना होता है । एक अच्छे अगुवा के साथ भी ऐसा ही होता है।

क्या आप अपने आस-पास के लोगों के लिए इस प्रकार का एक अच्छा उदाहरण बनते हैं जो कड़ी मेहनत करता हो लेकिन आराम करने के लिए भी समय निकलता है? क्या आपके पास सप्ताह में एक दिन ऐसा होता है जब आप अपनी सेवकाई में काम नहीं करते बल्कि अपने परिवार के साथ बिताते हैं या अपनी पसंद की चीज़ें करते हैं? आप आराम करने के लिए क्या करते हो? क्या आपके पास कुछ ऐसा है जिसका आप आनंद लेते हैं जैसे यहुना ने कबूतरों को पला था ? क्या परमेश्वर कहेगा कि आप उसकी आज्ञा का

पालन प्रत्येक सप्ताह में एक दिन के विश्राम के लिए कर रहे हैं? अगर नहीं, तो उसकी आज्ञा मानने के लिए आप अभी से क्या करना शुरू कर सकते हैं? यह कोई भी दिन हो सकता है, क्योंकि रविवार को पादरी आराम नहीं कर सकते। यह दिन उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि आप सप्ताह में एक दिन आराम के सिद्धांत का पालन करते हैं।

7-एक ईश्वरीय अगुवा को एक सेवक होना/बनना अन्वारिया है

यह आखिरी है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण सबक है जो हम यीशु से सीखते हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम एक सेवक बनें (मरकुस 9:35; 10:42-45; यूहन्ना 13:1-17; मत्ती 20:25-26)। दासता किसी क्रिया से बढ़कर होती है - यह एक विनम्र हृदय के दृष्टिकोण से शुरू होती है। यीशु ने मनुष्य बनने के लिए स्वयं को दीन कीया और हमारे लिए मर कर हमारी सेवा की (फिलिप्पियों 2:8)।

यीशु की तरह बनने में हमारी सबसे बड़ी कठिनाइयों में से जो एक है वो है आपने आत्म-केंद्रितता और स्वार्थ के साथ निपटना । हम पहले अपने बारे में सोचते हैं। मेरा क्या बनता है? मैं किस लायक हूं? मेरे साथ किसने अन्याय कीया है? मुझे कौन सी चीज खुश कर देती है?

सबसे अच्छे अगुवा सबसे पहले दास होते हैं। सेना ऐसे पुरुषों की तलाश करती है जो आदेश देने वाले अधिकारी बनने से पहले आदेश ले सकें। कोई भी यीशु के लिए एक अच्छा अगुवा नहीं हो सकता जब तक कि वह पहली बार यीशु का एक अच्छा अनुयायी बनना नहीं सीखता (मत्ती 16:24)। परमेश्वर हमारे स्वयं के पहले आना चाहिए, सेवा कराने से पहले सेवा करनी आनी चाहिए (मत्ती 6:24; लूका 16:13)।

ऐसे व्यक्ति की तलाश ना करें जो नेतृत्व की स्थिति में रखा जा सके। इसके बजाय, पहले किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश करें जो सेवा कर सके। वे सबसे अच्छे अगुवा बनते हैं। कलीसिया के अगुवों के लिए परमेश्वर की उमीदों में दूसरों की सेवा करने के बारे में बहुत कुछ है, परन्तु नेतृत्व करने में सक्षम होने के बारे में कुछ भी नहीं है (1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:5-9; 1 पतरस 5:1-4)। बाइबल में "अगुवा " शब्द 6 बारआता है, लेकिन "दास" 900 बार! यीशु ने अपने अनुयायियों को नेतृत्व करना नहीं सिखाया, लेकिन उसने उन्हें अनुसरण करना सिखाने में काफी समय बिताया। यीशु ने पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना को अगुवा बनने के लिए नहीं, बल्कि उसके अनुयायी बनने के लिए आमंत्रित कीया। नहेमायाह, मूसा, पौलूस, दाऊद , एस्तेर, पतरस , गिदोन, यशायाह, युसूफ और अन्य जैसे : बाइबल में सबसे अच्छे नेताओं ने नेतृत्व करने करने की तलाश नहीं की बल्कि सेवा करने और अनुसरण करने की।

एक ईश्वरीय अगुवे को दूसरों की सेवा में महानता प्राप्त करने के अपने व्यक्तिगत अधिकारों का त्याग करना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे यीशु ने हमारे लिए कीया था। हम सभी को सेवक बनना है, और शायद हम सब कहेंगे कि हम नौकर हैं। लेकिन, जब कोई हमसे अपने नौकर की तरह व्यवहार करता है तो हम कैसी प्रतिक्रिया दिखाते हैं? क्या हमारा अभिमान बढ़ता है, या हम उनकी सेवा करने के लिए जो कर सकते हैं करते हैं?

यीशु के लिएअगुवों को दूसरों के जीवन में निर्माण करना होता है। बहुत बार हम दूसरों से उम्मीद करते हैं कि वे हमारी सेवकाई या कलीसिया का निर्माण करें, बजाय इसके कि हम किसी भी तरह से उनकी मदद करने के लिए उपलब्ध हों। हम एक स्पोर्ट्स टीम के कोच की तरह हैं। खिलाड़ियों की हर संभव मदद करने के लिए कोच मौजूद होता है। खिलाड़ी कोच की प्रतिष्ठा बनाने के लिए नहीं होते हैं। यह

पुरुषों के लिए अपने परिवारों के साथ पेश आने के समान है। परमेश्वर हमें हमारी पत्नियों और बच्चों की सेवा करने के लिए नेतृत्व में रखता है, ना कि उन से हमारी सेवा कराने के लिए। अगर हम यीशु की तरह नेतृत्व करना चाहते हैं, तो हमें यीशु की तरह बनना होगा।

क्या आपका परिवार कहेगा कि आप एक ऐसे सेवक हैं जो अपने बारे में सोचने से पहले उनके लिए सबसे अच्छा काम करता है? या वे कहेंगे कि आप खुद को पहले रखते हैं और उम्मीद करते हैं कि वे आपकी सेवा करेंगे? क्या परमेश्वर कहेगा कि आप एक सेवक रुपी अगुवा हैं? दूसरों की सेवा करना आपके लिए सबसे कठिन कब होता है? एक बेहतर सेवक बनने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

इसके तुरंत बाद, यीशु अपने आप को राजा और मसीहा घोषित करते हुए गधे पर सवार होकर शहर में गया। उसे अस्वीकार कर दिया गया और सूली पर चढ़ा दिया गया, फिर वह जीवित हो गया और स्वर्ग पर चढ़ गया। उसकी सेवकाई और प्रशिक्षण हो चुका था। अब उन लोगों के लिए समय था जो उसका अनुसरण करते थे कि वह उसकी सेवकाई को जारी रखते। उन्होंने बस यही कीया। उन्होंने दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रशिक्षित करना शुरू कर दिया। इसके बाद उन्होंने काम संभाला और दूसरी पीढ़ी को प्रशिक्षित कीया। इस तरह, यह आज हम तक पहुंच गया। अब हम वे अगुवे हैं जिन्हें परमेश्वर ने दूसरों को भी आगे बढ़ने के लिए प्रशिक्षण देते हुए अपने संदेश को फैलाने के लिए प्रशिक्षित करने और उपयोग करने के लिए चुना है। अब हमारा समय है, हमारी बारी है। आइए हम उसकी सेवा करें और उसकी तरह नेतृत्व करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें!

हमने यीशु के जीवन से देखा है कि एक ईश्वरीय अगुवा बनने के लिए हमें अवश्य ही

1. भगवान की पुकार का उत्तर देना है

2. सेवा करने के लिए खुद को तैयार करना है

3. एक मजबूत भक्ति जीवन बनाना है

4. चेला बनने के लिए दूसरों को चुनौती देनी है

5. दूसरों को प्रशिक्षित करना है

6. आराम करने के लिए समय निकालना है

7. नौकर बनना है

क्या आपके पास ये हैं? अब आपके जीवन में क्या -क्या स्पष्ट हैं? आप में किस किस चीज की कमी है? सुधार शुरू करने के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता है? इन चीजों के बारे में प्रार्थना करें और परमेश्वर से मदद मांगें कि आप इनमें से प्रत्येक को अपने जीवन में पा सकें ।

8. पतरस से नेतृत्व के सबक

पढ़ें 1 और 2 पतरस

शमौन पतरस चेलों का अगुवा था (मत्ती 9:35-10:4; मरकुस 6:6-9; लूका 9:1-2)। मूल रूप से शमौन नाम था , यीशु ने अपनी अंतिम शक्ति और स्थिरता का वर्णन करने के लिए इसे पतरस में बदल दिया

(मत्ती 16:18; मरकुस 3:16; लूका 6:14; यूहन्ना 1:42)। वह एक बहुत ही मिलनसार, आलग दिखने वाला , अधिक बात करने वाला व्यक्ति था जो सभी को पसंद करता था और चाहता था कि हर कोई उसे पसंद करे। दुर्भाग्य से, बेशक , उनके पास अक्सर बहुत अधिक आत्म-अनुशासन बल नहीं होता था। वह यीशु से अपने भाई अन्द्रियास के माध्यम से मिला जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का चेला था (यूहन्ना 1:40-41)। यीशु ने उसे अपने मछली पकड़ने के जाल को छोड़ने और पूरे समय उसके पीछे चलने की चुनौती दी (मत्ती 4:13-22; मरकुस 1:16-20; लूका 4:31; 5:1-11)। पतरस स्वाभाविक रूप में एक अगुवा था , लेकिन केवल उनके उत्सुकता भरे व्यक्तित्व के कारण। उसे यह सीखने में कुछ समय लगा कि कैसे एक ईश्वरीय अगुवा बनना है। प्रारंभिक चर्च में सबसे महान नेताओं में से एक बनने में मदद करने के लिए यीशु ने उसकी गलतियों के माध्यम से उसके साथ धैर्यपूर्वक काम कीया। अगर हम उसे ऐसा करने देंगे तो वह हमारे साथ भी ऐसा ही करेगा।

1-एक ईश्वरीय अगुवा को एक ईश्वरीय पत्नी की आवश्यकता होती है

जबकि कुछ ऐसे भी रहे हैं जो बिना पत्नी के ईश्वरीय अगुवे बने हैं (उदाहरण के लिए मूसा, पौलूस और यीशु), एक धर्मी पत्नी के माध्यम से निश्चित रूप से मदद मिलती है! पतरस पत्नी ने उसके साथ यात्रा करती थी (1 कुरिन्थियों 9:5) और यहाँ तक कि उसके साथ शहीद भी हो गई थी। यीशु की सेवकाई के दौरान उसने अपने घर में अपनी बीमार माँ की देखभाल करती थी। यीशु के पहले चमत्कारों में से एक था एक महिला को चंगा करना (मत्ती 8:14-15; मरकुस 1:29-31; लूका 4:38-39)। पतरस ने बाद में आपने पति होने के महत्व के बारे में लिखा कि वह अपनी पत्नी के प्रति विचारशील और समझदार है (1 पतरस 3:7)। किसी के पास एक धर्मी पत्नी का होना परमेश्वर की ओर से एक महान आशीष है (नीतिवचन 31)। इसका अर्थ है कि हमें अपनी पत्नियों से प्रेम करना चाहिए जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम कीया और उसके लिए बलिदान करने और यहां तक कि मरने के लिए भी तैयार रहना चाहिए जैसा उसने हमारे लिए कीया (इफिसियों 5)। हमारी पत्नियां हमारी पहली सेवकाई हैं, हमारी प्रथम भेड़ हैं। उसकी जरूरतों को पूरा करना चर्च के लोगों से मिलने से ज्यादा महत्वपूर्ण है।

क्या आपकी पत्नी कहेगी कि वह आपके लिए आपकी सेवकाई से अधिक महत्वपूर्ण है? क्या वह कहेगी कि वह आपके प्यार और उसके लिए बलिदान के कारण यीशु के प्यार और उसके बलिदान को बेहतर ढंग से समझती है? यदि आपके पास एक विश्वासयोग्य, ईश्वरीय पत्नी है, तो क्या आप उसके लिए और उसके साथ प्रतिदिन प्रार्थना करते हैं? यह करना बहुत जरूरी है।

2-एक ईश्वरीय अगुवा ईश्वर को अपना विश्वास फ़ैलाने देता है

पृथ्वी पर अपने पूरे समय के दौरान, यीशु ने पतरस के विश्वास को चुनौती दी ताकि वह और मजबूत हो जाए। उसने पतरस को ऐसे पदों पर रखा जहाँ उसे यीशु को अपने जीवन में कार्य करते देखने और विश्वास करने की आवश्यकता थी। सारी रात मछली पकड़ने और कुछ ना पकड़ने के बाद, यीशु ने उसे वापस बाहर जाने और फिर से कोशिश करने के लिए कहा। उसने ऐसा कीया, और उसने बड़ी मात्रा में मछलियाँ पकड़ीं (लूका 5:4-7)। यीशु ने पतरस के युवा विश्वास को मज़बूत करने के लिए ऐसा कीया। जैसे-जैसे पतरस बड़ा होता गया, परीक्षाएँ कठिन होती गईं, और जब उसका जाल खाली भी आता तब भी उसने भरोसा करना और उसकी आज्ञा का पालन करना सीखा!

यीशु ने बाद में पतरस को एक मछली पकड़ने के लिए कहा, जिसके मुंह में उसे एक सिक्का मिलेगा जिसका उपयोग वह उनके करों का भुगतान करने के लिए करेगा (मत्ती 17:24-27; मरकुस 9:33)। पतरस ने यीशु पर भरोसा कीया और उसकी आज्ञा का पालन कीया। जैसे-जैसे चुनौतियाँ बढ़ती गईं, यीशु ने पतरस को पानी के ऊपर चलते हुए अपने पास आने के लिए बुलाया (मत्ती 14:28-29; यूहन्ना 6:19-20)। पतरस ने आज्ञा मानी, परन्तु लहरों को देखकर डर गया, और डूबने लगा, और सहायता के लिए यीशु की ओर फिरा, और वह बच गया। अक्सर हमारे साथ ऐसा ही होता है जब परमेश्वर हमारे विश्वास को भी बढ़ाता है। हम अपनी आँखें यीशु से हटाकर अपने आस-पास की परिस्थितियों पर लगा लेते हैं। हम डूबने लगते हैं। जितनी जल्दी हो सके हम यीशू पर अपनी नजरें लगायें उतना ही अच्छा होगा !

जब पतरस यीशु के साथ था तब उसका विश्वास बढ़ता था । वह वही था जो सभी की तरफ से बात करता था और यीशु के ईश्वरत्व की पुष्टि अपने विश्वास के महान अंगीकार में की (मत्ती 16:16; यूहन्ना 6:68-69)। अपने पहले पत्र, 1 पतरस में, वह विश्वास और परमेश्वर के प्रति समर्पण के महत्व के बारे में बहुत कुछ बोलता है। बेशक, उसके पास अभी भी असफलताएँ थीं, जैसे कि उस वकत जब उसने यीशु को जानने से भी इनकार कर दिया था। लेकिन उसने पश्चाताप कीया और फिर से बहाल हो गया।

जब आप अपने जीवन को पीछे मुड़कर देखते हैं, तो क्या आप देख सकते हैं कि परमेश्वर आपके विश्वास को बढ़ाने के लिए कुछ कर रहा है? आपके उस पर भरोसा करते हुए कुछ सबसे कठिन समय क्या रहे हैं? आपने उनसे क्या सीखा? क्या वह अभी किसी भी तरह से आपका विश्वास बढ़ा रहा है? आपने अतीत में जो सीखा है, उसके आधार पर अब आपको कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए?

3-एक ईश्वरीय अगुवा परमेश्वर को विशेष तरीकों से कार्य करते देखता है

जब परमेश्वर दूसरों की अगुवाई करने और उनकी सेवा करने के लिए हमारे द्वारा कार्य करता है, तो हमें उनके जीवन में उसके कार्य को देखने के लिए आगे वाली पंक्ति की सीट मिलती है। यह परमेश्वर की सेवा करने और उसे हमारा उपयोग करने देने के महान विशेषाधिकारों में से एक है। यह निश्चित रूप से पतरस के बारे में सच था। वह उन लोगों में से एक था जिसे यीशु को चमत्कारी रूप से एक छोटी लड़की को मृत्यु से जीवित करते देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था (मत्ती 9:23-26, मरकुस 5:37-43, लूका 8:51-55)। वह यीशु के साथ खड़ा था जब उसने 5,000 पुरुषों (20,000 लोगों - मत्ती 14:13-22; मरकुस 6:30-46; लूका 9:10-17; यूहन्ना 6:1-15) को भोजन कराया था । उसने कई अन्य चमत्कार, चंगाई, दुष्टात्माओं को बाहर निकालना आदि को होते देखा था । वह केवल 3 शिष्यों में से एक था जिसने यीशु को एक पहाड़ पर रूपांतरित होते देखा था (मत्ती 17:1-3, मरकुस 9:2-3, लूका 9:29-32) इससे भी बेहतर, वह सबसे पहले खाली कब्र को देखने वालों में से एक था (लूका 24:12, यूहन्ना 20:3)। पुनरुत्थित (जीवित) यीशु उसी दिन व्यक्तिगत रूप से उसके सामने प्रकट हुया था (लूका 24:34; 1 कुरिन्थियों 15:5)।

यीशु के स्वर्ग में चढ़ने के बाद, पतरस ने, प्रारंभिक कलीसिया के अगुवों में से एक के रूप में अपनी स्थिति को स्वीकार करते हुए, यीशु को मंदिर में एक अपंग को चंगा करने के लिए आपने माध्यम से कार्य करते हुए देखने का विशेषाधिकार प्राप्त कीया (प्रेरितों के काम 3), हनन्याह और सफीरा को उनके पाप के लिए अनुशासित कीया (प्रेरितों के काम 5)), चमत्कारिक रूप से दो बार जेल से रिहा कीया गया (प्रेरितों के काम 5, 12), 8 साल के बाद अधंग के बीमार एनीस को ठीक करना (प्रेरितों के काम 9) और

जोप्पा में दोरकस को वापस जीवन में लाना (प्रेरितों के काम 9)। जब पहले गैर-यहूदी, कुरनेलियुस और उसका परिवार, विश्वासी बने , तब भी उसे वहां उपस्थित होने का विशेषाधिकार प्राप्त था (प्रेरितों के काम 10)।

मेरी सेवकाई में कई बार ऐसा होता है जब मैंने परमेश्वर को यह देखने के ख्सूसी तौर पर ऐसे विशेषाधिकार के लिए धन्यवाद दिया कि वह दूसरों के जीवन में कैसे कार्य करता है। क्योंकि वह मेरे माध्यम से कार्य करता है, मैं उसके द्वारा किए गए परिवर्तन को देख सकता हूं। मैं पूरी तरह से जानता हूं कि वह क्या करता है, क्योंकि वह इन चीजों को पूरा करने के लिए मेरा उपयोग करता है। यही बात किसी के लिए भी सच है जो उसके लिए अगुवा और सेवक हैं। वह हममें से और अधिक की उम्मीद करता है जो उसकी सेवा करते हैं, परन्तु वह हमें और भी कई प्रकार से आशीष देता है।

अपनी सेवकाई के उस समय के बारे में सोचें जब आपने परमेश्वर को प्रार्थना का उत्तर देने या जीवन को बदलने के लिए कार्य करते देखा था। जब आप उसकी सेवा करते हैं तो आपको कौन-सी आशीषें मिली हैं? आपने उसे कौन से चमत्कारी कार्य करते हुए देखा है? इस महान विशेषाधिकार के लिए उसका धन्यवाद करें, और एक अद्भुत, प्रेमी परमेश्वर होने के लिए धन्यवाद करें , क्योंकि वह ऐसा है !

4-एक ईश्वरीय अगुवा विनम्र होता है

एक व्यक्ति यदि विनम्र नहीं है तो वह एक ईश्वरीय अगुवा नहीं हो सकता । अभिमानआत्मकेन्द्रित होता है, लेकिन एक धर्मी अगुवा को ईश्वर-केन्द्रित होना चाहिए। हम एक ही समय में यह दोनों रूप के नहीं हो सकते; हम इनमें से एक या दूसरा होंगे । पतरस को गर्व की एक बड़ी समस्या थी, और जब तक परमेश्वर ने उसे विनम्र होना नहीं सिखाया, वह परमेश्वर के लिए बहुत उपयोगी नहीं था। जब हम गर्व से कुछ करते हैं तो परमेश्वर हमें असफल होने की अनुमति देकर अक्सर हमें नम्रता सिखाता है। पतरस के साथ भी यही हुआ। जब यीशु दूसरों को धोता था तो पतरस अपने पैर धोने नहीं देता था   (यूहन्ना 13:1-20)। कभी-कभी आपने आप को विनम्र करना और परमेश्वर को हमारी सेवा करने देना, आपने पापों के लिए उसकी क्षमा को स्वीकार करना, जब हम हतोत्साहित होते है तब उसका हमें प्रोत्साहित करना, या जब हम सोचते हैं कि हम स्वयं कुछ कर सकते हैं, तो उसे हमारी सहायता करने देना, कठिन होता है। पर ऐसा करना सीखना बहुत जरूरी है।

उसके पैर धोने के तुरंत बाद, यीशु ने पतरस से कहा कि वह उसका इन्कार करेगा (मत्ती 26:34; मरकुस 14:30; लूका 22:34; यूहन्ना 13:38)। पतरस ने सोचा कि वह बहुत शक्तिशाली है और ऐसा कभी नहीं होगा (मत्ती 26:35; मरकुस 14:31)। उसने यीशु की चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि उसे खुद पर भरोसा था। परन्तु पतरस ने तीन बार यीशु का इन्कार कीया (मत्ती 26:69-75; मरकुस 14:66-72; लूका 22:55-60; यूहन्ना 18:16-27)।

इसकी शुरुआत पतरस के गर्व और आत्मविश्वास से होती है जब उसने यीशु को अपने पैर नहीं धोने दिए और फिर जोर देकर कहा कि यीशु गलत था और वह यीशु का इनकार नहीं करेगा। यीशु ने चेतावनी दी थी कि शैतान उसे गेहूँ की तरह छानने जा रहा है, परन्तु पतरस ने सोचा कि वह बहुत होशिआर है (लूका 22:31-38)। फिर गतसमनी में, जब यीशु ने उनसे प्रार्थना करने के लिए कहा कि वे परीक्षा में ना पड़ें, पतरस सो गया और प्रार्थना नहीं की। जब यीशु को गिरफ्तार कीया गया, तो पतरस ने मलखुस पर हमला कीया, और यीशु को फिर से उसे दरुस्त करना पड़ा। पतरस वही कर रहा था जो पतरस चाहता था, नाकि वह जो यीशु चाहता था । जब उसे गिरफ्तार कीया गया था, तो यीशु ने चेलों को भाग जाने के लिए

कहा, लेकिन पतरस ने ऐसा व्यक्ति होने का नाटक कीया, जो यीशु को जानता नहीं था। पतरस का यीशु की कही हुई बात पर नम्रता से भरोसा ना करने की वजह ही उसका इनकार करने की वजह बन गयी । अपने गर्व में उसने सोचा कि वह कभी भी यीशु का इन्कार नहीं करेगा, लेकिन उसने 3 बार कीया !

जब मुर्गे ने बाँग दी, तो पतरस को यीशु की चेतावनी याद आ गई। उसी क्षण उसने यीशु को खून से लथ-पथ और पिटते हुए देखा और महसूस करने लगा कि यीशु ने उसे शाप देते और उसे जानने से इंकार करते सुना होगा। शर्म का एक भयंकर भार और अपराध का बोझ उसके ऊपर आ गया। वह यीशु को असफल करना नहीं चाहता था, परन्तु उससे ऐसा हो गया । वह उसमें असफल रहा जो उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण था, यीशु के प्रति वफादार रहने में ।

हालांकि वह उस रात को कभी नहीं भूला, पतरस ने एक सबक सीखा। वह जानता था कि वह खुद पर भरोसा नहीं कर सकता, कि वह यीशु की मदद के बिना जीत हासिल करने में बहुत कमजोर था। उसका अभिमान टूट गया, और उसने अपने आप को यीशु के सामने दीन कीया। हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में एक भिन्न पतरस को देखते हैं। उसने अपना भरोसा यीशु पर रखा, अपने आप में नहीं, और परमेश्वर ने उसे शक्तिशाली तरीकों से इस्तेमाल कीया। उसने , दूसरों को शैतान के प्रलोभनों के प्रति सचेत रहने के लिए (1 पतरस 5:8-9) और विनम्र बने रहने के लिए, लिखा (1 पतरस 3:8; 5:5-7)। पतरस के लिए नम्रता सीखना एक बहुत ही दर्दनाक सबक था, लेकिन उसे यह सीखना था कि वह परमेश्वर के लिए उपयोगी हो।

यह हम में से प्रत्येक के लिए भी सच है जो आज उसकी सेवा करेगा (भजन संहिता 51:17)। पौलुस को भी आत्मनिर्भरता और घमंड की समस्या थी। परमेश्वर ने उसे एक "शरीर का कांटा" दिया ताकि वह विनम्र रहे (2 कुरिन्थियों 12:1-10)। अपने प्यार में, वह हमें भी हमारे अभिमान से तोड़ने के लिए जो कुछ भी आवश्यक होगा, करेगा।

क्या आपका साथी कहेगा कि आपको गर्व की समस्या है? अभिमान दूसरों में देखना आसान है लेकिन खुद में देखना बहुत कठिन है। क्या आप सुन और सीख सकते हैं जब कोई आपको सुधारता है? जब आप किसी को ठेस पहुँचाते हैं तो क्या आप तुरंत माफी माँग लेंगें ? जब आप किसी चीज़ के बारे में गलत होंगे तो क्या आप इसे स्वीकार करेंगे? जब काम विफल हो जाते हैं तो क्या आप दूसरों को दोष देते हैं? क्या ऐसे लोग हैं जिन्हें आप नीची नज़र से देखते हैं और आपको नहीं लगता कि वे आपके जैसे महत्वपूर्ण हैं? क्या आपको लगता है कि आपके नेतृत्व की स्थिति के कारण आपको परमेश्वर या दूसरों से ख़सूसी विशेषाधिकार प्राप्त हैं?

5-एक ईश्वरीय अगुवा पवित्र आत्मा से भरा होता है

क्योंकि पतरस ने अपने आप को दीन कीया और देखा कि उसे हर चीज में परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है, उसने पवित्र आत्मा को आपनी और आपने माध्यम से सेवा करने की अनुमति दी। प्रेरितों के काम 2 अध्याय में पवित्र आत्मा पहली बार सभी विश्वासियों पर उतरा। यह एक ही बार होने वाली घटना थी, फिर कभी नहीं दोहराई गई। यह यीशु के जन्म जैसा था - इस दुनिया में एक अनोखा प्रवेश। उपस्थित सभी विश्वासी पवित्र आत्मा से भर गए। यह अब उद्धार के समय हर उस व्यक्ति के लिए होता है जो विश्वास करता है (1 कुरिन्थियों 12:13; इफिसियों 1:13-14)। हमें आज्ञा दी गई है कि पवित्र आत्मा को हमें भरने दें (इफिसियों 5:18), जिसका अर्थ है कि हमें अपने जीवन में पाप (इफिसियों 4:30) या अवज्ञा (1 थिस्सलुनीकियों 5:19) को अनुमति नहीं देनी चाहिए।

पवित्र आत्मा हमें अगुवाई करने के लिए और परमेश्वर की सेवा करने के लिए बुद्धि और साहस देता है। इससे पहले कि वह अपने आप को दीन करता और परमेश्वर की आत्मा को अपने अंदर और आपने द्वारा कार्य करने देता, पतरस एक दासी से भी डरता था। बाद में, उसमें हजारों लोगों से बात करने का साहस था (प्रेरितों के काम 2:14-36)।

आप कैसे जानते हैं कि पवित्र आत्मा आपके अंदर रह रहा है और आपकी सेवा कर रहा है? परमेश्वर आपके लिए क्या करता है जो आप उसके बिना नहीं कर पाएंगे? क्या आपके जीवन में प्रेम, आनंद, शांति, धैर्य, दया, भलाई, विश्वासयोग्यता और आत्म-संयम स्पष्ट है (गलातियों 5:22-23)? ये सबूत हैं कि परमेश्वर की आत्मा का आपके जीवन पर नियंत्रण है। क्या आपके जीवन में काम, क्रोध, ईर्ष्या, दूसरों के साथ ना मिलना, घमंड, या किसी भी प्रकार का पाप है (गलातियों 5:19-21)? ये दिखाते हैं कि शरीर का नियंत्रण है , परमेश्वर की आत्मा का नहीं। इनका अंगीकार करें और परमेश्वर से आपको उसकी आत्मा से भरने के लिए प्रर्थना करें ।

6-एक ईश्वरीय अगुवा ज़रूरत के मुताबिक सेवा करता है

जब यीशु वापस स्वर्ग चला गया, तो पतरस ने आपने आप को चेलों के नए अगुवे के रूप में पाया। उसने एक आवश्यकता देखी और वह उसे पूरा करने के लिए तैयार था। उसने कहा कि उन्हें यहूदा के स्थान पर किसी को चुनना चाहिए (प्रेरितों के काम 1:16-26)। उसने पिन्तेकुस्त के दिन प्रचार कीया (प्रेरितों के काम 2)। उसने परमेश्वर को अपने द्वारा लंगड़े व्यक्ति को चंगा करने की अनुमति दी (प्रेरितों के काम 3)। उसने साहसपूर्वक महासभा (प्रेरितों के काम 4) को ललकारा और हनन्याह और सफीरा (प्रेरितों के काम 5) के पाखंड से निपटा। विश्वासियों के बीच पाप का सामना करना हमेशा कठिन होता है, परन्तु यह कुछ ऐसा है जो हमें, पतरस की तरह, कलीसिया को शुद्ध रखने के लिए करना पड़ता है।

पतरस की जहाँ भी ज़रूरत थी, उसने वहाँ सेवा की। वह प्रचार करने और शमौन जादूगर से निपटने के लिए सामरिया गया (प्रेरितों के काम 8)। वह येरूशलेम परिषद में एक अगुवा था, जिसने तय कीया कि मसीही बनने से पहले अन्यजातियों को यहूदी बनना जरूरी नहीं होगा (प्रेरितों के काम 15)। जहां भी उसकी मदद और प्रोत्साहन की जरूरत थी, उसने वहां की यात्रा की। उसने लुद्दा का दौरा कीया (प्रेरितों के काम 9:32), उसने अपनी सेवकाई के द्वारा परमेश्वर को ऐनीस को चंगा करने और दोरकास को फिर से जीवित करने की अनुमति दी (प्रेरितों के काम 9:40)।

पतरस एक गैर-यहूदी, कुरनेलियुस के पास सुसमाचार ले जाने के लिए भी तैयार था, भले ही एक अन्यजाति के घर में प्रवेश करना कुछ ऐसा था जिसे करने के लिए उसे एक यहूदी के रूप में सख्ती से प्रतिबंद था (प्रेरितों के काम 10)। हमें परमेश्वर जहाँ चाहे वहाँ जाने के लिए तैयार रहना चाहिए और जो कुछ वह माँगता है उसे करने के लिए तैयार रहना चाहिए। वह हमें किसी ऐसे व्यक्ति से बात करने के लिए भेज सकता है जिसे हम सोच सकते हैं कि वह हमसे नीच है, जैसे पतरस कुरनेलियुस के बारे में महसूस करता था। लेकिन हमें वैसे भी उसकी बात माननी चाहिए। परमेश्वर के प्रेम के लिए कोई भी बहुत अमीर या बहुत गरीब नहीं है। दूसरे शायद यह ना सोचें कि हमें उन लोगों की सेवा करनी चाहिए जो हमसे नीच हैं, लेकिन अगर परमेश्वर अगुवाई करता है, तो हमें उसके वचन को जहाँ चाहे ले जाना चाहिए।

यात्रा और सेवा करते समय पतरस मरकुस को अपने साथ ले गया। उसका उद्देश्य मरकुस को प्रशिक्षित करना था ताकि वह स्वयं सेवकाई कर सके। मरकुस ने एक सुसमाचार लिखा, मरकुस का सुसमाचार,

जो उसने पतरस को यीशु के साथ अपने समय के बारे बताये हुए विवरणों पर आधारित है। इसलिए जब आप मरकुस को पढ़ते हैं, तो आप वास्तव में पतरस के शब्दों को पढ़ रहे होते हैं। सुनिश्चित करें कि जब आप सेवकाई करते हैं तो आप हमेशा किसी को अपने साथ प्रशिक्षण के लिए ले जाते हैं। एक अगुवा होने का एक महत्वपूर्ण हिस्साअन्य अगुवाओं को प्रशिक्षित करना होता है!

पतरस ने कई अलग-अलग तरीकों और स्थानों में सेवा की। उसने वह सब कीया जिसकी उसे आवश्यकता थी, और जहाँ कहीं परमेश्वर ने उसे भेजा, वहाँ गया। उसने परमेश्वर को यह नहीं बताया कि वह क्या करना चाहता है या कहाँ जाना चाहता है; उसने परमेश्वर को निर्णय लेने दिया और फिर उसके मार्गदर्शन का पालन कीया । आखिरकार, एक अच्छे अगुवा को सबसे पहले एक अच्छा अनुयायी होना चाहिए!

क्या परमेश्वर जानता है कि वह आपको कुछ भी सौंप सकता है और आपको किसी जगह भी भेज सकता है जो और जहाँ वह चाहता है? क्या आप कहीं भी सेवा करने के इच्छुक हैं? क्या ऐसा कुछ है जो आप परमेश्वर की सेवा करने के लिए नहीं करना चाहते हैं? क्या कोई ऐसी जगह है जहाँ आप नहीं जाएंगे यदि उसने आपको भेजा है? क्या कोई व्यक्ति या समूह है जिसे और जिन्हें आप कहे जाने पर पर सेवा नहीं करेंगे ? क्या आपके मध्यम से परमेश्वर को करने के लिए कुछ है जिस के लिए आप का उस पर भरोसा करना बहुत एक बड़ी बात या कठिन काम है? क्या उसके लिए कुछ भी इतना महत्वहीन या तुच्छ लगता है कि वह आप को करने के लिए कहेगा ? उन विभिन्न स्थानों और तरीकों के बारे में सोचें जिन्हें परमेश्वर ने अतीत में आपका उपयोग कीया है। उनमें से प्रत्येक के लिए उसका धन्यवाद करें।

7 -एक ईश्वरीय अगुवा परमेश्वर के वचन का प्रचार करता है

जब हम पतरस के जीवन से सबक देखते हैं, तो हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम उसकी सेवकाई में परमेश्वर के वचन की केंद्रीय भूमिका पर ध्यान देते हैं । पिन्तेकुस्त के दिन अपने पहले संदेश में (प्रेरितों के काम 2:14-36), पतरस ने पुराने नियम को कई बार प्रस्तुत किया। उसने परमेश्वर के वचन के अधिकार कोअपने संदेश के आधार के रूप में इस्तेमाल किया, और यीशु के बारे में वह जो प्रचार कर रहा था उसे मान्यता देने के लिए विभिन्न बाइबल हिस्सों का उपयोग किया। जिसने वो नमूना निर्धारित किया जिसका वह अपनी पूरी सेवकाई के दौरान अनुसरण करता रहा।

पतरस पवित्रशास्त्र की प्रेरणा (2 पतरस 1:20-21), आत्मिक विकास में वचन के महत्व (1 पतरस 2:2) और कैसे पवित्रशास्त्र उद्धार लाता है (1 पतरस 1:23) के बारे में लिखता है। उसने उन लोगों के बारे चेतावनी दी जो परमेश्वर के वचन को तोड़ मरोड़ कर उसका दुरुपयोग करेंगे (2 पतरस 2:1-22)। , हम जो कुछ भी करते हैं, हमें भी उसे परमेश्वर के वचन पर आधारित हो कर करना चाहिए। हमें इसे दूसरों को सिखाना चाहिए। हमें इसका दुरुपयोग करने वालों से इसका बचाव करना चाहिए। इसका मतलब है कि हमें इसे पूरी तरह से जानने की जरूरत है। हमें इसे बेहतर ढंग से सीखने में लगातार समय देना चाहिए। हमें इसे अपने परिवार और उन लोगों को पढ़ाना चाहिए जिनको हम जीवन में सर्वोच्च प्राथमिकता पर रखते हैं। परमेश्वर का वचन एक विशेष विश्वास है जिसे अगुवों को सुरक्षित रखना चाहिए और आगे बढ़ाना चाहिए।

क्या आपके संदेश परमेश्वर के वचन पर आधारित हैं? क्या आप जिन लोगों की सेवकाई करते हैं, वे परमेश्ववर के वचन को जानते हैं ताकि वे इसका उपयोग अपने विकास के लिए कर सकें? क्या वे उन लोगों के खिलाफ विश्वास की रक्षा करने के लिए पर्याप्त रूप से परिचित हैं जो उस पर हमला करेंगे? क्या

आप कुछ महीने पहले की तुलना में अब बाइबल को बेहतर ढंग से जानते हैं? क्या आप इसका अक्सर पर्याप्त अध्ययन करते हैं ताकि आप इसे भविष्य में और भी बेहतर तरीके से जान सकें? क्या परमेश्वर कहेगा कि उसके वचन का आपके हृदय, समय और सेवकाई में शीर्ष स्थान है?

8 -एक ईश्वरीय अगुवे को अस्वीकृति और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है

पतरस परमेश्वर और उसकी कलीसिया के लिए एक विश्वासयोग्य, फलदायी सेवक बना । वह आरंभिक कलीसिया के मुख्य अगुवों में से एक था, और परमेश्वर ने उसे आशीष दी और जो उसने अद्भुत तरीके से किया। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उसके लिए जीवन आसान था, कि सभी ने उसकी सेवकाई के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त की। कभी-कभी हम सोचते हैं कि यदि हम ईमानदारी से परमेश्वर का कार्य कर रहे हैं तो वह विरोध और उत्पीड़न से हमारी रक्षा करेगा। ऐसा नहीं है। शुरू से ही, यीशु ने अपने शिष्यों को चेतावनी दी थी कि वे भेड़ियों के बीच भेड़ों की तरह होंगे और यहाँ तक कि उनके परिवारों और दोस्तों द्वारा भी उनका विश्वासघात कीया जायेगा और उन्हें पीटा जाएगा (मत्ती 10:5-11:1; मरकुस 6:10-13; लूका 9: 3-6)। यह देखकर कि यीशु के साथ क्या हुआ , यह स्पष्ट होता है कि पतरस को अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा अनुसार सेवा करने और उसका पालन करने के लिए एक कीमत चुकानी पड़ी।

पतरस का पहला उपदेश एक बड़ी सफलता थी, लेकिन इससे सताव भी आया। धार्मिक शासकों ने उन्हें दो बार गिरफ्तार किया। उसे धमकाया गया, पीटा गया, और कहा गया कि वह फिर से यीशु के बारे में बात ना करे (प्रेरितों के काम 4:18)। पतरस परमेश्वर के वचन को साझा करता रहा (1 पतरस 3:15)। उसका अच्छा मित्र और मछली पकड़ने वाला साथी, याकूब, जो यूहन्ना और पतरस के साथ करीबी 3 लोगों में से एक था, को हेरोदेस ने मार डाला (प्रेरितों 12:1-2)। उसने पतरस के साथ भी ऐसा ही करने की कोशिश की (प्रेरितों के काम 12:3), परन्तु परमेश्वर ने पतरस को कारागार से छुड़ाने के लिए एक स्वर्गदूत को भेजा। पतरस अपने विश्वास के लिए कष्टों से अच्छी तरह परिचित था और उसने इसके बारे में अक्सर लिखा (1 पतरस 3:13-14; 4:12-19)।

पतरस को आपने साथ अन्याय करने वालों को क्षमा करना सीखना पड़ा (मत्ती 18:15-35)। यीशु ने उससे कहा कि यदि आवश्यक हो तो उसे दिन में कई बार क्षमा करना होगा। पतरस को अपने जीवन के दौरान अक्सर इसका अभ्यास करना पड़ा, जैसा कि कोई भी जो यीशु का अनुसरण करता है उसे करना पड़ेगा । यदि कोई अगुवा आज, कलीसिया के भीतर से या बाहर से , उन्हें नुकसान पहुँचाने और उनका विरोध करने वालों को क्षमा करने में सक्षम नहीं है, तो वह परमेश्वर के कार्य के लिए उपयोगी नहीं होगा।

ज़रा सोचिए कि कभी-कभी आपको अन्य मसीहीयों के विरोध का सामना करना पड़ा। आपने कैसे प्रतिक्रिया दी? उस समय का क्या जब अविश्वासियों द्वारा आपका विरोध किया गया? क्या आप ने इसे वैसा ही संभाला जैसा आपको सम्भालना चाहिए था, या ऐसा कुछ है जो आपको अलग तरीके से करना चाहिए था? क्या आप दूसरों द्वारा की गयी अस्वीकृति या आलोचना से डरते हैं? क्या आप शारीरिक नुकसान से डरते हैं? क्या कोई है जिसने आपको चोट पहुंचाई है जिसे आपने माफ नहीं किया है? अगर ऐसा कोई दिमाग में आता है तो प्रार्थना करें और परमेश्वर से मदद मांगें कि आप उन्हें अभी माफ कर दें।

9-एक ईश्वरीय अगुवा अपने पाप से सीखता है

पतरस एक ईश्वरीय अगुवा था जिसने ईमानदारी से यीशु की सेवा की, लेकिन वह सिद्ध नहीं था। हम में से कोई नहीं है। एक समय था जब पौलुस को उसके पाखंड के कारण उसे डांटना पड़ा (गलातियों 2:11)। हालाँकि, हमने पतरस को फिर कभी ऐसा करते हुए नहीं पढ़ा। उसने पाप किया, लेकिन उसने अपने पापों से सीखा और उन्हें कभी नहीं दोहराया , ठीक वैसे ही जैसे उसने फिर कभी प्रभु का इन्कार नहीं किया। वह पवित्र जीवन के महत्व को जानता था और उसने इसके बारे लिखा भी (1 पतरस 1:14; 2 पतरस 2:1)।

यीशु की मदद से आप ने किन पापों पर विजय पाई है? आप किन पापों से सबसे अधिक संघर्ष करते हैं? उन पर विजय पाने के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता है? क्या कोई पिछले पाप हैं जिन्हें करने के लिए आपको स्वयं को क्षमा करने में परेशानी हो रही है? उनको यीशु पर छोड़ दें ।

10-एक ईश्वरीय अगुवा मृत्यु में विश्वासयोग्य होता है

पतरस ने परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य सेवा का जीवन जीया, और जब वह मरा तो भी वह भी विश्वासयोग्य था। यूसेबियस कहता है, "वह अपनी पत्नी के क्रूस के पांव पर खड़ा हो गया और उस से बार-बार कहता रहा, 'प्रभु को स्मरण करो, प्रभु को स्मरण करो।'" उसकी मृत्यु के बाद, उसे भी सूली पर चढ़ाया गया और उसने सूली पर उल्टा चढ़ाए जाने की याचना की थी उसने

कहा था कि वह इसके योग्य नहीं था प्रभु की तरह मरे। वह जानता था कि वह कहाँ जा रहा है और यीशु के साथ अनन्त जीवन के प्रति आश्वस्त था (1 पतरस 1:3-4)।

क्या आप मौत से डरते हैं? क्या आप अपने विश्वास को नकारने के बजाय मरने को तैयार होंगे? हम में से अधिकांश कभी इसका सामना नहीं करते हैं, लेकिन हम सभी अब अपने जीवन के प्रत्येक दिन यीशु के लिए ईमानदारी से जीने का सामना करते हैं। क्या आप उसके लिए ईमानदारी से जी रहे हैं?

हमने पतरस के जीवन से देखा है कि एक ईश्वरीय अगुवा बनने के लिए हमें अवश्य ही

1. भगवान की बुलाहट का उत्तर दें

2. सेवा करने के लिए खुद को तैयार करें

3. एक मजबूत भक्ति जीवन बनाये

4. चेला बनने के लिए दूसरों को चुनौती दें

5. दूसरों को प्रशिक्षित करें

6. आपने पापों से सीखें

7. सेवक बने

क्या आपके पास ये हैं? अब आपके जीवन में क्या -क्या से स्पष्ट हैं? आप में किसकी कमी है? सुधार शुरू करने के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता है? इन चीजों के बारे में प्रार्थना करें और परमेश्वर से मदद मांगें कि आप इनमें से प्रत्येक को अपने जीवन में शामिल कर लें ।

9. पौलूस से नेतृत्व के सबक

पढ़ें प्रेरितों के काम 27:1 - 28:10

पौलूस कलीसिया के इतिहास में सबसे महान नेताओं में से एक है। कलिसियों को शुरू करने और बाइबल में किसी और की तुलना में अधिक किताबें लिखने के लिए परमेश्वर ने उसे शक्तिशाली तरीकों से इस्तेमाल किया। हम उसके जीवन से कई अद्भुत नेतृत्व सबक सीख सकते हैं, लेकिन हम प्रेरितों के काम की पुस्तक के अंतिम अध्यायों में से कुछ को देखेंगे, जो कि पौलुस के जहाजी तबाही का अनुभव है। ऐसा कहा जाता है कि परीक्षण और कठिन समय नेताओं में सर्वश्रेष्ठ को सामने लाते हैं, और यह निश्चित रूप से पौलूस के बारे में सच है।

पौलूस दमिश्क के रास्ते पर मन-परिवर्तित हो गया (प्रेरितों के काम 9) और आध्यात्मिक रूप से सीखने और बढ़ने के लिए अरब गया। उसने अपनी अधिकांश सेवकाई को तीन मिशनरी यात्राओं में, कलीसियाओ को शुरू करने और अन्य कलीसियाओं को पत्र लिखने में बिताया (प्रेरितों के काम 13-20)। 30 साल की सेवकाई के बाद, उसे कुछ ऐसे काम के लिए यरुशलम में गिरफ्तार किया गया जो उसने नहीं किया और अंततः मुकदमे के लिए रोम स्थानांतरित कर दिया गया (प्रेरितों के काम 21-26)। हालाँकि, ज़ंजीरों में जकड़े कैदी के रूप में यात्रा करते हुए, पौलूस ने उस यात्रा में अपने नेतृत्व कौशल को कई तरीकों से दिखाया। हम उनसे कुछ महत्वपूर्ण सबक सीख सकते हैं।

1-एक ईश्वरीय अगुवा पर भरोसा कीया जा सकता है

पौलूस जूलियस नाम के एक सूबेदार के अधिकार में एक कैदी था जिसे सीधे सीज़र को सौंपा गया था (प्रेरितों के काम 27:1)। वह जंजीरों में जकड़ा हुआ था, जहाज की पकड़ में रखा गया था। उसका वफादार दोस्त लूका उसके साथ अपने खर्च पर यात्रा करता था। पौलुस का साथ देने के लिए, उसे पौलुस का दास बनने के लिए कागजों पर हस्ताक्षर करने पढ़े होंगे । उसके पास जाने का यही एकमात्र रास्ता था। जबकि पौलूस को उसके द्वारा किए गए सभी कार्यों के लिए मान्यता और श्रेय मिलता है, यह लूका के चिकित्सा कौशल और सहायता के अलावा लूका की मदद और समर्थन के बिना संभव नहीं हो सकता था । मुझे अपने जीवन में ऐसे कई लोगों का आशीर्वाद मिला है, जिनमें पी.के. मोसेज भी शामिल हैं, जो भारत में मेरी पुस्तकों और सम्मेलनों में मेरी मदद करता है। वह परमेश्वर का एक अच्छा जन है और एक महान सेवक है जो मेरे लिए हर संभव प्रयास करता है।

पहले बंदरगाह पर जहां जहाज उतरा, जूलियस ने पौलूस को तट पर जाने की अनुमति दी ताकि जेल में विकसित या खराब होने वाली स्थितियों के लिए कुछ चिकित्सा सहायता प्राप्त कर सके (प्रेरितों के काम 27:2-3)। वहाँ पौलुस के दोस्त थे जो उसकी ज़रूरत की हर चीज़ मुहैया करा सकते थे।

जो असामान्य था वह यह था कि रोमी सैनिक, जूलियस ने पौलुस को तट पर जाने की अनुमति दे दी। इसका मतलब है कि उसने पौलूस और उसके दोस्तों पर भरोसा किया होगा। यदि वह अपने किसी भी कैदी को खो देता, तो उसे मार डाला जाएगा, इसलिए उसे भरोसा होगा कि पौलूस को आजाद कराने के लिए किनारे पर कोई जाल नहीं था, और यह कि वह वादे के अनुसार वापस आ जाएगा। एक ऐसे व्यक्ति से ऐसा आदर और विश्वास अर्जित करने के लिए जो अभी-अभी उससे मिला था, पौलुस ने क्या कीया ?

जो लोग पौलुस को जानते थे, वे आश्वस्त थे कि वह उनकी परवाह करता है और उनकी भलाई के लिए वह सब कुछ करता है जो वह कर सकता था (मत्ती 20:25-28)। अपनी बात रखने के लिए उस पर भरोसा किया जा सकता था। वे जानते थे कि वह केवल अपने उद्देश्यों के लिए उनका उपयोग नहीं कर रहा था। उसने सभी के साथ इस तरह का व्यवहार किया: स्वतंत्र और दास, वयस्क और बच्चे, पुरुष और महिलाएं, उच्च सामाजिक स्थिति और निम्न स्थिति। यीशु ने भी वैसा ही किया था । पौलुस ने दूसरों की सेवा की और उनसे यह उम्मीद नहीं की कि वे उसकी सेवा करेंगे। भरोसा खराई और चरित्र के द्वारा आता है (1 तीमुथियुस 3:2, 7)।

क्या लोग आप पर भरोसा करते हैं? क्या आपके पास ईमानदार होने और अपनी बात रखने की प्रतिष्ठा है, यहां तक कि उन लोगों में भी जो आपको नहीं जानते हैं? क्या आप जिन लोगों के साथ काम करते हैं, कि आप उनकी ज़रूरतों को अपनी ज़रूरतों से पहले रखते हैं? क्या आप सभी के साथ समान व्यवहार करते हैं, चाहे उनकी उम्र, लिंग, धन या सामाजिक स्थिति कुछ भी हो?

2-एक ईश्वरीय अगुवा अगुवाई करने की पहल करता है

उस बंदरगाह से वे कुछ दिनों के लिए आगे बढ़ते हुए दूसरे बंदरगाह पर उतर गए (प्रेरितों के काम 27:4-5)। वहाँ वे मिस्र से रोम तक अनाज ले जाने वाले एक बड़े जहाज में चले गए (प्रेरितों 27:6), जो खुले समुद्र में नौकायन के लिए सुरक्षित होगा। विमान में 276 यात्री सवार थे। जैसे ही वे नए जहाज पर यात्रा कर रहे थे, उन्होंने हवाओं के खिलाफ नौकायन करने की कोशिश की, और यह कठिन नौकायन था। वे फिर से उतरे, इस बार क्रेते द्वीप के एक स्थान पर (प्रेरितों के काम 27:7-9क)। अब तक अक्टूबर की शुरुआत हो चुकी थी और रोम की तरफ जाने के लिए बहुत देर हो चुकी थी। तेज हवाएं और तूफान की स्थिति शुरू हो रही थी, जिससे वसंत तक नौकायन बहुत खतरनाक हो गया था । वास्तव में, एक कैदी होने के बावजूद, पौलुस ने अगुवों को चेतावनी दी थी कि आगे बढ़ने की कोशिश करना खतरनाक होगा (प्रेरितों के काम 27:9ख)। अब पार करने की कोशिश करना बहुत खतरनाक हो सकता है।

यह पौलूस के बोलने की जगह नहीं थी। कप्तान और जहाज के मालिक का अंतिम कहना ही मान्य होता था, फिर भी पौलूस ने बात की। यह एक साहसी कार्य था। उसे इस बारे में दृढ़ विश्वास था कि क्या करने की आवश्यकता है इसलिए उसने इसे साझा किया। वह सौम्य और विनम्र था , लेकिन उसने खुद को एक अगुवा की स्थिति में डाल दिया। उसने दूसरों की आलोचना नहीं की और ना ही उन्हें नीचा दिखाया। ना ही उसने अपना रास्ता बनाने की मांग की। उसने अपनी इच्छा थोपने के लिए क्रोध का उपयोग नहीं किया। लेकिन उसने वही बताया जो उसने महसूस किया।

परमेश्वर पादरियों से अगुवे होने की उम्मीद करता है (1 पतरस 5:1-4)। कुछ के लिए यह आसान है, लेकिन दूसरों के लिए बहुत कठिन। एक अगुवा होना स्वाभाविक रूप से पतरस के पास आया क्योंकि वह ऐसे लोगों से घिरा रहना पसंद करता था जो उसकी बात सुनते थे। लेकिन जब तक उसने यीशु को अपने जीवन में प्रथम स्थान देना नहीं सीखा, तब तक वह एक ईश्वरीय अगुवा नहीं बन पाया । जो लोग

शर्मीले या आरक्षित होते हैं उनके लिए दूसरों के सामने रहना और समूह के लिए निर्णय लेना कठिन होता है। मैं उस तरह का व्यक्ति हूं। मेरे लिए पहल करना और नेतृत्व करना हमेशा कठिन रहा है। मैं यह जानने में बेहतर करता हूं कि बहुमत क्या चाहता है और उस तरह से जा रहा है, या किसी को आपने से अधिक क्रियाशील होते देख मैं उसको नेतृत्व करने देता हूं। लेकिन मुझे पता है कि यह सही नहीं है। चूँकि परमेश्वर ने मुझे लोगों के ऊपर नेतृत्व और मेरी ज़िम्मेदारी के अधीन सेवकाई दी है, वह मुझे वह मार्गदर्शन भी देगा जो मुझे उनका नेतृत्व करने के लिए चाहिए। मुझे यह विश्वास करने की आवश्यकता है कि परमेश्वर जो चाहता है वह सही और सर्वोत्तम है, और मैं उसका पालन करूँ । यह मेरे लिए विशेष रूप से कठिन होता है जब कोई मेरी आलोचना करता है या मेरे नेतृत्व का विरोध करता है। एक अगुव होने का मतलब सभी के लोकप्रिय होना और पसंद किए जाना नहीं है । यह लोगों को खुश करने के लिए नहीं बल्कि परमेश्वर को खुश करने के बारे में है। पौलुस ने यही किया, और हम सब को क्या करना चाहिए।

क्या आपके लिए नेतृत्व करना कठिन या आसान है? यदि यह आसान है, तो क्या आप सुनिश्चित करते हैं कि आप वही कर रहे हैं जो परमेश्वर चाहता है ना कि केवल वही जो आप चाहते हैं? यदि यह कठिन है, तो आप अपने भय पर विजय पाने के लिए और जो आप जानते हैं कि परमेश्वर चाहता है उसके लिए खड़े होने के लिए, आप क्या करते हैं? क्या आप उस समय के बारे में सोच सकते हैं जब आपने कोई कदम उठाया और परमेश्वर की इच्छा के अनुसार नेतृत्व किया? कैसा रहा? उस समय के बारे में सोचें जब आप नेतृत्व करने में झिझकते थे, या परमेश्वर के रास्ते के बजाय अपने तरीके से चलते रहे ? वह कैसा साबित हुआ ?

3-एक ईश्वरीय अगुवा कठिन समय में बलवान होता है

हालाँकि पौलूस ने यह नहीं सोचा था कि यह करना सही है, लेकिन जहाज के कप्तान और मालिक दोनों ने जहाज आगे बढ़ाने का फैसला किया। वे सर्दियों को बिताने के लिए एक बेहतर जगह पर जाना चाहते थे जब तक कि वे रोम का बाकी रास्ते पूरा नहीं कर सकते। उन्हें केवल 40 मील जाने की आवश्यकता थी, और यह एक सुरक्षित जुआ जैसा लग रहा था (प्रेरितों 27:11-13)। जब उन्होंने छोटी यात्रा शुरू की तो मौसम तेजी से बदल गया और एक तूफान उनके ऊपर बह गया (प्रेरितों 27:14-15)। वे जहाज की दिशा को नियंत्रित नहीं कर सकते थे और जहाज को डूबने से बचाने के लिए हर संभव प्रयास करते थे, यहाँ तक कि जहाज को हल्का करने के लिए सारा माल और उपकरण भी पानी में फेंक रहे थे (प्रेरितों 27:16-19)।

कई दिनों तक बिना रुके तूफान जारी रहा। हर कोई जहाज को बचाए रखने में मदद करने की कोशिश कर रहा था। खाना या सोना असंभव था। किसी भी समय जहाज टूट सकता था और वे सब डूब सकते थे। भावनात्मक और शारीरिक तनाव जबरदस्त था, और इसके कई दिनों के बाद वे थक गए और जीवित रहने की आशा छोड़ बैठे (प्रेरितों 27:20-21क)।

यह इस समय था कि पौलूस के नेतृत्व की स्वाभाविक बुधि हरकत में आई। वह खड़ा हुआ और उसने सभी को याद दिलाया कि यदि उन्होंने उसकी बात सुनी होती तो ऐसा ना होता (प्रेरितों के काम 27:21)। वह यह दिखाने की कोशिश नहीं कर रहा था कि वह सही था और वे गलत थे, वह चाहता था कि उन्हें एहसास हो कि वह जानता था कि वह किस बारे में बात कर रहा था। उन्होंने पहले उसकी नहीं सुनी, लेकिन अब शायद वे सुनेंगे। पौलूस ने सभी को कहा कि मरने से ना डरें , क्योंकि परमेशवर ने उसे

आश्वासन दिया था कि वे सभी जीवित रहेंगे। जहाज खो जाएगा, लेकिन वे सुरक्षित रहेंगे (प्रेरितों 27:22-24)। पौलुस ने उस पर विश्वास किया जो परमेश्वर ने उससे कहा था और विश्वास के साथ इसे दूसरों तक पहुँचाया। वह लोगों से उसका अनुसरण करने की उम्मीद नहीं कर रहा था, बल्कि परमेश्वर पर भरोसा करने और उसका अनुसरण करने की उम्मीद कर रहा था। परमेश्वर ने बात की थी, और जो उसने कहा वह जरूर होगा।

क्या आप परमेश्वर की सच्चाई को घोषित करने में सक्षम हैं, खासकर कठिन समय के दौरान? क्या आप लोगों को परमेश्वर का अनुसरण करने और उसके वचन और वादों पर भरोसा करने के लिए बुला सकते हैं? क्या आप अपने और अपनी सेवकाई के लिए परमेश्वर की अगुवाई को स्पष्ट रूप से समझने में सक्षम हैं ताकि आप इसे दूसरों को दे सकें? परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन क्यों ना हों, क्या आप उससे जुड़े रहते हैं? क्या आप अधिकार के साथ नेतृत्व कर सकते हैं क्योंकि आप जानते हैं कि यह परमेश्वर है जो नेतृत्व कर रहा है और आप उसका अनुसरण कर रहे हैं (मत्ती 7:28-29)?

4-एक ईश्वरीय अगुवा दूसरों को प्रोत्साहित करता है

एक ईश्वरीय अगुवा हमेशा अपने द्वारा नेत्रत्व दिए जाने वाले लोगों को प्रोत्साहित करने और उनका निर्माण करने का प्रयास करता है। वह उनकी आलोचना नहीं करता , उनको डांटता नहीं या उन पर गुस्सा नहीं करता है। हम सभीआलोचना से बेहतर व अधिक प्रोत्साहन का प्रतिउतर देते हैं। इस प्रकार से परमेश्वर भी स्वयं हमारे साथ व्यवहार करता है। पौलुस ने जहाज पर सवार लोगों के साथ यही कीया, भले ही उनकी सलाह को मानने से इंकार करने के कारण वे इस स्थिति में आ गए। उसने परमेश्वर में अपने भरोसे की पुष्टि करते हुए उनको प्रोत्साहित किया (प्रेरितों 27:25-26)। उसने एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण प्रस्तुत किया जो निड था, परन्तु परमेश्वर में विश्वास करता था और उसके वादों पर भरोसा करता था।

पौलुस ने लोगों को यह आशा दी कि वे जीवित रहेंगे। उसने वर्तमान परिस्थितियों से परे उसकी ओर देखा जिसकी परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी। वह लोगों के साथ खुला और ईमानदार था, और वे उसका सम्मान करते थे और उस पर भरोसा करते थे।

इसका अर्थ यह नहीं है कि पौलुस ने कभी लोगों को नहीं सुधारा, क्योंकि उसने ऐसा किया (गलातियों 2:11-14)। परन्तु उसने प्रेम से सच बोलने के द्वारा किया (इफिसियों 4:15)। यीशु कहता है कि हमें पहले व्यक्ति के पास अकेले जाना है, इसे सार्वजनिक नहीं करना है, जब तक कि वह पश्चाताप करने से इंकार नहीं करता (मत्ती 18:15-18)। फिर भी, पूरा उद्देश्य उसे बहाल करना है, उसकी निंदा नहीं। यही परमेश्वर हमारे साथ करता है (रोमियों 8:1)।

क्या मुश्किल समय में लोग प्रोत्साहन के लिए आपके पास आते हैं? क्या आप लोगों को प्रोत्साहित करने में अच्छे हैं? क्या आप उन लोगों की भी मदद करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं जिन्होंने आपकी सलाह नहीं मानी और इसके कारण परेशानी में पड़ गए हों ? क्या आप प्यार में दूसरों को निजी तौर पर सही करने में सक्षम हैं? क्या आप अपने क्रोध और कड़वाहट को नियंत्रित कर सकते हैं, इसे करुणा और सहानुभूति में बदल सकते हैं? क्या आप दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करने में सक्षम हैं जैसा परमेश्वर आप के साथ व्यवहार करता है?

5-एक ईश्वरीय अगुवा पाप के विरुद्ध खड़ा होता है

तूफान द्वारा हिंसक रूप से इधर-उधर डग-मगाने के 2 सप्ताह बाद, जहाज अंततः भूमि की ओर आने लगा (प्रेरितों 27:27-28)। इसका मतलब था कि पानी उथला-पुथला हो गया था और जहाज को चट्टानों से टकराने और टूटने का खतरा बहुत अधिक था (प्रेरितों के काम 27:29)। उस तरह के मौसम में लोग तैर कर किनारे तक नहीं जा सकते थे।

सुबह के उजाले का इंतजार करते हुए, कुछ नाविकों ने एक जीवनरक्षक नौका लेने की कोशिश की ताकि वह खुद किनारे पर आ सके। ऐसा कारना अगले दिन उन लोगों की कुछ मदद किए बिना बाकी लोगों को जहाज सहित छोड़ देता, जब कि सब को सहायता की बहुत जरूरत थी। पौलूस ने देखा कि वे क्या कर रहे थे और उसने जूलियस को चेतावनी दी कि उन्हें ऐसा करने से रोकना चाहिए नहीं तो हर कोई डूब जाएगा (प्रेरितों के काम 27:30-31)।

ऐसा लगता है कि पौलूस का नेतृत्व अब सम्मानित और भरोसेमंद था। जूलियस ने उसकी बात सुनी और उसके सुझाव पर काम किया (प्रेरितों 27:32)।पौलूस ने खुद को साबित कर कीया और उन्होंने स्वेच्छा से उसका अनुसरण किया है। किसी को उपाधि देना ही मात्र किसी को नेतृत्व कुशल प्रदान नहीं करता है। जो दूसरों को दिखाते हैं कि उनके मन में उनके सर्वोत्तम हित हैं और जानते हैं कि उनकी जरूरतों को कैसे पूरा किया जाए, व्ही ऐसी उपाधि अर्जित करतें है । एक कैदी के रूप में जो रोम में एक क्रूर मौत की सबसे अधिक संभावना रखता है, उसको (पौलूस को) तो भागने की कोशिश करने वाला होना चाहिए था। परन्तु इसकी बजाय, उसने समूह की भलाई के लिए दूसरों को ऐसा करने से रोका। वह अपने आप को और व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि सभी की भलाई के लिए देख रहा है।

इस पर भी ध्यान दें, कि पौलुस ने भागते हुए नाविकों का स्वयं सामना नहीं किया, बल्कि उसके पास ऐसा करने के लिए उस के पास गया जिसके पास अधिकार था । उसने आदेश की श्रृंखला का पालन किया। कई बार हमें हालातों को अपने हाथों में लेने के लिए लुभाया जा सकता है, लेकिन अधिकार वाले लोगों के साथ काम करना बेहतर होता है, चाहे वह परिवार का पिता हो, स्थानीय सरकार हो या किसी व्यवसाय का मुखिया हो। यही बात उन लोगों के साथ व्यवहार करते समय भी सच होती है जो किसी और की सेवकाई या कलीसिया का हिस्सा होते हैं।

क्या आप पाप के खिलाफ खड़े होने में सक्षम हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह कौन करता है या किस कारण से करता है ? क्या आप पहली बार में निजी तौर पर इसे प्यार में इस तरह से इंगित कर सकते हैं, जिससे आपत्तिजनक व्यक्ति को पुनर्स्थापित किया जा सके? क्या आप उन लोगों के माध्यम से काम करते हैं जो चीजों को अपने हाथों में लेने के बजाय उस व्यक्ति पर अधिकार रखते हैं? क्या आप पाप की ओर इशारा कर सकते हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दूसरे लोग ऐसा करने के लिए आपकी आलोचना करने के लिए क्या कहते हैं?

6-एक ईश्वरीय अगुवा एक अच्छा उदाहरण पेश करता है

यह जानते हुए कि अगला दिन सभी के लिए कठिन होगा, पौलुस ने लोगों से आग्रह किया कि वे कुछ अति आवश्यक शक्ति प्राप्त करने के लिए भोजन करें (प्रेरितों के काम 27:33-34)। उसने पहले खाना शुरू करने के द्वारा एक उदाहरण स्थापित की (प्रेरितों के काम 27:35)। इसने सभी को एक ही काम करने के लिए प्रोत्साहित किया (प्रेरितों के काम 27:36)।

हमारी सेवकाई में लोगों के अगुवे और हमारे परिवार में बच्चों के लिए , हमें उनके लिए एक अच्छा उदाहरण बनाना चाहिए। हम उनसे वह करने की उम्मीद नहीं कर सकते जो हम कहते हैं जब तक कि हम इसे पहले स्वयं नही करते । हमें हमेशा देखा जा रहा होता है, तब भी जब हम ऐसा नहीं सोचते हैं। छोटी-छोटी चीजें, जिन्हें हम नोटिस भी नहीं कर सकते, दूसरों द्वारा देखी जाती हैं। हमें अविश्वासियों के बीच एक अच्छी प्रतिष्ठा बनाए रखने की आवश्यकता है, लेकिन हमें विश्वासियों के लिए एक मानक स्थापित करने की भी आवश्यकता है। एक अच्छा उदाहरण स्थापित करके, हम दूसरों को यह भी दिखाते हैं कि यीशु के लिए कैसे जीना है और विभिन्न परिस्थितियों में कैसे प्रतिक्रिया देनी है। हम अपने बच्चों या अपने लोगों से यह उम्मीद नहीं कर सकते कि हम जो कहते हैं वह करें जब तक हम स्वयं इसे नहीं करते हैं!

आप अपने बच्चों के लिए क्या उदाहरण पेश करते हैं? आपकी सेवकाई में लोगों के बारे में क्या आप का क्या कहना है ? क्या आपको उनमें कोई बुरी आदत या लक्षण नज़र आता है, जो उन्होंने आपका अनुसरण करने से अपनाह लीया है? आपने कब दूसरों के लिए एक अच्छी मिसाल कायम की है? आपने कब एक खराब मिसाल कायम की है? आप किसका उदाहरण देखते हैं और उसका अनुसरण करते हैं? क्यों?

7-एक ईश्वरीय अगुवा सेवकाई के लिए हर अवसर का उपयोग करता है

अगला दिन विकसित हुआ जैसा कि पौलूस ने कहा था। जहाज टूटने और डूबने से पहले किनारे के करीब पहुंच गया, लेकिन सभी लोग जहाज से पटलों पर किनारे पर चले गए (प्रेरितों के काम 27:37-41)। सिपाही जहाज़ से निकलने से पहले क़ैदियों को क़त्ल करने ही वाले थे, क्यूँकि अगर कोई बच जाता तो वह मर जाते, मगर पौलुस और उसके काम के आदर के कारण यूलियस ने इस योजना को रोक दीया (प्रेरितों 27:37-40)। हर कोई बच गया था (प्रेरितों के काम 27:41)। लेकिन कहानी अभी खत्म नहीं हुई है।

तट पर उन्होंने गर्म होने और आपने आप को सखाने के लिए आग लगा जला दी। जिस लकड़ी को पौलुस ने उठाया, उसमें एक जहरीला सांप था, और उसने उसे डस लिया। कुछ लोगों ने सोचा कि यह उस पर न्याय था क्योंकि वह समुद्र में तो नहीं डूबा था अब वह मरेगा । हालाँकि, उसपे ज़हर का कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं दिखा (प्रेरितों के काम 28:1-6) और लोग बहुत प्रभावित हुए।

द्वीप के मुख्य अधिकारी ने उनका अपने घर में स्वागत किया। उसके पिता बिस्तर पर था , जो बहुत बीमार था । पौलुस ने उसके लिए प्रार्थना की और वह चंगा हो गया। टापू पर और जो रोगी थे वे आए, और पौलुस ने उन सब के लिथे प्रार्थना की। सभी ठीक हो गए। पौलूस सभी की सेवा करने और द्वीप पर सभी को सुसमाचार साझा करने में सक्षम था। उन्होंने पूरी सर्दि में टूटे हुए जहाज़ के लोगों के लिए मदद प्रदान की और जब जाने का समय था तो उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए और भी मदद के रूप में कई कुछ दिया (प्रेरितों के काम 28:7-10)।

थका हुआ, गीला और भूखा होने , और एक जहरीले सांप द्वारा काटे जाने के बावजूद, पौलूस ने किसी जरूरतमंद के लिए प्रार्थना करने का अवसर देखा और प्रार्थना की । परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने उसके लिए द्वीप पर सभी की सेवा करने का द्वार खोल दिया। हम इसे पौलूस के पूरे जीवन में देखते हैं। वह हमेशा सेवक बनने के अवसरों की तलाश में रहता था और वह जो कुछ भी कर सकता था उसका उचित लाभ उठाता था। परमेश्वर कहता है कि हमें भी, वचन या कर्म से सेवा करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए (1 पतरस 3:15)।

क्या आप हमेशा तैयार हैं और किसी भी तरह से दूसरों की सेवा करने के लिए तैयार होते हैं, चाहे आपके जीवन में कितना भी बुरा समय क्यों ना हो या क्या भी हो रहा हो? क्या आप कभी-कभी व्यस्त होने पर किसी तक पहुंचने और किसी की मदद करने में झिझकते हैं? क्या आप वास्तव में उन सभी के लिए प्रार्थना करते हैं जिन्हें आप कहते हैं कि आप उनके लिए प्रार्थना करेंगे ? क्या आप परमेश्वर से हर दिन उसकी सेवा करने के अवसर मांगते हैं, और फिर दिन भर उन्हें ढूंढते हैं? या क्या आप कभी-कभी अपनी योजना को पूरा करने में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि आपको अपने आसपास के लोगों की ज़रूरतों का ध्यान ही नहीं रहता?

यह पौलूस के जीवन की सिर्फ एक घटना है। उसके जीवन और सेवकाई के अन्य पहलुओं से कई अन्य सबक सीखे जा सकते हैं। यह कठिन परिस्थितियों में नेतृत्व का एक अच्छा उदाहरण है। वे हमारे लिए अनुसरण करने को अच्छे सबक हैं।

हमने पौलुस के जीवन से देखा है कि एक ईश्वरीय अगुवा बनने के लिए हमें अवश्य ही

1. भरोसेमंद बनना है

2. नेतृत्व करने की पहल करनी है

3. मुश्किल समय में मजबूत बनना है

4. दूसरों को प्रोत्साहित करना है

5. पाप के खिलाफ खड़े हो जाना है

6. एक अच्छा उदाहरण कायम करना है

7. सेवक बनने के लिए किसी भी अवसर का उपयोग करना है

क्या आपके पास ये हैं? अब आपके जीवन में क्या -क्या स्पष्ट हैं? आप में किस -किस की कमी है? सुधार शुरू करने के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता है? इन चीजों के बारे में प्रार्थना करें और परमेश्वर से मदद मांगें कि आप इनमें से प्रत्येक को अपने जीवन में शामिल कर सकें ।

10. महिलाओं से नेतृत्व के सबक

हमने में बाइबल उन पुरषों को देखकर कई अहम सबक सीखे हैं जो अगुवे थे। हालांकि, ना केवल पुरुष नेतृत्व करते हैं, बल्कि महिलाएं भी। महिलाएं कलिसीयाओं की पासबानी के लिए नहीं हैं (1 तीमुथियुस 2:9-15; 3:2-5), लेकिन सेवकाई में उनके लिए कई अन्य नेतृत्व के पद खुले हुयें हैं: अन्य महिलाओं या बच्चों की अगुवाई करना, पति या पादरी के अधीन सेवकाई करना और जैसे भी संभव हो, कलीसिया में जरूरतमंद महिलाओं की सेवा करना, जब पादरी के लिए ऐसा करना मुश्किल हो (यह विशेष रूप से मूल्यवान है), महिलाओं और बच्चों को प्रचार करना और अनुशासित करना। अक्सर, महिलाओं में समस्याओं और स्थितियों के प्रति अंतर्दृष्टि होती है जो पुरुष में नहीं होती हैं; मांगें जाने पर वे पुरुष नेताओं को महिला दृष्टिकोण से मार्गदर्शन और ज्ञान दे सकती हैं। पुरुषों के लिए अच्छा होगा कि वे उस सलाह पर भरोसा करें जो एक परिपक्व, इश्वरीय स्त्री से आती है। स्त्रियाँ वह सब कर सकती हैं जो पुरुष करते हैं सिवाय पुरुषों पर अधिकार करने के (1 तीमुथियुस 2:9-15)।

हमने अब तक पुरुषों से जो सबक देखा है, वह महिला नेताओं पर भी लागू हो सकता है। साथ ही, बाइबल की जो अगुवाएं महिलाओं के ये सबक हैं , पुरुषों पर भी लागू हो सकते हैं। तो पुरुषों, इस अध्याय को यह सोचकर ना छोड़ें कि यह सिर्फ महिलाओं के लिए है!

आइए बाइबल की कुछ ऐसी महिलाओं को देखें जिन्होंने पृथ्वी पर अपने समय के दौरान महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाईं।

1-एक ईश्वरीय महिला अगुवा शैतान द्वारा धोखा खा सकती है (हव्वा)

परमेश्वर द्वारा हव्वा की रचना के तुरंत बाद, शैतान ने अदन में उस पर हमला किया। आपको आश्चर्य हो सकता है कि वह कैसे एक अगुवा थी, लेकिन स्पष्ट रूप से उसका आदम पर प्रभाव था। इसलिए शैतान ने सबसे पहले उसकी परीक्षा ली - इस तरह वह आदम को बहका देगी (उत्पत्ति 3)। आदम ऐसा अगुवा नहीं था जो एक पति को होना चाहिए था । वह उसके साथ था और उसने उसे पाप करने से नहीं रोका (उत्पत्ति 3:6) भले ही वह पूरी तरह से जानता था कि यह अवज्ञा है (1 तीमुथियुस 2:14)। शैतान जानता था कि कौन प्रभावशाली है और उसने उसकी परीक्षा ली। हव्वा को यह सोचने और यकीन करने द्वारा धोखा दिया गया कि वह कुछ अच्छा कर रही है (1 तीमुथियुस 2:14)। आदम बेहतर जानता था। शैतान ने उन दोनों को एक ही बार में हरा दीया।

हमें सावधान रहना चाहिए, क्योंकि शैतान हम पर भी आक्रमण करेगा। कभी-कभी वह शेर की तरह हमला करता है (1 पतरस 5:8), लेकिन आमतौर पर वह झूठ और धोखे का इस्तेमाल करता है (यूहन्ना 8:44)। आदम के मामले की तरह, वह अक्सर हमारे सबसे करीबी लोगों के माध्यम से काम करता है,

जो हमें प्रभावित करते हैं और जिन्हें हम खुश करना चाहते हैं। अगुवों को सावधान रहना चाहिए कि शैतान उन्हें धोखा ना दे, और उनके करीबी जो शैतान द्वारा धोखा दिए जा सकते हैं, वे उन्हें प्रभावित नहीं कर रहे हैं।

क्या आपको लगता है कि आप शैतान या आपके करीबी लोगों द्वारा धोखा दिए जाने से ऊपर हैं? यदि ऐसा है, तो आपको ऐसा होने का बहुत खतरा है। क्या दोस्त और नेकदिल लोग आपको आसानी से धोखा देते हैं? क्या आपके लिए अपने किसी करीबी को ना कहना मुश्किल होता है? आपको कब धोखा दिया गया है? तुमने कब किसी ऐसी बात पर विश्वास किया और उस पर अमल किया जो झूठ थी? शैतान के धोखे से खुद को बचाने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

2-एक ईश्वरीय महिला अगुवा स्वेच्छा से दूसरों को प्रदान करती है (रिबका)

उत्पत्ति 24 में हम आब्रहाम के सेवक के बारे में पढ़ते हैं जो इसहाक के लिए एक दुल्हन की तलाश कर रहा है। उसने रिबका को इसलिए चुना क्योंकि वह उसे पानी पिलाना और उसके ऊँटों को भी पानी पिलाना चाहती थी। मांगने पर अगुवा देते हैं। दूसरों को देने में, हम वास्तव में यीशु को दे रहे होते हैं, जो हम उनके लिए करते हैं हम उसके लिए करते हैं (मत्ती 25:34-40)। ईश्वरीय अगुवे दूसरों की आवश्यकताओं को अपने से पहले रखकर सेवा करते हैं। कई प्यासे ऊंटों के लिए एक कुएं से पर्याप्त पानी निकालना उसके लिए लंबी, कड़ी मेहनत थी, फिर भी उसने स्वेच्छा से ऐसा कीया। यह सुविधाजनक या आसान नहीं था, और वह उस व्यक्ति को भी नहीं जानती थी जिसकी वह मदद कर रही थी। रिबका की तरह, एक ईश्वरीय अगुवा दूसरों को स्वेच्छा से मदद देता है।

क्या आप दूसरे लोगों को जो ज़रूरतमंद होते है उनको स्वेच्छा से प्रादान करने के लिए तत्पर रहते हैं? क्या आप अपना काम छोड़ देंगें और किसी ऐसे व्यक्ति की मदद करने के लिए बलिदान करेंगे जिसे आप नहीं जानते, जो आपको वापस भुगतान नहीं कर सकता है? क्या आप किसी की मदद तब भी करेंगे जब आपके द्वारा किए गए अच्छे कामों को कोई नहीं जानता होगा ? यह आपके परिवार में शुरू होता है, तो क्या आप स्वेच्छा से अपने परिवार में दूसरों की सेवा करने के लिए त्याग करते हैं?

3-एक ईश्वरीय महिला अगुवा पाखंड का सामना करती है (तामार)

तामार के साथ उसके परिवार ने अन्याय किया था और ससुर द्वारा उसे छोड़ दिया गया था जो उसके पति की मृत्यु के बाद उसकी देखभाल करने वाला था (उत्पत्ति 38)। जो वास्तव में उसका बनता था उसे हासिल करने के लिए उसने अत्यधिक उपायों का सहारा लिया। जब उसने जो किया वह खोजा गया और उसे दोषी ठहराया गया, तो उसने उन सभी को बताया कि असली पापी कौन था - उसका ससुर यहूदा। वह यह स्वीकार करने के लिए काफी ईमानदार था कि यह पूरी गलती उसकी थी। तामार में किसी के ऊपर बहुत शक्तिशाली स्थिति में पाखंड को इंगित करने का साहस था। जब हम इसे देखते हैं तो अगुवाओं के रूप में हमें भी पाखंड का सामना करना चाहिए। इसके लिए साहस की आवश्यकता होती है, क्योंकि यहूदा की तरह बहुत काम ही लोग पश्चाताप करते हैं। फिर भी, यदि हम इसे नज़रअंदाज़ करते हैं, तो हम उनके पाप को ढकने के द्वारा उन्हें पाप में बने रहने में मदद कर रहे होते हैं। यह हमें पाप का दोषी भी बनाता है।

क्या आप किसी ऐसे समय के बारे में सोच सकते हैं, जब आप ने किसी के पाखंड का सामना करने की हिम्मत रखी हो ? क्या हुआ? क्या ऐसा कोई समय आया है जब आप किसी व्यक्ति का जो पाप में था सामना करने से डरते थे? क्या आपके डर के पाप का अंगीकार कर लिया है? क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो पाखंड, या किसी अन्य पाप में जी रहा है, जिसे परमेश्वर चाहता है कि आप चुनौती दें? कब और कैसे करना है, इसकी योजना बनाएं (सुनिश्चित करें कि आप प्रेम में सत्य बोलते हैं, न्याय से नहीं - इफिसियों 4:15)

4-एक ईश्वरीय महिला अगुवा असहायों की रक्षा करती है (मरियम)

मिरीअम को इस्राएल की महिलाओं की एक महान अगुवा के रूप में जाना जाता है (निर्गमन 15:20-21)। हालाँकि, यह तब शुरू हुआ जब वह एक छोटी लड़की ही थी। जब मिस्र में सभी लड़कों को मार डाला जाना था, तो उसने अपने छोटे भाई मूसा (निर्गमन 2) की रक्षा के लिए खुद को खतरे में डाल दिया (निर्गमन 2)। उसके कारण, मूसा को बचाया गया और बख्शा गया। वह यहूदियों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाने वाला बन गया। यह सब इसलिए है क्योंकि मिरीअम असहाय होने पर उसकी रक्षा कर रही थी। आप देखिए, अगुवा असहायों का बचाव करते हैं। यह हमेशा आसान नहीं हो सकता है। ऐसा करने पर हमारा विरोध हो सकता है। यीशु ने असहायों की रक्षा की (यूहन्ना 8:1-11), और जब हम ऐसा करते हैं तो हम उसके समान होते हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम दूसरों के लिए भी साहस और करुणा की मिसाल कायम करते हैं।

आप किसी ऐसे व्यक्ति का बचाव करने के लिए जिसे चोट पहुँचाई जा रही है या जिसका फायदा उठाया जा रहा है, अपने रास्ते से हटने के लिए कितने इच्छुक हैं ? क्या आप उन लोगों की मदद करते हैं जो आपको धन्यवाद भी नहीं दे सकते या जानबूझकर धनयवाद नहीं करते हैं ? क्या आप आलोचना के लिए तैयार हैं क्योंकि आपने किसी ऐसे व्यक्ति की रक्षा की है जो खुद की रक्षा नहीं कर सकता है ? क्या आप धमकियों और दूसरों का फायदा उठाने वालों से डरते हैं?

5-एक ईश्वरीय महिला अगुवा अपने अनुयायियों को प्रोत्साहित करती है (दबोरा)

दबोरा इज़राइल के इतिहास में एकमात्र महिला न्यायाधीश हैं। वह बेहतरीन जजों में से एक थीं। वहाँ पुरुष सेवा करने को तैयार नहीं थे, इसलिए परमेश्वर ने उसका उपयोग किया। उसने एक पुरुष सेनापति के साथ काम किया जिसने अपने दुश्मनों के खिलाफ अपनी सेना का नेतृत्व कीया दबोरा लड़ाई में नहीं लड़ी, लेकिन उसने लड़ने वालों को प्रोत्साहित किया और उन्हें आश्वस्त किया कि जीत उनकी है (न्यायाधीश 4)। ईश्वरीय अगुवे दूसरों के लिए मनोबल बढ़ाने वाले होते हैं। वे अपने अनुयायियों को प्रोत्साहित और प्रेरित करते हैं।

क्या आप दूसरों को प्रोत्साहित करने के लिए अपना काम छोड़ देतें हैं? क्या आप ऐसी बातें कहते हैं जिससे उन्हें उनके जीवन में चल रही घटनाओं का सामना करने में मदद मिले? क्या आप उन लोगों की आलोचना करते हैं या उनकी निंदा करते हैं जो भारी बोझ से जूझ रहे होते हैं, या आप उनकी मदद करने के लिए हर संभव कोशिश करते हैं?

6-एक ईश्वरीय महिला अगुवा में साहस होता है (एस्तेर)

एस्तेर की पुस्तक में, एस्तेर एक इस्राएली, राजा की पत्नियों में से एक बन गई। हामान ने सभी यहूदियों का विरोध किया और उन्हें नष्ट करने की कोशिश की। यदि एस्तेर ने राजा के ध्यान में इस बात को लाने का साहस ना कीया होता तो वह इसमें सफल हो गया होता। बिना निमंत्रण के राजा के पास जाने से निश्चित मृत्यु हो सकती थी, लेकिन एस्तेर ने इसे जोखिम में डाला और परमेश्वर उसके साथ था। वह अपने लोगों के लिए सही काम करने को तैयार थी। चूंकि कोई नहीं जानता था कि वह एक यहूदी है, इसलिए उसे बख्शा जाता, लेकिन उसने कोई आसान रास्ता नहीं निकाला। अगुवओं में किसी भी समय किसी का भी सामना करने का साहस होना चाहिए। हमें डर लग सकता है, लेकिन हमें इस डर को सही काम करने से रोकने नहीं देना चाहिए।

क्याआप में दूसरों के लिए सही काम करने का साहस है, भले ही इससे आपको बहुत बड़ा खतरा क्यों न हो? क्या आप इस डर से संघर्ष करते हैं कि दूसरे आपके बारे में क्या सोचेंगे या आपके साथ क्या करेंगे? आप अपने डर पर विजय कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

7-एक ईश्वरीय महिला अगुवा अपने दोस्तों के प्रति वफादार होती है (रूथ)

वफादारी सभी मसीहीयों के लिए महत्वपूर्ण है। आपने दोस्तों के साथ उनके किसी भी हालत में खड़े रहना महत्वपूर्ण है। यीशु हमारे साथ यही करता है। कभी-कभी कीमत चुकानी पड़ती है, बलिदान देना पड़ता है। कुछ भी हो, हमें वफादार रहना चाहिए। रूथ ने अपने देश में भविष में होने वाले विवाह और परिवार को एक विदेशी भूमि में जाने के लिए त्याग दिया, जहाँ उसे केवल अपनी बूढ़ी सास, जिसके पास उसकी मदद करने वाला कोई नहीं था, की देखभाल करने के लिए उसे अस्वीकार कर दिया जाएगा, (रूथ 1)। उसने कहा, "जहाँ तुम जाओगी मैं जाऊँगी, जहाँ तुम रहोगे मैं रहूँगी। तेरी प्रजा मेरी प्रजा होगी, और तेरा परमेश्वर, मेरा परमेश्वर” (रूथ 1:16-18)। ईश्वरीय अगुवों को अपने मित्रों के प्रति, उन लोगों के प्रति वफादार होना चाहिए जिन्होंने अतीत या वर्तमान में उनकी सहायता की हो ।

क्या आपको जानने वाले कहेंगे कि आप एक वफादार व्यक्ति हैं? क्या आप उन लोगों को याद करते हैं जिन्होंने अतीत में आपकी मदद की है और अब आप उनकी मदद करने के लिए जो कर सकते हैं वह करते हैं? क्या आप अपने दोस्तों के लिए बलिदान करते हैं, भले ही वे आपकी मदद के लिए कुछ नहीं कर सकते?

8-एक ईश्वरीय महिला अगुवा कभी इतनी व्यस्त नहीं होती हिया की वह महत्वपूर्ण काम ना करे (मार्था)

मरियम और मार्था यीशु की मित्र थी (लूका 10)। वह अक्सर उनके घर जाता था। लेकिन एक समय मार्था खाना बनाने में व्यस्त थी जब उसके लिए बेहतर होता कि वह अपनी बहन मरियम की तरह यीशु के साथ समय बिताती। मार्था कुछ गलत नहीं कर रही थी; वास्तव में यीशु और अन्यों के लिए भोजन बनाना अच्छा कार्य था। लेकिन वह कुछ बेहतर खो भी रही थी - यीशु के साथ बैठना और उससे सीखना। हम इस कहानी से अपने समय को प्राथमिकता देने के महत्व को सीख सकते हैं। हम भी अच्छे कामों में इतने व्यस्त हो सकते हैं कि हम सबसे उत्तम करने से चूक जाते हैं। अगर हम हर दिन यीशु के साथ

समय बिताने, या किसी ज़रूरतमंद की मदद करने, या अपने परिवार की सेवा करने में इतने व्यस्त हैं, तो हम मार्था की तरह हैं। ईश्वरीय अगुवे लचीले बने रहते हैं ताकि वे पहचान सकें और वही कर सकें जो सबसे महत्वपूर्ण है, भले ही यह वह नहीं है जो करने की उन्होंने योजना बनाई होती हो।

क्या आप हर दिन प्रार्थना और बाइबल अध्ययन में अच्छा समय बिताने में इतने व्यस्त हैं? क्या आप कलीसिकी या कार्यों मांगों के कारण अपने परिवार की लापरवाही करते हैं? क्या आप किसी जरूरतमंद की सुनने और उसके साथ प्रार्थना करने के लिए जो कर रहे होते हैं उसे रोक सकते हैं? जब कुछ ऐसा जो अनपेक्षित है सामने आता है तो क्या आप अपना कार्यक्रम बाधित कर सकते हैं?

9-एक ईश्वरीय महिला अगुवा प्यार से सुधारती है

आखिरी महिला जिसे हम देखेंगे, वह प्रिसिला है, जो प्रारंभिक कलीसिया की एक प्रतिभाशाली शिक्षिका और लेखिका है। उसने अपने पति अक्विला के अधिकार में सेवा की। जब प्रतिभाशाली उपदेशक अपुल्लोस ने उनकी कालिसिया में बात की, तो उसने महसूस किया कि उसने(अपुल्लोस ने)अपने शिक्षण में कुछ महत्वपूर्ण छोड़ दिया है। प्रिस्किल्ला ने आपने पति के साथ उसे एक तरफ ले गयी और "उसको परमेश्वर के मार्ग के बारे और अधिक सटीक रूप से समझाया" (प्रेरितों के काम 18)। उसने उसे सार्वजनिक रूप से नहीं रोका, लेकिन बाद में उससे निजी तौर पर बात की। वह इस विषय पर कैसे संपर्क करती है और कैसे उसने सच्चाई को उसके सामने प्रस्तुत किया है, इस बारे में वह होशिआर और सावधान थी। उसने उसे शर्मिंदा या लजित नहीं किया। उसने जो किया वह उसकी मदद करने और सुधारने के लिए था, ना कि उसे किसी भी तरह से चोट पहुँचाने के लिए। उसने प्रेम और नम्रता से सच बोला (इफिसियों 4:15), लेकिन उसने सच ही बोला। जब आपको ऐसा करने की आवश्यकता हो, तो सुनहरे नियम को याद रखें और दूसरों से उस तरह से बात करें जैसे आप चाहते हैं कि वे आपसे बात करें यदि आपको सुधार की आवश्यकता होती (मत्ती 7:12)।

क्या आप दूसरों को नम्रता से सुधारने में सक्षम हैं? क्या अब आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसे सुधारने की आवश्यकता है? सुनहरी नियम को याद करते हुए आप इसे सबसे अच्छा कैसे कर सकते हैं? जब कोई आप में कुछ ठीक करने की कोशिश करता है तो आप कैसे प्रतिक्रिया देते हैं? क्या आप नम्रता से सुनते और सीखते हैं, या आप गुस्से में प्रतिक्रिया करते हैं?

बाइबल में और भी बहुत सी अच्छी स्त्रियाँ हैं जिनसे हम और भी बहुत कुछ सीख सकते हैं। उनके बारे में पढ़ने और उनके जीवन से सबक लेने के लिए कुछ समय निकालें। इन महिलाओं से हम सीखते हैं कि एक ईश्वरीय अगुवा :

1. शैतान (ईव) द्वारा धोखा खा सकता है

2. स्वेच्छा से दूसरों को प्रादान करता है (रिबका)

3. पाखंड का सामना करता है (तामार)

4. असहायों की मदद करता है (मरियम)

5. अपने अनुयायियों को प्रोत्साहित करता है (दबोरा)

6. साहसी होता है (एस्तेर)

7. अपने दोस्तों के प्रति वफादार होता है (रूथ)

8. इतना व्जोयस्त नहो होता की जो महत्वपूर्ण है उसे छोड़ दे । (मार्था)

क्या आपके पास ये हैं? अब आपके जीवन में क्या -क्या स्पष्ट हैं? आप में किस -किस की कमी है? सुधार शुरू करने के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता है? इन चीजों के लिए प्रार्थना करें और परमेश्वर से मदद मांगें कि आप इनमें से प्रत्येक को अपने जीवन में शामिल कर सकें ।

11. इस पुस्तक के लेखक से नेतृत्व के सबक

मैंने अपने जीवन में सीखे गए पाठों को सारांशित करते हुए एक अध्याय शामिल करने का निर्णय लिया है। मैंने लगभग 50 वर्षों तक सेवकाई की है, उनमें से लगभग 40 वर्ष एक चर्च में पासबानी करने के हैं। मैं किसी भी तरह से बाइबल में अगुवों के बराबर होने का होने का दावा नहीं करता, जिन्हें हम पहले ही देख चुके हैं, लेकिन परमेश्वर धैर्यपूर्वक मुझ में काम कर रहा है और जो कुछ उसने मुझ में किया है, मैं उसकी गवाही देना चाहता हूं। अगर वह मेरे लिए ये काम कर सकता है, तो वह आपके लिए भी कर सकता है।

1-एक ईश्वरीय अगुवा जानता है कि परमेश्वर को उसकी आवश्यकता नहीं है लेकिन उसे   परमेश्वरकी आवश्यकता है

पहला और सबसे महत्वपूर्ण सबक जो मैं साझा करना चाहता हूं वह यह है कि परमेश्वर को मेरी जरूरत नहीं है, लेकिन मुझे उसकी जरूरत है। हालांकि यह स्पष्ट प्रतीत हो सकता है, जबकि यह कुछ ऐसा है जिसे हम हमेशा अपने दिमाग में जानते हैं, फिर भी ऐसा लगता है कि हमें वास्तव में इस सच्चाई की गहराई तक पहुचने में कुछ समय लगता है।

जब मैंने सेवकाई शुरू की, तो मैं परमेश्वर के लिए अपने उपहारों और प्रतिभाओं का उपयोग करने के अवसर पर बहुत उत्सक होता था। मैं बहुत कुछ हासिल करना चाहता था। मैं "परमेश्वर से बड़े बड़े कामों की आशा रखता, और परमेश्वर के लिये बड़े बड़े काम करना चाहता।" मुझे पता था कि इन इच्छाओं को पूरा करने के लिए मुझे उसकी मदद की ज़रूरत है, लेकिन मुझे इसमें कोई संदेह नहीं था कि परमेश्वर की सहायता से वे सब पूरी होंगी। हालाँकि, मैं जैसे बढ़ता गया, उतना ही स्पष्ट रूप से मैं देखने लगा कि मेरे पास देने के लिए कुछ भी नहीं था। यह मंडली कार्य क्रिया (टीम वर्क ऑपरेशन) नहीं है; यह सब उसकी कृपा और दया है। मुझे ऐसा लगता है कि जैसे जब एक पिता आपने बेटे के पीछे खड़े होकर , अपने बेटे के चारों ओर अपनी बाहों को लपेटे हुए बेटे के साथ आपने हाथों से गेंद के साथ संपर्क बना रहे बल्ले को पकड़े होता है और बेटा सोच रहा हो की वह बल्ले से एक मील तक का शाट आसानी से मार सकता है । मेरे स्वर्गीय पिता की बाहों को मेरे चारों ओर लपेटे बिना, मैं इसे हर बार एक मील का शाट मारने से चूक जाता। समय-समय पर, जब मैं चीजों को अपने तरीके से करने पर जोर देता हूं, तो परमेश्वर मुझे दिखाता है कि मैं अपनी इच्छा का उत्पादन करने में कितना असमर्थ हूं।

वास्तव में यह मेरे खेल नहीं है; यह सब उसका खेल है! जैसे-जैसे मैं आध्यात्मिक रूप से धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से परिपक्व होता जाता हूं, मुझे लगता है कि परमेश्वर बड़ता और बड़ता जा रहा है। मैं, तुलना में , छोटा और छोटा होता जा रहा हूं। और यह कोई बुरी भावना नहीं है! यह कुछ ऐसा है जो मुझे हल्का करता है, मतलब "आपने आप को जाने दो और परमेश्वर को आने दो " के बारे में है। मैंने, जबकि,

सेवकाई की मात्रा को नज़र में रखे हुआ था, परमेश्वर गुणवत्ता में अधिक रुचि रखता था । जब मुझे लगता है कि मेरे पास एक बुरा उदाहरण देने के अलावा कुछ नहीं है, तो वह मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कुछ करता है।

एक वास्तविक शांति है जो परमेश्वर को परमेश्वर होने देने के साथ आती है, यह पहचानने के साथ कि उसको मेरे द्वारा यहाँ अपना राज्य चलाने की आवश्यकता नहीं है, और विनम्रतापूर्वक इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि मैं उसके बिना कुछ भी नहीं कर सकता। जब वह केवल शब्दों में ना रह कर हकीकत हो जाता है, लेकिन मेरे जीवन में वास्तविकता को मंजूर करता है, तो मुझे उसकी आवाज़ और अधिक सुनाई देना शुरू हो जाती है । मैं जो कुछ कर रहा होता हूं उसमें उसको मेरी मदद करने के लिए कहने में कम समय बिताता हूं और उससे अधिक पूछता हूं कि वह मुझसे क्या करना चाहता है। मैं अपनी कुछ सबसे बड़ी योजनाओं को किनारे पर वीराने में पड़ी हुई देखता हूं, लेकिन मुझे यह लगता है कि उसने मुझे कई बार लोगों के जीवनो को उस तरह और उस समय पर छूने के लिए इस्तेमाल किया है जिस तरह और जब मैंने उम्मीद नहीं की होती थी। मैं सीख रहा हूं कि लोग कार्यक्रम से पहले आते हैं। मैं यहां अपने लोगों की सेवा करने के लिए हूं; वे यहां मेरे कार्यक्रम की सेवा के लिए नहीं आयें हैं। मुझे अधिक शांति और अधिक धैर्य मिला है क्योंकि मैं जानता हूं कि यदि मैं उसकी इच्छा में हूं, तो वह जब भी चाहे जो भी परिणाम चाहेगा, वह लाएगा। परमेश्वर सफलता को संख्याओं (लोगों, डॉलर, संपत्ति, आदि) से नहीं, बल्कि विश्वासयोगता से मापता है। इसलिए मैं यह सुनिश्चित करने के लिए अधिक से अधिक से अदिक समय इस में व्यतीत करता हूं कि मैं वही कर रहा हूं जो वह चाहता है और कम से कम समय इसमें कि मैं उसे मेरी योजनाओं को आगे बढ़ाने और आशीश देने के लिए कोशिश करू (गलातियों 2:20; रोमियों 12:1-2)।

यदि परमेश्वर ने अपने अनुग्रह और सहायता को आपके जीवन से रोक दे , तो कैसी हालत होगी ? आप उसकी मदद के बिना अपने दम पर उसके लिए क्या हासिल कर सकते हैं? आप इसे कितनी बार करने की कोशिश करते हैं? जो कुछ भी होता है उसके लिए परमेश्वर को श्रेय देना के लिए आपके लिए कितना स्वाभाविक है?

2-एक ईश्वरीय अगुवा जानता है कि जितना अधिक वह बढ़ता है उतना ही उसे बढ़ने की आवश्यकता होती है

जैसे-जैसे मैं वर्ष डर वर्ष आध्यात्मिक रूप से विकसित हुआ हूं, वास्तव में अरमेश्वर कौन और क्या हैं, इसके बारे में मेरी ज्ञान परिपक्व हो गया है। यह महसूस करने के बजाय कि मैं मसीह -समानता के लक्ष्य के करीब पहुच गया हूँ, मुझे ऐसा लगता है कि मैं अभी बहुत दूर हूँ। मैं अपने जीवन में अधिक से अधिक क्षेत्रों को देखता हूं जो उसकी पूर्णता के स्तर तक नहीं जाते हैं। जब मुझे कमजोरी के एक क्षेत्र में जीत मिलनी शुरू हो जाती है, तो मुझे पांच दिखाई देते है जिन पर काम करने की जरूरत होती है! जितना अधिक मैं बढ़ता हूं, उतना ही मुझे पता चलता है कि मुझे अभी और कितना बढ़ना है! मेरे मन और हृदय में परमेश्वर जितना बड़ा होता जाता है, उसके और मेरे बीच की खाई उतनी ही बड़ी होती दिखने लगती है।

मेरे लिए यह जानना उत्साहजनक है कि पौलूस ने भी इसका अनुभव किया। अपनी सेवकाई की शुरुआत में, उसने लिखा कि वह सभी प्रेरितों में सबसे छोटा था। बाद में, उसने कहा कि वह सभी विश्वासियों में सबसे छोटा था। अंत में, उसने पहचान लिया कि वह सभी लोगों में सबसे छोटा है। यह इस तरह काम

करता है: जितना अधिक हम बढ़ते हैं उतना ही हम जानते हैं कि हमें बढ़ने की जरूरत है। यह एक अलमारी का दरवाजा खोलने और अपने जीवन में एक नया 'नार्निया' पाने जैसा है जिसे पवित्र आत्मा के नियंत्रण में आने की आवश्यकता है!

मैं अपने जीवन के शेष वर्षों की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, यह जानते हुए कि परमेश्वर मुझमें कार्य करता रहेगा। सभ कामों के बावजूद, जिन्हें करने की आवश्यकता है, मैं वर्षों में पीछे मुड़कर देखता हूँ और देख सकता हूँ कि उसने कब मेरा परिवर्तन कीया था । मुझे पता है कि वह ऐसा करता रहेगा । मेरे जीवन में हमेशा ऐसे क्षेत्र होंगे जहां काम की जरूरत है। कुछ परतो बहुत काम करने की ज़रूरत है, जबकि अन्य ने वर्षों में प्रगति की है। यह एक मूर्तिकार की तरह है जो एक मॉडल को तराशता है। सबसे पहले, वह संगमरमर के बड़े टुकड़ों को दर्द से हटाता है जो अंतिम उत्पाद का हिस्सा नहीं हैं, फिर वह इसे रगड़ना शुरू कर देता है, और अंत में पॉलिश करता है। इसके बाद वह दूसरे हिस्से में चला जाता है और फिर से हथौड़े और छेनी से शुरू करता है। क्या आप उसे अपने जीवन में इस तरह काम करते हुए देख सकते हैं? इसके बारे में सोचें और आप उसका कार्य देखेंगे। वह मास्टर मूर्तिकार है और आपको अपने पुत्र की छवि बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। उसका काम कभी-कभी दर्दनाक हो सकता है, लेकिन उत्पाद हमेशा बहुमूल्य होता है! (फिलिप्पियों 1:6; रोमियों 7:14-19)

पिछले वर्ष में आप आध्यात्मिक रूप से सबसे अधिक कहाँ बढ़े हैं? क्यों? आपको खिंचाव और परिपक्व करने के लिए परमेश्वर अभी आप पर कहाँ कार्य कर रहा है? वह आप में जो काम कर रहा है, उसमें आप क्या मदद कर सकते हैं?

3-एक ईश्वरीय अगुवे के पास अपने नंबर 1 लक्ष्य के रूप में परमेश्वर के साथ घनिष्ठता होती है

मेरे लिए नजदीकी स्वाभाविक रूप से या आसानी से नहीं आती है। मेरे लिए आपने काम के पीछे छिपे रहना और व्यस्त रहना आसान है। हालाँकि, मेरे दिल में हमेशा से ही परमेश्वर को और गहराई से जानने की गहरी इच्छा रही है, कि वास्तव में उसके साथ यथासंभव पूर्ण रूप से जुड़ा रहूँ । अपनी सेवकाई की शुरुआत में मैंने परमेश्वर के साथ 'नजदीकी ' को अपना पहला लक्ष्य बना लिया। फिलिप्पियों (3:7-14) के लिए पौलुस के शब्दों ने यीशु को "जानना" चाहने के बारे में मेरे दिल में जड़ें जमा ली हैं। मैं सिर्फ उसके बारे में नहीं उसे जानना चाहता हूँ !

जब मैं अपने जीवन को पीछे मुड़कर देखता हूं, तो मैं परमेश्वर को धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से इसे अपने जीवन में लाते हुए देख सकता हूं। उसने मुझे भावनात्मक नजदीकी के बारे में सिखाने के लिए मेरी पत्नी और बच्चों का इस्तेमाल कीया है। वास्तविक नजदीकी की गुणवत्ता और मात्रा दोनों विकसित करने में समय लगता है। यह हर रिश्ते की सचाई है, जो परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते में भी लागु होता है । इसके लिए एक बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है: समय, भेद्यता और विनम्रता जो केवल एक हिस्सा ही हैं।

डलास विलार्ड ने एक बार कहा था, "परमेश्वर के साथ घनिष्ठता का सबसे बड़ा दुश्मन परमेश्वर के लिए सेवा करना है।" अधिक से अधिक उत्पादन में लिपटे रहना आसान है। हम दूसरों को और यहां तक कि परमेश्वर को भी इस नजरिये से देखना शुरू करते हैं कि वे, हमें हमारे जीवन में और अधिक हासिल करने में, कैसे मदद कर सकते हैं। एक सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए परमेश्वर और अन्य लोगों के साथ काम करना सुरक्षित और अनुमानित है। पुरुष विशेष रूप से, जो स्वाभाविक रूप से उत्पादन उन्मुख हैं

और चुनौतियों और प्रतिस्पर्धा पर कामयाब होते हैं, आसानी से परमेश्वर के लिए सेवा को परमेश्वर के साथ संबंध की जगह दे सकते हैं।

हालाँकि, मैंने पाया है कि परमेश्वर के साथ घनिष्ठता का कोई विकल्प नहीं है। प्रार्थना और आराधना में बिताया गया समय, जब उसकी आत्मा मेरी सेवा करती है, मधुर संगति का समय बन सकता है, जिसकी मुझे किसी भी चीज़ से अधिक इच्छा होती है। उसके साथ बिताया गया मेरा समय केवल काम से संबंधित मुद्दों (क्या करना है, कैसे, आदि) के बारे में नहीं हो सकता है। यह रिश्ते के बारे में होना चाहिए - उसके लिए मेरी ज़रूरत, उसके लिए मेरा प्यार, उसकी पूजा, आदि। शादी में भी ऐसा ही है। रिश्ते तब ही नहीं बढ़ते जब संचार केवल, एक सामान्य लक्ष्य की दिशा में एक साथ अधिक कुशलता से कार्य करने के तरीके के बारे में होता है। रिश्ते तब बढ़ते हैं जब हम अपने साथियों की सुनते हैं, अपने दिल से बोलते हैं, अपने प्यार और उनके प्रति सराहना साझा करते हैं और बदले में उन्हें हमसे प्यार करने देते हैं।

नजदीकी का कोई सरल सूत्र नहीं है। यह कुछ ऐसा होना चाहिए जो आप किसी और चीज से ज्यादा चाहते हैं, नहीं तो ऐसा नहीं होगा। इसमें समय, भेद्यता और विनम्रता लगती है। लेकिन यह निश्चित रूप से इसके मूल्य का है। स्वर्ग कैसा होगा! यह अब धरती पर स्वर्ग का स्वाद है। ज़रूर, हम स्वर्ग में परमेश्वर की सेवा करेंगे, लेकिन यह उसके साथ सच्ची घनिष्ठता पर आधारित होगा। जब हम अभी इसका अनुभव करना शुरू कर सकते हैं तो फिर तब तक प्रतीक्षा क्यों करें ? (फिलिप्पियों 3:10; व्यवस्थाविवरण 6:4-5)

1 से 10 के पैमाने पर, आप कहाँ कहेंगे कि आप अपने साथी के साथ घनिष्ठता में हैं? 1 से 10 के पैमाने पर, आप कहाँ कहेंगे कि आप परमेश्वर के साथ अपनी घनिष्ठता में हैं? ईमानदारी से अपने आप से पूछें कि परमेश्वर के साथ आपकी घनिष्ठता बढ़ने में किस चीज से रूकावट आती है। रास्ते में कौन-सी रुकावटें हैं? आप उनके बारे में क्या कर सकते हैं?

4-एक ईश्वरीय अगुवा जानता है कि हम अपने उपहारों के उपयोग से अपने मूल्य का मूल्यांकन नहीं कर सकते

एक और महत्वपूर्ण सच्चाई जो मैंने सीखी है वह यह है कि एक व्यक्ति के रूप में मेरी योग्यता या विकास का मूल्यांकन केवल परमेश्वर द्वारा मुझे दिए गए उपहारों का उपयोग करने की मेरी क्षमता से नहीं है। मेरे आध्यात्मिक उपहार मुख्य रूप में शिक्षण/प्रचार और मशवरा है। जैसा कि मैंने चार दशकों तक उनका अभ्यास किया है, मैं देख सकता हूं कि इन क्षेत्रों में विकास और सुधार हुआ है। मेरी पत्नी कहती है कि मैं अब तक की सेवकाई में अतिउत्तम हूँ। मुझे होना भी चाहिए, क्योंकि मैंने इन कौशलों का सम्मान करते हुए वर्षों में हजारों घंटे बिताए हैं। बीते दिनों को देखना और इन क्षेत्रों में किए गए सुधार और प्राप्त योग्यता को देखना अच्छी बात है।

मैं इसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, क्योंकि यह उसका अनुग्रह और उसकी आत्मा है जिसने ये सब कुछ कीया है। हालाँकि मुझे इस बात का कोई भ्रम नहीं है कि मैं इसे अपने दम पर कर सकता था। मुझे जानता हूँ कि ये 'कौशल' कैसे दिखेंगे अगर वह अपनी आत्मा और अपनी मदद को मुझसे वापस ले लेता है । अपने दम पर मैं इन क्षेत्रों में एक वास्तविक विफलता हूँगा। इनका श्रेय उसी को जाता है।

मेरे लिए उस सच्चाई को महसूस करना महत्वपूर्ण है क्योंकि अगर मैं ऐसा नहीं करता, तो मैं यह सोचना शुरू कर देता हूं कि हो ना हो मैं जो करता हूं उसके कारण मैं एक व्यक्ति के रूप में बहुत अच्छा हूं। हमारे लिए, विशेष रूप से पुरुषों के लिए, हम जो हैं, इसके बजाय हम जो करते हैं, उसके आधार पर खुद का मूल्यांकन करना आसान होता है। हालांकि, एक व्यक्ति के रूप में मैं जो हूं, वह परमेश्वर द्वारा मुझे दिए गए उपहारों का उपयोग करने में मैंने जो सीखा है, उससे पूरी तरह अलग है। मैं जो कुछ भी पैदा करता हूं मैं उस से परिभाषित नहीं किया जाता हूँ , लेकिन जो मैं अंदरूनी रूप में हूँ, इससे हटकर मैं अपनी सेवकाई के कर्तव्यों को कैसे पूरा करता हूं।

जब परमेश्वर मेरी ओर देखता है, तो वह मेरे अंतिम उपदेश या परामर्श सत्र से प्रभावित नहीं होता है। वह मेरे दिल को देखता है, मेरी वास्तविकता में । यहूदा सेवकाई में इतना कुशल था कि उस पर पैसों की थैली की जिमेदारी रख दे थी । किसी को भी यहूदा पर शक नहीं हुआ जब यीशु ने कहा कि कोई उसके साथ विश्वासघात करेगा। यहूदा शायद सबसे प्रतिभाशाली और मिलनसार शिष्यों में से एक था। वह बहुत अच्छा काम कर सकता था। लेकिन इनमें से कोई भी मायने नहीं रखता था, है की नहीं ?

मैं दूसरों को प्रभावित करने के लिए परमेश्वर के उपहारों का उपयोग नहीं करना चाहता, ना परमेश्वर को और ना खुद को। उसने मुझे जो दिया है और जो मेरे माध्यम से करता है उसका मैं आनंद ले सकता हूं, लेकिन मैं इसका श्रेय खुद नहीं ले सकता। ना ही मैं एक इंसान के रूप में खुद का मूल्यांकन सिर्फ इस बात से कर सकता हूं कि मैं कैसा प्रदर्शन कर सकता हूं। और आप भी नहीं कर सकते। इसलिए यदि आप परमेश्वर द्वारा आपको दिए गए उपहारों और प्रतिभाओं का उपयोग करने में अधिक प्रभावी और कुशल हो रहे हैं - बढ़िया! लेकिन इसका श्रेय मत लें। अपने मूल्य या अपने आध्यात्मिक विकास का मूल्यांकन करने के लिए इसका उपयोग ना करें। आपका उपयोग करने और उन चीजों को आपके माध्यम से करने के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें, लेकिन उनका श्रेय ना लें। वे वही हैं जो आप करते हैं (भगवान की कृपा से), नाकि आप जो हैं! (1 कुरिन्थियों 15:10; रोमियों 15:17)

आप अपने आत्मिक वरदानों के सफल प्रयोग पर कितना जोर देते हैं? क्या आप उन पर गर्व करने के लिए ललचाते हैं? यदि परमेश्वर ने अपने अनुग्रह और शक्ति को आपके जीवन से हटा दिया, तो क्या परिवर्तन होगा? आप अपने आध्यात्मिक विकास को कैसे मापते हैं? परमेश्वर इसे कैसे मापता है?

5-एक ईश्वरीय अगुवे जानता है कि विनम्रता स्वाभाविक रूप से कभी नहीं आती

जैसा कि मैं अपने सेवकाई के जीवन में सीखे गए पाठों के बारे में सोचता हूं, मुझे गर्व के साथ अपनी लड़ाई को भी शामिल करना चाहिए। अभिमान बहुत ही भरमाने वाली चीज हो सकती है, लेकिन यह अत्यंत खतरनाक है! जब मुझे लगता है कि मैंने इसे जीवन के एक क्षेत्र में खत्म कीया है, तो यह दूसरे क्षेत्र में आ जाता है। इतना ही नहीं, मेरे लिए इसे अपने जीवन में पहचानना बहुत कठिन है! मैं इसे दूसरों में आसानी से पहचान सकता हूं, लेकिन मैं अपने जीवन में इसके प्रति लगभग पूरी तरह से अंधा हूं।

सबसे अच्छा काम जो मैं कर सकता हूं वो है कि परमेश्वर से यह कहता रहूँ कि मुझे गर्व देखता रहे और मुझे इससे दूर रखे । मैं वास्तव में गर्व से अभिनय नहीं करना चाहता। लेकिन मैं भी अक्सर इसके शुरुआती दौर में इससे अनजान रहता हूं। प्रतिदिन मुझे प्रर्मेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह मुझे इससे दूर रखे, मुझे यह दिखाए, और इससे बचने में मेरी सहायता करे। मैंने इससे होने वाले नुकसान और इसको को प्रकट करने वाले धोखेबाज तरीकों का एक स्वस्थ सम्मान करना सीखा है। यह मेरे हिट होने पर 'अगर' की बात नहीं है, लेकिन 'कब' हिट करता है, क्योंकि यह निश्चित रूप से होगा ही होगा।

इससे पहले कि मैं इसे पहचानूं, मेरी पत्नी ने मुझे गर्व की ओर इशारा करने में मेरी सबसे बड़ी मदद की है। हमेशा सही रहने की चाहत , रचनात्मक आलोचना के खिलाफ प्रतिक्रिया करना, दूसरों के बारे में छोटी-छोटी आलोचनात्मक बातें करना , अन्य सेवकाईयों के प्रति दृष्टिकोण जो मेरे साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं या चीजों को अलग करते हैं, ये और अन्य भरमाने वाले तरीके हैं जिनसे वह मेरे देखने से पहले ही गर्व को देख सकती है। असफलता की तरह महसूस किए बिना अपनी असफलताओं को स्वीकार करना मेरे लिए कठिन है। जब मैं गलत होता हूं तो खुद से प्यार करना और दूसरों को मुझसे प्यार करने देना, आसान नहीं है। यह सब गर्व के बारे में है।

अभिमान सभी पापों की जड़ में है। आत्म-केंद्रितता परमेश्वर -केन्द्रता और अन्य-केन्द्रता के विपरीत है। यह हमारे 'मांस' का इतना बड़ा हिस्सा है कि जब तक हम इन शरीरों में रहेंगे तब तक हमें इससे निपटना होगा। हमारे साथ परमेश्वर के धैर्य और दया के लिए उसका का धन्यवाद हो ! (नीतिवचन 11:1; 16:18; दानिय्येल 4:37)

गर्व के साथ आपकी सबसे बड़ी समस्या कहां या कब होती है? आप इसके बारे में क्या कर सकते हैं? आप आलोचना का जवाब कैसे देते हैं? आप दूसरों के प्रति कितने आलोचनात्मक हैं जो आपको चुनौती देते हैं? अपने साथी या सबसे अच्छे दोस्त को ईमानदारी से आपको यह बताने के लिए कहें कि वे आपके जीवन में कहाँ गर्व देखते हैं। हर बार जब वे आपको गर्व से प्रतिक्रिया करते हुए देखें तो उन्हें इसके बारे आपको बताने के लिए कहें। एक विस्तृत सूची लिखें कि आपके जीवन में अभिमान कहाँ प्रकट होता है। अगले सप्ताह तक प्रतिदिन इसके बारे में प्रार्थना करें।

6-एक ईश्वरीय अगुवा जानता है कि उसकी पत्नी माणिकों से भी अधिक मूल्यवान है

परमेश्वर ने मुझे एक अद्भुत पत्नी का अशीषत कीया है। उसके बिना, मैं वह नहीं होता जहाँ मैं आज हूँ। जितना हमारा विवाहित रिश्ता पुराना होता जाता है उतना ही अधिक मैं उसकी एक अच्छे व्यक्ति होने के लिए सराहना करता हूँ, और उतना ही अधिक मैं इस तरह के एक विशेष उपहार/आशीष के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ। मेरे जीवन और मेरी सेवकाई में उसका पर्दे के पीछे का काम और विश्वास अमूल्य है। उसकी विश्वासयोग्यता , सवेदनशील प्रार्थना जीवन मेरे उन्मत्त व्यवसाय से अधिक परमेशवर के राज्य के लिए कार्य को पूरा करता है। वह मेरी सबसे बड़ी प्रार्थना समर्थक हैं।

उसके माध्यम से मैंने अपने लिए परमेश्वर के बिना शर्त प्यार के बारे में सीखा है, क्योंकि मैंने उसके माध्यम से इसे प्रदर्शित होते देखा है। मैं समझता हूं कि परमेश्वर क्षमा कर सकता है और करेगा , क्योंकि उसने इस बात का समय - समय पर उदाहरण दिया है। मैं परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर बेहतर ढंग से भरोसा कर सकता हूं क्योंकि मैं इसे आपनी पत्नी के जीवन में इसे जीवित देखते हूँ।

कभी-कभी हम सोचते हैं कि हम जीवन में और अधिक हासिल कर सकते हैं यदि यह हमारे साथियों और परिवारों की ज़रूरतों के लिए नहीं होता । हम उनके द्वारा लिए गए समय को लेकर अफ़सोस कर सकते हैं। शायद मैं अपनी पत्नी और परिवार के बिना कुछ अधिक मात्रा में हासिल कर सका होता, लेकिन वह टिक नहीं पाता। गुणवत्ता बहुत कम होती, और फिर भी, मुझे यकीन है कि मैं उसके बिना किसी तरह से जल गया होता या खुद को अयोग्य घोषित कर चूका होता ।

उसकी ज़रूरतों को पहले पूरा करना सीखना मेरी सेवकाई का कुछ बाहर नहीं जाता ; यह मुझे परिपक्व करके इसे समृद्ध करता है। मैं जो कुछ भी उसमें निवेश करता हूं वह कई गुणा वापस मिलता है। किसी को अपने आप से पहल पर रखना सीखना आसान नहीं होता है, लेकिन विवाह और सेवकाई में यहअनिवार्य होता है।

मैं जितना ऊमरदराज होता जाता हूं जीवन और सेवकाई में उतना ही आगे जाता हूं, उतना ही मुझे एहसास होता है कि एक अच्छी पत्नी का मूल्य माणिको से कहीं अधिक होता है। और इसी तरह से इस पुस्तक को पढ़ने वाली महिलाओं आप के लिए एक अच्छा पति है! (सभोपदेशक 31:10-12, 30-31; 1 पतरस 3:7)।

आप वास्तव में अपने साथी को कितना महत्व देते हैं? आप उन की मांगों से, जो वे आप से करते हैं , कितनाअफ़सोस करते हैं ? अपने साथी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए आप वास्तव में क्या त्याग करते हैं? आपको और क्या करना चाहिए? आखिरी बार आपने उन्हें कब बताया था कि वे आपके लिए कितने मायने रखते हैं? ऐसा अभी करें (आज कुछ समय)।

7-एक ईश्वरीय अगुवा हमेशा याद रखता है कि उसका परिवार ही उसका पहला सेवकाई स्थान है

जब मैं अपने जीवन को पीछे मुड़कर देखता हूं, तो मेरे पास एक ऐसा दृष्टिकोण होता है जो आपमें से बहुत से जो युवा लोग हैं उनके पास नहीं है। मेरे बच्चे बड़े हो गए हैं, उनमें से ज्यादातर ने खुद शादी कर ली है। उनके जीवन पर मेरा प्रभाव काफी हद तक बना है। मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि उसने मुझे सेवकाई की शुरुआत में मेरे परिवार को मेरी नंबर एक मंडली बनाने के महत्व के लिए प्रेरित कीया । अन्य लोग आए और गए, लेकिन मेरा परिवार अभी भी मेरा परिवार है। मेरे बच्चों और मेरी पत्नी की तुलना में किसी दुसरे पर मेरा अधिक प्रभाव नहीं पड़ा है या ना कभी

पड़ेगा।

पृथ्वी पर रहते हुए यीशु की सर्वोच्च प्राथमिकता उनके शिष्यों का 'परिवार' था, ना कि भीड़, और ना ही नए कार्यक्रम और परियोजनाएँ। वह उन्हें और उनकी ज़रूरतों को सबसे पहले रखता था, अक्सर भीड़ से अलग हो जाता था या दूसरों को भेज देता इस लिए कि शिष्यों के साथ समय बिताए। आज उसके नमूने की हमें पालन करनी है। ऐसा कोई नहीं है जिसे आप अपने बच्चों की तुलना में पूरी तरह से पुन: पेश करेंगे। और आप उनमें आपने आप को अच्छे या बुरे के लिए पुनरुत्पादित करेंगे। आप आपना वजूद त्याग नहीं कर सकते; आप उनके जीवन को पूरी तरह से प्रभावित करेंगे। एकमात्र प्रशन यह है कि प्रभाव क्या होगा, यदि आप पर प्रभाव नहीं पड़ेगा। बच्चे नर्म मिट्टी की तरह होते हैं, जिसे आप बना रहे हैं और जो भी छवि आप चुनते हैं, उसमें ढाल रहे होते हैं। यहां तक कि अगर आप उनके साथ रहने के लिए इतने व्यस्त हैं कि समय नहीं निकल सकते तो यह उन में अस्वीकृति और महत्वहीनता की छवि बनाता है। आप उन्हें बना रहे हैं और किसी भी और से ज्यादा बनाएंगे।

यह शर्म की बात है कि कई पासबानो के बच्चे विद्रोह और अवज्ञा के लिए प्रसिद हो जाते हैं। वह किसका दोष है? परमेश्वर स्वयं कहता है कि यदि हम अपने परिवारों का प्रबंधन नहीं कर सकते हैं, तो हम उस्की कलीसिया का प्रबंधन नहीं कर सकते हैं। आपके बच्चों को आपकी कलीसिया से ज्यादा आपकी जरूरत है। यह बहुत बुरा है कि हम अपने अहंकार को परमेश्वर की सेवा में और दूसरों की नजर में अपनी

'सफलता' में इतना लपेट लेते हैं कि हम सबसे महत्वपूर्ण चीज को भूल जाते हैं। परमेश्वर ने हमें हमारे बच्चों को उसके लिए शिष्य बनाने के लिए दिया होता है। कुछ भी ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है! वह हमें कभी भी अन्य चीजों के लिए अपने बच्चों की लापरवाही करने के लिए प्रेरित नहीं करेगा। वे उसके लिए अनमोल हैं और वह उन्हें हमारे हाथों में सौंपता है। वह हमें कभी भी इतना अधिक नहीं देगा कि हमारे पास उनके लिए समय ही ना हो। यह गलत प्राथमिकताओं से आता है।

मेरे बच्चे बड़े हो गए हैं और अधिकतर चले गए हैं, लेकिन मेरे जीवन की सबसे बड़ी खुशी में से एक यह है कि वे प्रभु की सेवा करते हैं और उसका अनुसरण करते हैं। इस को छोड़ कर कि मेरे बच्चे सच्चाई पर चलते हैं, मुझे   कुछ अन्य सुनने में जयादा आनंद नहीं हो सकता " (3 यूहन्ना 4)। उनमें से प्रत्येक ने परमेश्वर के प्रति वफादार रहने और पूरे दिल से उसकी सेवा करने का चुनाव किया है। मुझे इसमें बहुत खुशी होती है, हालांकि मैं इसका श्रेय नहीं लेता। यह उनके और परमेश्वर के बीच की बात है, और मेरे लिए यह सोचने के लिए बहुत सारे सच शामिल हैं कि मैंने ऐसा किया है। मैं इस तथ्य में आराम कर सकता हूं कि उस समय जहां तक मैं सक्षम था, मैंने उनसे प्यार करने और उन्हें परमेश्वर के बारे में सिखाने की पूरी कोशिश की। मैं निश्चित रूप से पूर्ण नहीं था, और मेरे पास ऐसी ज़िम्मेदारियाँ थीं जो मेरे समय और ध्यान की माँग करती थीं, लेकिन मैं हमेशा से जानता था कि वे मेरी पहली प्राथमिकता थे , और मुझे उन्हें प्रभु के लिए विकसत करने में बहुत मज़ा आया। परमेश्वर को इसका श्रेय जाता है कि वे कैसे निकले, लेकिन मैं आभारी हूं कि मुझे बहुत अधिक पछतावे के साथ नहीं रहना पड़ा है। जैसा कि अक्सर कहा जाता है , "आपनी मृत्युशय्या पर कोई नहीं चाहता कि वे काम पर अधिक समय बिताते ! सुनिश्चित करें कि यह अभी आपके जीवन में सही है। (1 तीमुथियुस 3:4-5; तीतुस 1:6; नीतिवचन 22:6)

मुझे यकीन है कि आप सहमत होंगे और कहेंगे कि आपका परिवार आपकी नंबर 1 प्राथमिकता है, लेकिन अगर आपको इसे साबित करना पड़े तो क्या होगा? आप ऐसा कौन सा कठोर प्रमाण प्रस्तुत कर सकते हैं जो यह दर्शाता हो कि आप ने अपने बच्चों को आपने दुसरे कार्यभार से पहले सथान पर रखा है? यदि आपके बच्चे बात करने के लिए पर्याप्त बूढ़े होंगे (और शायद वे हैं) तो क्या वे कहेंगे कि वे जानते हैं कि वे आपके कार्य भर से पहले स्थान पर आते हैं?

8-एक ईश्वरीय अगुवा जानता है कि बाइबल हर साल बेहतर होती जाती है

कॉलेज और सेमिनरी में मैंने बाइबल के लिए, परमेश्वर का जीवित और प्रेरित वचन होने के रूप ,में एक बड़ी सराहना विकसित की। मेरे अंदर इसके लिए गहरी सम्मान भावनाए थी । यह मेरे व्यवसय का मुख्य साधन है। जैसे-जैसे मैं उम्र में बड़ता होता गया, इसके बारे में मेरा ज्ञान और इसको उपयोग करने का कौशल भी बढ़ता गया। जब मैं एक मसीही विश्वासी के रूप में अपने जीवन को पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि बाइबल के प्रति मेरे दृष्टिकोण में एक काबिल परिवर्तन हुआ है। मैं अब इसका पहले से कहीं अधिक सम्मान करता हूं, लेकिन मैं इसके लिए एक वास्तविक/हकीकी प्रेम भी विकसित कर रहा हूं! मैं इसे प्यार करता हूँ क्योंकि यह परमेश्वर को प्रकट करती है, और जितना अधिक मैं उसके बारे में जानता हूँ, उतना ही अधिक मैं उससे प्रेम करता हूँ।

अब यह मेरी सेवकाई को पूरा करने में मेरी मदद करने के लिए सिर्फ एक उपकरण नहीं है, यह परमेश्वर के लिए मेरी जीवन दाता स्रोत बन गई है, यह मेरा जीवन रक्षक रस्सा और मेरे जीवन में चट्टान सी बन गयी है। मैं ना केवल इसे पसंद करता हूं और इसकी सराहना करता हूं, मैं खुद को इसकी पूरी तरह से इसका मौताज़ (अति जरूरतमन्द) महसूस करता हूं। जितना बेहतर मैं बाइबल के तथ्यों को जानता हूँ,

उतना ही अधिक मुझे इसकी गहराई का एहसास होता है जिसकी ,इस जीवन में ,कभी भी थाह नहीं पाई जा सकती। मैं इसे आपनी समझ से अधिक इससे सीख रहा हूं, लकिन हाँ, आपने दिल से भी । यह मेरे लिए बहुत कीमती और खास बन गई है।

आध्यात्मिक युद्ध सेवकाई में मेरी भागीदारी ने मुझे सिखाया है कि केवल परमेश्वर का वचन ही अधिकार रखता है, अधिकार ना तो मेरा,ना किसी और का। जब हम इसका इस्तेमाल करते हैं तो शैतान और उसके राक्षसों को परमेश्वर के वचन का पालन करना पड़ता है । जब हम उस पर विश्वास करते हैं और उसे पेश करते हैं तो परमेश्वर के वचन में वास्तविक शक्ति होती है। इस प्रकार यीशु ने जंगल में प्रलोभनों पर विजय प्राप्त की, और यह आत्मा की तलवार है, जिसके बारे में पौलुस बात करता है - हमारा एकमात्र आक्रामक हथियार।

जैसे-जैसे मैं जीवन में आगे बढ़ता हूं, बाइबल मेरे लिए और भी आश्चर्यजनक होती जाती है। जितना अधिक मैं जानता हूँ, मैं पाता हूँ मैं वास्तव में इसे उतना ही कम जानता हूँ! एक बच्चे के लिए इसे समझना काफी आसान है, लेकिन सबसे बड़ा विद्वान इसके सिर्फ एक हिस्से को समझने में आपना पूरा जीवन बिता सकता है लेकिन कभी भी इसकी पूरी गहराई तक नहीं पहुंच पाता है। यह एक ही बार में हमारे मन, भावनाओं और आत्मा से बात करती है।

मैं उम्र में जितना बड़ा होता जाता हूँ, जीने के लिए उतना ही मेरा जीवन कम होता जाता है , उतना ही सख्ताई से मैं परमेश्वर के वादों से जुड़ता रहता हूँ, ना केवल इस जीवन के लिए बल्कि भविष्य के जीवन के लिए भी। मुझे अपने पढ़ने और अध्ययन करने में बहुत मात्रा को बढ़ाने में दिलचस्पी नहीं है, बल्कि केवल कुछ आयते ही क्यों ना हो उनकी गुणवत्ता में गहराई तक जाने में दिलचस्पी है। अपने पढ़ने में जल्दबाजी ना करें, धीमे चलें, ध्यान करें, किसी पद या वाक्यांश पर विचार करें, परमेश्वर को इसके माध्यम से आपसे बात करने के लिए कहें और वह जो कहता है उसे सुनें। गहरई में जाओ, जल्दी मत करो । (2 तीमुथियुस 3:16; भजन संहिता 119:9-11; इब्रानियों 4:12)

बाइबल के प्रति आपके बढ़ते प्रेम में आप कहाँ हैं? क्या यह सिर्फ आपके व्यापार का एक उपकरण है, या परमेश्वर का जीवित वचन है, जो आपके दिल से सच बोलता है? आप प्रतिदिन कितना समय भक्तिपूर्ण वचन के पड़ने और अध्ययन में व्यतीत करते हैं? आपका पसंदीदा बाइबल हिस्सा या वादा क्या है? क्यों?

9-एक ईश्वरीय अगुवा जानता है कि शैतान वास्तविक में है लेकिन परमेश्वर महान है

जब मैंने लगभग 50 साल पहले पासबानी शुरू की , तो मैंने कभी नहीं सोचा था कि मेरे पास आध्यात्मिक युद्ध में एक सेवकाई होगी। करीब 25 साल पहले तक मैं यह भी नहीं जानता था कि आध्यात्मिक युद्ध क्या होता है। मैं कुछ ऐसे मसीहीयों को जानता था जिन्होंने पाप से संघर्ष किया करते थे और ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि उन्होंने चाहे कितनी भी कोशिश की हो या उन्होंने परमेश्वर पर कितना भी भरोसा किया हो इसके बावजूद उन्हें विजय प्राप्त हई हो । मशवरे की कोई भी मात्रा उनकी मदद नहीं कर सकी हो । ऐसा लग रहा था कि उनसे भी कुछ बड़ा उन्हें नियंत्रित कर रहा है। मेरा एक बच्चा भी किसी शैतानी शक्सेति से प्रभावित हो रहा था। परमेश्वर ने अपनी दया से मेरे जीवन में कुछ लोगों को लाया जिन्होंने मुझे आत्मिक युद्ध और दुष्टात्माओं से मुक्ति के बारे में सिखाया।

पौलूस कहता है, "हम शैतान की युक्तियों से अनजान नहीं हैं" (2 कुरिन्थियों 2:5-11) लेकिन मैं बहुत अज्ञानी था। उस समय से मैं उन लोगों की सेवा कर रहा हूं जिन्हें आध्यात्मिक युद्ध काउसलिंग की आवश्यकता है। मैंने कई किताबें पढ़ी हैं और बहुत से लोगों से बात की है। परमेश्वर मुझे सिखा रहा है और मुझे यह सीखने में मदद कर रहा है कि कैसे उन लोगों की मदद की जाए जिन पर शैतान और उसकी ताकतों हमला करती है। इसका मुझ पर व्यक्तिगत रूप से सबसे बड़ा प्रभाव परमेश्वर में अपने विश्वास को गहरा करने और क्रूस की शक्ति की बेहतर सराहना करने के लिए हुआ है। सभ यीशु के नाम की शक्ति की जय करो ! (2 कुरिन्थियों 2:11; इफिसियों 6:10-12)

आप, अपने परिवार, अपनी सेवकाई और आपने आप के विरुद्ध दुश्मन की योजनाओं के बारे में कितने जागरूक हैं? यदि शैतान आपका या आपकी सेवकाई का विरोध करता, तो वह आपको हतोत्साहित करने और पराजित करने के लिए किस प्रकार की चीजों का उपयोग करता? इस पर विजय पाने के लिए आप क्या कर सकते हैं?

ये कुछ ऐसे सबक हैं जो परमेश्वर मुझे मेरे जीवन में सिखाता रहा है। मैं आपको उन सबकों की सूची बनाने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ जो वह आपको सिखा रहा है। यह, उसने जो कुछ आपके जीवन में किया है उसकी सराहना करने में आपकी मदद करेगा। यदि आप उन्हें मेरे साथ साझा करने में कोई आपत्ति नहीं हो तो मुझे उन्हें पढ़ना अच्छा लगेगा। उन्हें jerry@schmoyer.net पर भेजें

मैंने यहाँ अपने जीवन में सीखे गए कुछ सबक साझा किए हैं:

1. परमेश्वर को मेरी जरूरत नहीं है, मुझे उनकी जरूरत है

2. मैं जितना बड़ता हूँ, आपने आप को उतना ही दूर देखता हूँ

3. परमेश्वर के साथ घनिष्ठता अभी भी मेरा नंबर एक लक्ष्य है

4. हम अपने उपहारों के उपयोग से अपने मूल्य का मूल्यांकन नहीं कर सकते हैं

5. विनम्रता कभी स्वाभाविक रूप से नहीं आती

6. एक अच्छी पत्नी का मूल्य माणिक से कहीं अधिक होता है

7. मेरा परिवार मेरी पहली सेवकाई है

8. बाइबल हर साल बेहतर होती जाती है

9. शैतान वास्तविक है, लेकिन परमेश्वर महान है

क्या आपके पास ये हैं? अब आपके जीवन में क्या -क्या स्पष्ट हैं? आप में किस- किस चीज की कमी है? सुधार शुरू करने के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता है? इन चीजों के बारे में प्रार्थना करें और परमेश्वर से मदद मांगें कि आप इनमें से प्रत्येक को अपने जीवन में शामिल कर सकें।

12. 1 तीमुथियुस 3 और तीतुस 1 से नेतृत्व के सबक

पढ़िए 1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:5-9

जब हम नेतृत्व के बारे में सोचते हैं, तो हम आमतौर पर, जो कुछ एक व्यक्ति अगुवा के रूप में अपनी भूमिका निभाने में कार्य करता है, उसके बारे सोचते हैं । हालाँकि, बाहरी क्रियाए आंतरिक चरित्र पर आधारित होती हैं, ना कि हमारे व्यक्तित्व या ज्ञान पर। नेतृत्व सबसे पहले कुछ ऐसा है जो हम हैं, नाकि कि केवल कुछ ऐसा जो हम करते हैं। पौलुस ने 1 तीमुथियुस 3:1-7 और तीतुस 1:5-9 में ईश्वरीय अगुवों के लिए योग्यताओं को सूचीबद्ध किया है। प्रत्येक व्यक्ति को आंतरिक सचाई /शुद्धता और परिपक्वता के साथ लेना देना होता है। वे केवल एक सूची नहीं हैं जिसमें से हम चुन सकते हैं और उठा सकते हैं। वे एक व्यक्ति (एक ईश्वरीय अगुवा) का वर्णन करने के लिए एक साथ साथ रहते हैं । इस पूरी सूची को पूरी तरह से पूरा करने वाला एकमात्र व्यक्ति यीशु है; इसलिए जितना अधिक हम इन गुणों में बढ़ते हैं, उतना ही हम उसके जैसे बनते जाते हैं। आइए नेतृत्व के लिए इन आवश्यकताओं को देखें।

1-एक ईश्वरीय अगुवे को एक ईश्वरीय अगुवा बनना चाहिए

पहली बात जो पौलुस कहता है वह यह है कि एक व्यक्ति को एक ईश्वरीय अगुवा बनना चाहिए। उसे अवश्य ही "इस पर अपना मन लगाना" चाहिए और उसकी "इच्छा" करनी चाहिए (1 तीमुथियुस 3:1)। सेवा करने के लिए कभी भी किसी से बात ना करें, चाहे आप उनके बारे कितने ही अच्छे अगुवा बन जाने के बारे में क्यों ना सोचते हों । परमेश्वर को खुद इस इच्छा को उनके दिलों में डालना चाहिए, और फिर उन्हें वापस उसका अनुसरण करने और सेवा करने के लिए तैयार होकर उसका जवाब देना चाहिए। इन मूल सत्यों के बिना, कोई भी ईश्वरीय अगुवा नहीं बना सकता। कोई नहीं!

परमेश्वर की सेवा करने के लिए उसने इस इच्छा को आपके हृदय में कब डाला ? क्या आपके लिए इसे करने के लिए प्रतिबद्ध होना कठिन था? क्या आपने उसकी सेवा करने की इच्छा में अपना मन तबदील कर लिया है? उसकी सेवा करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करें। यदि आप हैरान होते हैं , कि क्या उसने आपको बुलाया है, तो मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूं कि यदि आप केवल घमंड या लालच से सेवा नहीं करना चाहते हैं तो आप के अंदर उसकी सेवा करने की यह इच्छा उससे ही आई है।

2-एक ईश्वरीय अगुवा में आंतरिक ईश्वरीय गुण होते हैं

उन लोगों के लिए जिन्हें बुलाया जाता है और वो सेवा करने की इच्छा से प्रतिक्रिया करते हैं, पौलूस 25 चरित्र लक्षणों का जिक्र करता है जो एक ईश्वरीय अगुवा का वर्णन करते है। इन्हें प्राप्त करने के लिए जीवन भर आध्यात्मिक विकास की आवश्यकता होती है, और यीशु के सिवाए कोई और इन सभी को पूर्णता तक प्राप्त नहीं कर पाया है। यह एक प्रक्रिया है जिसे हम शुरू करते है और जीवन भर जारी रखते हैं।

आंतरिक गुणों की पहली सूचि संतुलन है (1 तीमुथियुस 3:2)। यह किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करते है जो संयमित भी है और चरम सीमाओं से बचता है, कोई ऐसा जो आसानी से धोखा नहीं खाता या बहकाया नहीं जाता है, कोई ऐसा व्यक्ति जो हमेशा स्थिर और हिमतवाला बना रहता है और जो दबाव में आने पर भी नहीं टूटता है।

समझदार (1 तीमुथियुस 3:2) समान है लेकिन थोड़ा अलग है। ऐसे व्यक्ति आत्म-नियंत्रित, उचित और अच्छे निर्णय लेते है क्योंकि वे परिपक्वता और अनुभव के साथ समस्याओं का सामना करते हैं। जब कठोर निर्णय लेने पड़ते हैं तो वे अच्छा काम करते हैं।

साथ ही एक ईश्वरीय अगुवे को अनुशासित होना चाहिए (तीतुस 1:8)। इसका शाब्दिक अर्थ है "शक्ति पर नियंत्रण रखना ।" एक ईश्वरीय अगुवा भोजन, नींद या किसी अन्य चीज में अति आनंद नहीं भोगता है। वह जानता है कि कब ना कहना है (नीतिवचन 25:28)। वह प्रलोभन का आसान शिकार नहीं होता या बहुत अधिक पैसा खर्च करने वाले व्यक्ति नहीं होता है। वह क्रोध, अहंकार, लोभ या आलस्य को अपने ऊपर हावी नहीं होने देता।

1 से 10 के पैमाने पर, आप अपने जीवन में संतुलन और आत्म-नियंत्रण के आधार पर खुद को कैसे आंकेंगे? आपका साथी या सबसे अच्छे दोस्त आपको क्या अंक देंगें ? जरूरत पड़ने पर क्या आपके पास आत्म-नियंत्रण है? क्या कठिन परिस्थितियों में सलाह के लिए दूसरे आपके पास आते हैं क्योंकि आपके पास बुद्धिमानी से निर्णय लेने की प्रतिष्ठता है?

3-एक ईश्वरीय अगुवा के पास ईश्वरीय पारस्परिक संबंध होते हैं

एक ईश्वरीय अगुवा होने का अर्थ है कि हमें दूसरों के साथ बने रहने की ज़रूरत है। पौलुस ऐसे कई गुणों की सूची देता है जिनके ताहित परमेश्वर ईश्वरीय अगुवों से उम्मीद करता है कि वे दूसरों के साथ सही व्यवहार करें। एक ईश्वरीय अगुवा तेज-तर्रार या हिंसक नहीं हो सकता (तीतुस 1:7) (1 तीमुथियुस 3:3)। वह जल्दी या आसानी से क्रोधित नहीं हो सकता, या ऐसा व्यक्ति नहीं हो सकता जो दूसरों के साथ बहुत बहस करता हो (नीतिवचन 29:22)। इसमें, वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करता है, यह भी शामिल है । उसे दबाव में शांत रहना चाहिए। एक ईश्वरीय क्रोध है, धर्मी क्रोध है, जैसे कि जब यीशु ने सिके का लेंन देंन करने वालों को मंदिर से बाहर भेज दीया , लेकिन इसे नियंत्रण में किया जाना चाहिए और केवल उस पाप के खिलाफ किया जाना चाहिए जो इसकी मांग करता है। फिर भी हमें बहुत, बहुत सावधान रहना चाहिए कि कहीं हम स्वयं पाप में ना पड़ जाएँ (इफिसियों 4:26)। पौलुस आगे कहता है कि एक अगुवा झगड़ालू नहीं हो सकता (1 तीमुथियुस 3:3)। वह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हो सकता जो बहस करने के लिए जाना जाता हो। वह दूसरों का अपमान नहीं कर सकता जो उसका अपमान करते हैं या दूसरों की आलोचना करने वाला नहीं हो सकता । वह ऐसा व्यक्ति नहीं हो सकता जो बातचीत पर

हमेशा हावी होने वाला हो और उसे हमेशा हर चीज के बारे में सही होना का दावा ही करना है (नीतिवचन 20:3)। इसके बजाय, एक ईश्वरीय अगुवे को सुनने के लिए तैयार होना चाहिए, सीखने के लिए खुला होना चाहिए, और आवश्यकता पड़ने पर अपनी राय बदलने में सक्षम होना चाहिए। इस व्यक्ति के पास हर समय अपना रास्ता नहीं होना चाहिए। वे दबदबे वाले नहीं हैं (तीतुस 1:7), वे हठी या अभिमानी नहीं होते । वे दूसरों के साथ मिलते हैं और मंडली के अंग के रूप में अच्छा काम करते हैं। यह कहने के बाद कि हमें दूसरों के समान नहीं होना चाहिए, पौलुस यह भी कहता है कि हमें किस के जैसा होना चाहिए: नम्र (1 तीमुथियुस 3:3)। इसमें दूसरों के साथ धैर्य रखने, दयालु और विचारशील होने का विचार है। इसका अर्थ है झुकने के लिए तैयार रहना, क्षमा करना और किसी अकर्मण को नज़रअंदाज़ करना। लोग इस व्यक्ति द्वारा कभी भी ना तो नीचा देखा हुआ या आलोचना कीये गए महसूस करते हैं।

क्या आपकी पत्नी या बच्चे कहेंगे कि आपको बहुत गुस्सा आता है? क्या उन्हें लगता है कि आप आपने आपको हमेशा सही ही साबित करोगे ? क्या आप उनकी बात सुनने और अपना विचार बदलने के लिए तैयार हैं यदि वे अच्छी समझ रखते हैं? क्या दूसरे लोग आपको ऐसे व्यक्ति के रूप में देखते हैं जो आपने सभी व्यवहारों में धैर्यवान और दयालु है, चाहे जीवन में उनकी स्थिति कोई भी क्यों ना हो?

4. एक ईश्वरीय अगुवा की एक ईश्वरीय प्रतिष्ठा होती है

ये गुण इस बात से संबंधित हैं कि दूसरे लोग एक अगुवा के बारे में कैसा महसूस करते हैं और वे अपनी पीठ पीछे क्या कहते हैं। इसका इस बात से लेना-देना है कि वे दूसरों से आपका वर्णन कैसे करते हैं। प्रत्येक मसीही के लिए अच्छी प्रतिष्ठा होना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि हम यीशु का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह अगुवओं के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यहाँ परमेश्वर बताता है, कि हमारी प्रतिष्ठा कैसी होनी चाहिए।

वह एक ईश्वरीय अगुवे की प्रतिष्ठा को निन्दा स्तर से ऊपर (1 तीमुथियुस 3:2) और निर्दोष (तीतुस 1:6-7) अवस्था के रूप में वर्णित करता है। "निंदा से ऊपर" का शाब्दिक अर्थ है "झुर्रियों के बिना" और एक ऐसे लिबास की बात करता है जो चिकना और सिलवटों से मुक्त हो। अगुवओं का कोई संदिग्ध आचरण नहीं होना चाहिए, कोई गुप्त पाप नहीं होना चाहिए और दूसरों के साथ कोई अनसुलझा संघर्ष नहीं होना चाहिए। हमें ऐसे होना चाहिए कि दूसरे यह ना कह सकें कि हमने उन्हें धोखा दिया है या हमारे बारे यह सोचें कि हम लालची या अभिमानी है। "दोषरहित" होना इसी के समान है। यह एक कानूनी शब्द है और किसी ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जिस पर किसी भी प्रकार के किसी भी गलत कार्य का आरोप नहीं लगाया जाता है। हमें अगुओं के रूप में परिपूर्ण होने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन जब हम किसी को ठेस पहुँचाते हैं या कुछ गलत करते हैं, तो हमें तुरंत खुद को विनम्र करना चाहिए, माफी माँगनी चाहिए और इसे सही करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, पौलुस कहता है कि हमें आदरणीय होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:2)। यह एक ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो एक मसीही जन के रूप में सज्जन है और सम्मान कीये जाने के योग्य है।

ऐसा होने का एक तरीका यह है कि हम दूसरों के साथ अपने सभी व्यवहारों में ईमानदार रहें (तीतुस 1:8)। इसका मतलब है कि हमें निष्पक्ष और ईमानदार होना चाहिए, अपने वादों को निभाना चाहिए, अपने बिलों का समय पर भुगतान करना चाहिए, अपना वचन निभाना चाहिए और हमेशा दूसरों के प्रति दयालुता से बात करनी चाहिए।

इसके अलावा, हमें जरूरतमंदों की पहुनाई करनी चाहिए (तीतुस 1:8)। पौलूस के दिनों में कोई होटल नहीं था, इसलिए यात्रा करने वाले लोगों को आवास के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता था। एक ईश्वरीय अगुवे में आत्म - त्याग और किसी की परवाह करने की मनोवृत्ति होनी चाहिए, और जो उसके पास है उसे दूसरों के साथ बाँटने के लिए तैयार रहना चाहिए।

इन सबका परिणाम यह है कि बाहरी लोगों के बीच हमारी अच्छी प्रतिष्ठा होगी (1 तीमुथियुस 3:7)। समुदाय के अन्य लोग हमारे बारे में सम्मान और इज्जत के साथ सोचते हैं। भले ही वे यीशु के बारे में हमारे विश्वास से सहमत ना हों, वे जानते हैं कि हम अच्छे, ईमानदार और भरोसेमंद लोग हैं।

आपके समुदाय में आपकी किस तरह की प्रतिष्ठा है? जो मसीही नहीं हैं वे आपके बारे में क्या सोचते हैं? वो मसीही लोग जो आपके चर्च में नहीं जाते हैं, वे आपके बारे में कैसे बात करते हैं? क्या लोग जानते हैं कि आपका वचन अच्छा है और आप जो कहते हैं उस पर भरोसा करें? क्या लोग यीशु के बारे में बेहतर सोचते हैं, क्योंकि वे जानते हैं, कि आप उसका प्रतिनिधित्व करते हैं?

5-एक ईश्वरीय अगुवे का ईश्वरीय आध्यात्मिक जीवन होता है

चरित्र लक्षणों की एक और सूची जिसका पौलूस उल्लेख करता है वो एक अगुवा के व्यक्तिगत आध्यात्मिक विकास और परिपक्वता पर केंद्रित है। यह भी सभी अगुओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

एक ईश्वरीय अगुवे को पवित्र होना चाहिए (तीतुस 1:8)। उसे एक पुरुष या महिला होना चाहिए जो परमेश्वर के लिए जीवन जीता है और परमेश्वर को प्रसन्न करता है। वह यह सुनिश्चित करने की पूरी कोशिश करता है कि वह जो सोचता है या करता है उसमें कोई पाप नहीं है। हम में से कोई भी कभी भी पूर्ण नहीं हो सकता है, लेकिन हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे जीवन में कोई भी ऐसा पाप ना हो जिसका अंगीकार ना कीया गया हो । उसको आपने जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति को दूसरों को महसूस कराने में सक्षम होना चाहिए। उसे अपने मसीही जीवन में परिपक्व होने की आवश्यकता है ताकि वह और अधिक पवित्र हो सके।

उसे अपने मसीही ज्ञान में परिपक्व होने की भी आवश्यकता है। पौलुस कहता है कि एक धर्मी अगुवे को दृढ़ सिद्धांत को दृढ़ता से थामे रहना चाहिए (तीतुस 1:9)। उसे वचन की सच्चाई को समझाने और उसका बचाव करने में सक्षम होना चाहिए। जैसे वह अपना दैनिक जीवन जीता है यह उसके जीवन में संचालन दिखाई देना चाहिए ।

क्योंकि हमारे दैनिक जीवन और बाइबल ज्ञान में परिपक्व होने में समय लगता है, पौलुस यह भी कहता है कि एक अगुवे को नया परिवर्तित/चेला नहीं होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:6)। यह शब्द एक नए, कोमल पौधे को संदर्भित करता है, जिसे मजबूत होने के लिए सूर्य और पानी की आवश्यकता होती है। नए विश्वासियों को परमेश्वर के वचन को सीखने और इसे अपने जीवन में लागू करने की आवश्यकता है। आध्यात्मिक रूप से परिपक्व होने और विकसित होने में समय लगता है। पौलूस चेतावनी देता है कि यदि ऐसा होने के लिए पर्याप्त समय नहीं है, तो नया अगुवा आपने गर्अव के करण पाप में गिर सकता है। जब एक मसीही जन कुछ समय के लिए बढ़ रहा है, तो उसे किसी अन्य अगुवा की सहायता करने की स्थिति में रखा जा सकता है ताकि उसे प्रशिक्षित किया जा सके और वह सीख सकें, लेकिन उन्हें तब तक किसी के अधिकार के अधीन होना चाहिए और उनके प्रति जवाबदेह होना चाहिए जब तक कि वे गर्व और आत्म केन्द्रितता से रहित नेतृत्व को संभालने के लिए पर्याप्त परिपक्व नहीं हो जाते हैं।

उसके आध्यात्मिक जीवन से संबंधित अंतिम योग्यता यह है कि एक अगुवे को सिखाने में सक्षम होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:2)। इसका मतलब यह है कि सबसे पहले उसके पास सिखाने योग्य आत्मा होनी चाहिए और बाइबल ज्ञान में बढ़ते हुए आध्यात्मिक रूप से सीखने और बढ़ने के लिए तैयार होना चाहिए। तब उसे दूसरों को परमेश्वर की सच्चाई का संचार करने में सक्षम होना चाहिए। सभी अगुवे शिक्षण में प्रतिभाशाली नहीं हैं, लेकिन सभी को परमेश्वर की सच्चाई को दूसरों के साथ साझा करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। हम सभी को सुसमाचार प्रचार या प्रार्थना का उपहार नहीं दिया गया हैं, लेकिन हमें वैसे भी अपना सर्वश्रेष्ठ करने की आवश्यकता है। अगुओं के शिक्षक होने के बारे में भी यही सच है। यह एकमात्र गुण है जो नेतृत्व कौशल को छूता है। तथ्य यह है कि वह कौशल बाइबल सिखा रहा है, यह दर्शाता है कि परमेश्वर के वचन को हर किसी के द्वारा सिखाया जाना कितना महत्वपूर्ण है।

क्या आप पवित्रता में बढ़ रहे हैं और पाप पर विजय प्राप्त कर रहे हैं? क्या आपके जीवन में कुछ पाप हैं जो आपको हरा रहे हैं? उन क्षेत्रों में जीत हासिल करने के लिए आपको क्या करना चाहिए? क्या आप ईमानदारी से बाइबल का अध्ययन कर रहे और सीख रहे हैं? क्या आप गलती को पहचान सकते हैं और दूसरों को वचन से परमेश्वर की सच्चाई दिखा सकते हैं? क्या आप दूसरों को परमेश्वर की सच्चाई बताने की पूरी कोशिश करते हैं? क्या आप अभी भी अपने विश्वास और ज्ञान में परिपक्व और विकसित हो रहे हैं?

6-एक ईश्वरीय अगुवे का एक ईश्वरीय पारिवारिक जीवन होता है

पौलूस अधिक विस्तार में बताता है जब वह एक अगुवा के किसी भी अन्य गुणों का उल्लेख करने से अधिक पारिवारिक जीवन के बारे में बात करता है। एक ईश्वरीय परिवार दूसरों के लिए एक महत्वपूर्ण उदाहरण कयाम करता है। एक ईश्वरीय परिवार से यह भी पता चलता है कि अगुवा अपनी सेवकाई में लोगों को भी पवित्रता की ओर ले जाने में सक्षम होगा। इसके अलावा, एक अगुवे के लिए उसका परिवार सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिकता है, उनकी सेवकाई से भी कहीं अधिक। इन सब के कारण एक ईश्वरीय पिता और पति होना सबसे महत्वपूर्ण है।

पौलूस कहता है कि एक ईश्वरीय अगुवे को एक ही पत्नी का पति होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:2)। मूल भाषा में इसका शाब्दिक अर्थ है "एक महिला के लिए एक पुरुष" और उस महिला के प्रति, उसकी वफादारी और विश्वास्योगता को संदर्भित करता है, जो उसकी पत्नी है। इसका मतलब यह नहीं है कि एक आदमी तलाक के बाद या अगर उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाती है तो, दोबारा विवाह नहीं कर सकता है । एक अगुवा जिसका तलाक हो चुका है, वह इस क्षेत्र में आता है कि यह उसके आसपास के लोगों के लिए उसकी प्रतिष्ठा को कैसे प्रभावित करता है। "एक पत्नी का पति" का अर्थ है कि एक आदमी को अपनी पत्नी और शादी के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए और वह जो कहता और करता है, उसे दिखाता भी है। उसे अन्य सभी महिलाओं के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा वह एक बहन के साथ करता है। एक अगुवा के लिए एक आदर्श विवाह का होना आवश्यक नहीं है, लेकिन उसे अपनी पत्नी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए वह सब करना चाहिए जो वह कर सकता है और यह देखना चाहिए कि वे एक जोड़े के रूप में और करीब आ जाएँ और मजबूत हो जाएं।

एक धर्मी अगुवा को एक अच्छा पति और एक अच्छा पिता भी होना चाहिए। उसे अपने घर को अच्छी तरह से संभालना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:4-5)। "प्रबंधन" का अर्थ है "पहले खड़े होना और नेतृत्व करना।" इसका अर्थ है कि उसे भविष्य के लिए योजना बनानी चाहिए, ईश्वरीय प्राथमिकताएँ निर्धारित

करनी चाहिए, जो आवश्यक है उसे प्रदान करना चाहिए और पारिवारिक समस्याओं को संभालना चाहिए। उसे यह एक व्यवस्थित ढंग से करना चाहिए। चर्च नेतृत्व के लिए घर सबसे अच्छा प्रशिक्षण मैदान है क्योंकि एक परिवार एक छोटी कलीसिया की तरह है जिसमें समान आवश्यकताएं और समस्याएं हैं। यदि कोई व्यक्ति अपने परिवार का नेतृत्व ईश्वरीय तरीके से नहीं कर सकता है, तो वह कलीसिया के साथ भी इसे बड़े पैमाने पर नहीं कर पाएगा। एक ईश्वरीय पासबान अपनी पत्नी और बच्चों की सबसे महत्वपूर्ण भेड़ के रूप में सेवा करता है, और फिर वह उनके बाद कलीसिया में बाकी लोगों की सेवा करता है।

इसका अर्थ यह है कि उसके बच्चे होंगे जो उसकी आज्ञा का पालन करेंगे (तीतुस 1:6; 1 तीमुथियुस 3:4)। उन्हें "उचित सम्मान के साथ उसका पालन करना" होता है (1 तीमुथियुस 3:4)। उन्हें अवश्य ही सही "व्यवहार करना चाहिए, और उन पर जंगली और आज्ञा ना मानने का दोष लगाये जाने की नौबत नहीं आनी चाहिए " (तीतुस 1:6)। इसका मतलब है कि वे परमेश्वर और उनके माता-पिता का सम्मान करते हैं और उनका आज्ञा -पालन करते हैं। ऐसे समय होते हैं जब छोटे बच्चे, और यहां तक कि किशोर, विद्रोह कर सकते हैं और आज्ञा मानने से इनकार कर सकते हैं, लेकिन एक ईश्वरीय पिता उन्हें प्रेम और नम्रता से अनुशासित करेगा ताकि वे आज्ञा का पालन करना सीखें। यदि कोई व्यक्ति अपने बच्चों के भटक जाने पर उनके साथ सही व्यवहार नहीं कर सकता है, तो वह कलीसिया में उन लोगों के साथ कैसे सही व्यवहार कर सकता है जो विद्रोह करते हैं और दूसरों के लिए समस्याएँ पैदा करते हैं? जरूरी नहीं है उसके बच्चे परिपूर्ण हो , लेकिन जैसे-जैसे वे वयस्क होते हैं उन्हें अपने माता-पिता के लिए सम्मान और सम्मान प्रदर्शित करना चाहिए। इससे पता चलता है कि उनका पालन-पोषण प्यार और अनुशासन के साथ कीया गया है।

क्या आपकी पत्नी कहेगी कि आप एक वफादार, विश्वासयोग्य पति हैं जो अपनी सेवकाई में उसकी ज़रूरतों को उसकी अपनी जरूरतों से और दूसरों की ज़रूरतों से पहले रखता है? क्या वह कहेगी कि आप हमेशा उसके साथ प्यार और सम्मान से पेश आते हैं? क्या वह कहेगी कि आप अपने परिवार का नेतृत्व ईश्वरीय तरीके से करते हैं? या वह कहेगी कि आप उससे और अपने बच्चों से बढकर दूसरों के साथ बेहतर व्यवहार करते हैं? क्या आपके बच्चे जानते हैं कि आप उनसे प्यार करते हैं? क्या वे आपका सम्मान करते हैं और आप पर भरोसा करते हैं, भले ही वे आपसे सहमत ना हों?

7-एक ईश्वरीय अगुवा में ईश्वरीय व्यक्तिगत आदतें होती हैं

योग्यताओं का अंतिम समूह जिसे हम देखेंगे वह एक ईश्वरीय अगुवे की व्यक्तिगत आदतों से संबंधित है। ये व्यक्तिगत विचारों और कार्यों से संबंधित हैं, जिन्हें अन्य लोग नहीं देख सकते हैं या नहीं जानते होंगे । हम इन्हें दूसरों से छिपा कर रख सकते हैं और कुछ ऐसा होने का दिखावा कर सकते हैं जो हम नहीं हैं। वह पाखंड है और एक ऐसा पाप है जिससे परमेश्वर घृणा करता है! वास्तविक चरित्र वह है जो हम तब भी होते हैं जब कोई हमें नहीं देख रहा होता है। ये लक्षण ऐसी चीजें हैं जिन्हें दूसरे लोग नहीं देख सकते हैं या नहीं जानते होते हैं, लेकिन वे हमें वह बनाते हैं जो हम वास्तव में होते हैं।

पहली दो विशेषताएं धन और भौतिक संपत्ति के प्रति हमारे दृष्टिकोण से संबंधित हैं। हमें पैसे से प्यार नहीं करना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:3)। जीवन में धन और संपत्ति हमारा मुख्य लक्ष्य नहीं होना चाहिए। हमें उन पर गर्व नहीं करना चाहिए या अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए उन पर भरोसा नहीं करना चाहिए। इसका हमारे पास कितना पैसा या संपत्ति है, इससे कोई लेना-देना नहीं है, इसका उनके प्रति

हमारे रवैये से लेना-देना जरूर है। हम इसके लिए दोषी हो सकते हैं, भले ही हमारे पास बहुत कम भौतिक चीजें हों। पैसे या चीजों के लिए एक पूजनीय -मूर्ति बन जाना बहुत आसान है, जिसे हम परमेश्वर के भी पहले रख देते हैं। यह पाप है (1 यूहन्ना 5:21)।

पौलुस भी यह कहता है कि हमें बेईमानी से लाभ नहीं उठाना है (तीतुस 1:7)। इसका मतलब है कि हमें अधिक धन या संपत्ति हासिल करने के लिए कोई बेईमानी नहीं करनी चाहिए। हमें दूसरों के साथ अपने सभी व्यवहारों में पूरी तरह से निष्पक्ष और ईमानदार होना चाहिए।

पैसे और संपत्ति से प्यार करने के बजाय, पौलूस कहता हैं कि हमें भलाई से प्यार करना चाहिए (तीतुस 1:8)। हमें अच्छे लोगों, अच्छे कारणों और अच्छे विचारों का समर्थन करना चाहिए। हमें वास्तव में जीवन में जो अच्छा है उससे प्यार करना चाहिए और अन्य सभी चीजों से हट जाना चाहिए।

एक अंतिम विशेषता जिसे पौलुस शामिल करता है वह यह है कि एक ईश्वरीय अगुवे को आपने आप को मतवालेपन का शिकार नहीं होने देना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:3; तीतुस 1:7)। एक धर्मी अगुवा को आत्म-संयम रखना चाहिए ताकि वह शराब के नशे में ना पड़े । इसका मतलब है कि हमें हर आदत आत्म-नियंत्रण रखने में सक्षम होना चाहिए जिसे अधिक मात्रा में लिया या भोगा जा सकता है, जैसे बहुत अधिक खाना या आराम करना और बहुत अधिक सोना। यह लालच और वासना जैसी अन्य चीजों पर भी आपना आत्म-नियंत्रण रखने को संदर्भित करता है।

अपने दिल में देखें और परमेश्वर से कहें कि वह आपको दिखाए (भजन 139:23-24) अगर आपके दिल में लालच है। क्या आपको हद से जयादा पैसे और संपत्ति से प्यार करना चाहिए? क्या आपके जीवन में ऐसा कुछ है जिसे परमेश्वर कहेगा कि यह एक पूजनीय -मूर्ति है? यदि हां, तो इसे स्वीकार करें और इसे हटा दें। आपका आत्म-नियंत्रण कैसा है? क्या आप वे काम करते हैं जो यीशु नहीं करता ? यदि हां, तो उन्हें स्वीकार करें और उन्हें तुरंत हटा दें।

विशेषताओं और लक्षणों की यह सूची कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे हम जल्दी या आसानी से प्राप्त कर सकें। इसके करीब आने में भी पूरी जिंदगी लग जाती है। फिर भी हममें से कोई भी इन सब को प्राप्त नहीं कर पायेगा। वे पहुँचने के लिए एक लक्ष्य हैं क्योंकि वे सभी लक्षण हैं जिन में हमें यीशु की तरह बनने की आवश्यकता है। जबकि उन्हें विशेष रूप से अगुवों के लिए आज्ञा दी गई है, वे सभी मसीहियों के अनुसरण के लिए एक अच्छा नमूना हैं। मुझे आशा है कि इन्हें देखकर आप अपने सोचने और कार्य करने के तरीके में यीशु के समान बनने के लिए प्रेरित हुए होंगे।

1 तीमुथियुस 3 और तीतुस 1 में नेतृत्व के गुण। एक ईश्वरीय अगुवे को/में अवश्य :

1. एक ईश्वरीय बनने की चाहत होनी चाहिए
2. ईश्वरीय आंतरिक गुण होने चाहिए
3. ईश्वरीय पारस्परिक संबंध रखने चाहिए
4. अच्छी प्रतिष्ठा रखनी चाहिए
5. एक ईश्वरीय आध्यात्मिक जीवन प्राप्त कीया होना चाहिए
6. एक ईश्वरीय परिवार होना चाहिए

7. ईश्वरीय व्यक्तिगत आदतें होनी चाहिए

क्या आपके पास ये हैं? अब आपके जीवन में क्या -क्या से स्पष्ट हैं? आप में किस -किस चीज की कमी है? सुधार शुरू करने के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता है? इन चीजों के लिए प्रार्थना करें और परमेश्वर से मदद मांगें कि आप इनमें से प्रत्येक को अपने जीवन में शामिल कर सकें ।

निष्कर्ष

एक अगुवा बनना आसान नहीं है, लेकिन यह एक बहुत ही खास, सम्मान- जनक, नेक काम है (1 तीमुथियुस 3:1)। अगुवाओं को उच्च मानकों पर रखा जाता है, इसलिए उन सभी का सम्मान करें जो मसीही नेतृत्व के स्थानो पर हैं। अगुवों को अपने पद के कारण अधिक प्रलोभनों का सामना करना पड़ता है और क्योंकि शैतान उनका और भी अधिक विरोध करता है, इसलिए कलीसिया के सभी अगुवों के लिए प्रार्थना करें जिन्हें आप जानते हैं। अगुवे भारी बोझ उठाते हैं, इसलिए जितना हो सके उनका समर्थन करें। ईश्वरीय नेतृत्व आसान नहीं है, लेकिन यह एक महान सम्मान और जिम्मेदारी है, और इस तरह से यीशु की सेवा में अपना जीवन व्यतीत करने का सौभाग्य है। इस सम्मान के लिए उसका धन्यवाद करें और अपने आप को सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय अगुवा बनने के लिए प्रतिबद्ध करें।

शुरू करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि आप किताब पढ़ते समय 2 या 3 गुणों को चुनें जिनके लिए परमेश्वर ने आपको प्रेरित कीया है। ये ऐसे क्षेत्र हैं जहां वह चाहता है कि आप सुधार करने के लिए कार्य करें। उन्हें लिख लें, और हर एक के पीछे कुछ चीजें लिखें जो आपको इन क्षेत्रों में सुधार करने के लिए शुरू करने (या बंद करने) की आवश्यकता है। हर एक के बारे में प्रार्थना करें और परमेश्वर को इसमें आपकी मदद करने के लिए कहें। सूची को अपनी बाइबल के साथ रखें ताकि आपको हर दिन इन बातों के बारे में प्रार्थना करने के लिए याद दिलाया जा सके। तब आप एक सुधार देखना शुरू कर देंगे जो आपको यीशु के समान बना देगा।

मैं आपको अपने स्वयं के बाइबल पढ़ने और उपदेश की तैयारी के भाग के रूप में विभिन्न बाइबल लोगों का अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। उन सबकों की तलाश करें जो आप उनसे सीख सकते हैं। वे ईश्वरीय नेतृत्व में सहायता का एक बड़ा स्रोत हैं। मैं भी आप से भी कुछ सुनना पसंद करता हूं। मैं इस पुस्तक के बारे में आपकी टिप्पणियों के साथ-साथ उन सबकों को साझा करना चाहता हूं जिन्हें परमेश्वर ने आप को ईश्वरीय नेतृत्व के बारे मे सिखाया है। आप मुझे jerry@ChristianTrainingOrganization.org पर लिख सकते हैं। जब तुम स्वर्ग में जाओगे तो मुझे भी ढूंडना, तब हम एक साथ संगति का अच्छा समय बिता सकते हैं! धन्यवाद और परमेश्वर आशीष देवे!

SP-16.01.2022